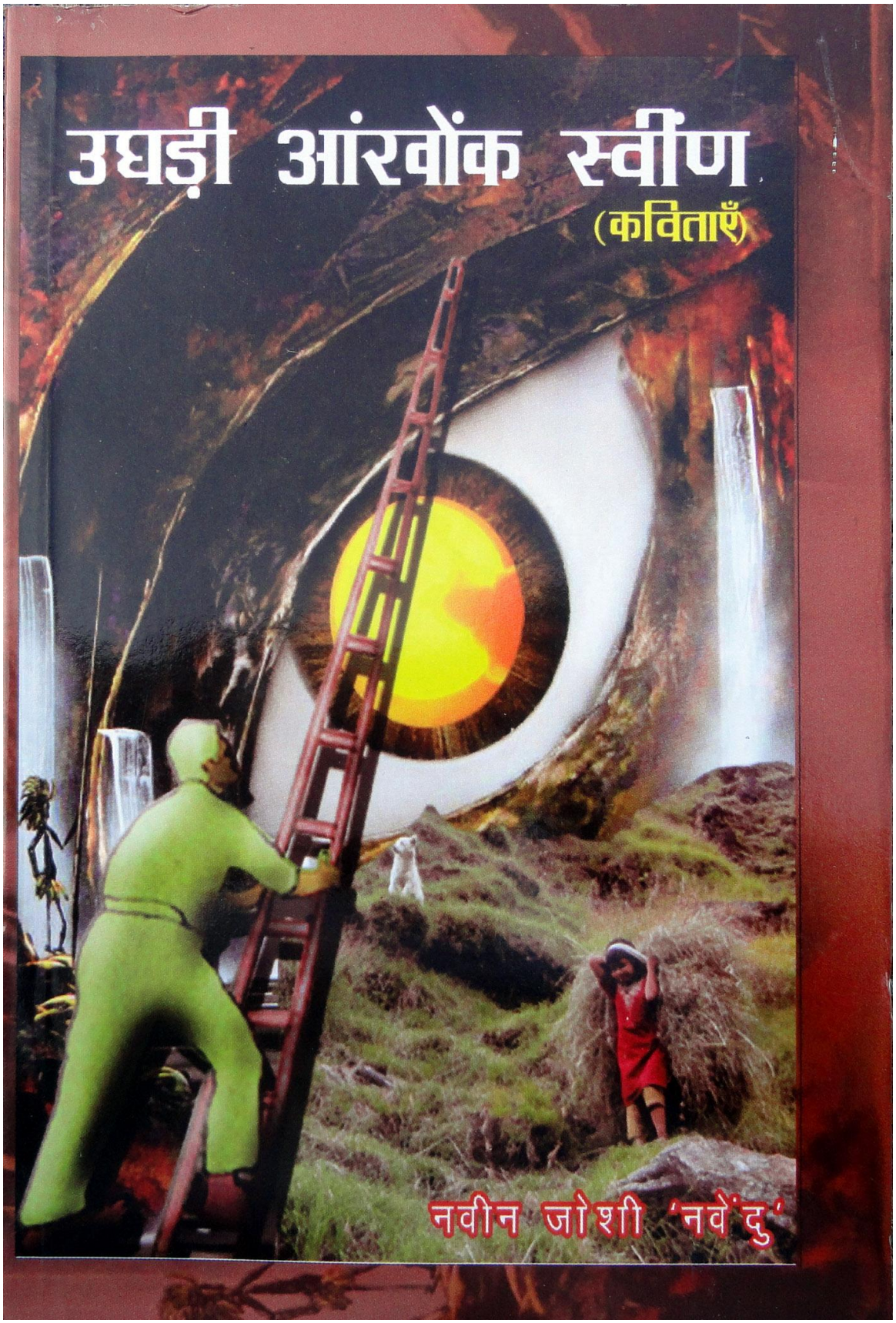

उघड़ी आंखोंक स्वीण
(कविताएँ)
नवीन जोशी 'नवेंदु'

स्वत्वाधिकार :
नवीन जोशी 'नवेंदु'

© नवीन जोशी 'नवेंदु'
पहला संस्करण 2013

प्रकाशक :
जगदम्बा कम्प्यूटर्स एण्ड ग्राफिक्स
5/71, नियर एन.सी.सी. क्वाटर्स, हल्द्वानी
दूरभाष-9997186561

मूल्य : 250 रुपए मात्र

Ughadi Aankhok Sween
By:
Navin Joshi 'Navendu'
Contact: 9412037779
Email: saharanavinjoshi@gmail.com

समर्पण



इज स्व. श्रीमती हेमलता जोशी, इष्ट-मितुरों, स्वार-बिरादरों, कब्बै-कसिकै संपर्क में आई और कुमाउनी बोलि-भाष दगै प्यार करंणी सब्बै लोगों-पाठकों के सादर समर्पित

-नवीन जोशी 'नवेंदु'

आमुख

एक जमा्न में चंद राज वंशौकि राजभा्ष और भारतीय संविधाानैकि अठूं अनुसूचि में शामिल हुंणैकि तैं आपंण मजबूत दा्व ठोकंण हुं तैयार कुमाउनी भा्ष में म्यार पैल काव्य संकलन 'उघड़ी आंखोंक स्वीण' आपूं हातों में छू। इकें आपूं हातों में सौपंण में म्यार हि्य में कतू खुशि, कस कुलबुलाट हुंणौ, मैं बतै न सकनयूं। पर, यो साफ कर दिंण चानूं, कि मिं क्वे ठुल कवि, लेखार न्हैत्यूं, और मैं आपंणि कविताान कैं पुर तौर पारि आपंण लै न समझनूं। किलैकि मैं माननूं कि असल में हम्र लेख, कवित्त इकलै हम्र न हुन, बल्कि हम्र पुर समाज, परिवेश, प्रदेश, देशा्क, हम्र इष्ट-मितुरों, स्वा्र-बिरादरों और कब्बै-कसिकै संपर्क में आई सब्बै लोगोंक लै हुनीं। किलैकि हमिं जि लै लेखनूं, उ हम्र भितेर बै उं। म्यार कवित्त लै यसीकै पैद हई छन। समाज में हुंणी कएक घटना मिकें भितेर बै लेखंण हुं घजबजूनीं और मिं आपूंकें रोकि न सकन। म्यार भितर जि लै छू, भल या नक, समाजै कै देई, समाजै कै भुगत्याई छू। मैंल सबै तिर य समाजै बै समेरि राखौ, य वास्ते इकें समाज कें लौटूंण म्येरि जिम्मेदारी छू। मैं के न रचि सकनूं, केवल ब्रह्मा ज्यू रचि सकनी, जनूं दगाड़ सरस्वती माता रें। मैं पारि उनरि कृपा छूं, मैं उनूंकैं यो संकलन शुरू करंण है, और सबूंहै पैली दंडवत पैला्ग करनूं।

'उघड़ी आंखोंक स्वीण' म्यार स्वीणै छन, जो मैंल उघड़ी आंखोलै देखि राखीं। यानी कि हूंणौ और कि हुंण चैं, म्येरि कोशिष रूं कि एक पत्रकारैकि भें, क्वे समस्या उठाई जाओ त वीक समाधान लै सुझाई जाओ। बहरहाल, यो संग्रह में जतू लै पाठ छन, उं मैंल उ बखत लेखीं जब मैं न्यानतिन्योई बटी जवानिक दौर में ज्ांण ल्ाग रौछिंयूं। सो मन में प्रकृति और सुंदरताक बारि में जो चित्र छी, या दगाड़ै देश-प्रदेशैकि व्यवस्थाओंक खिलाफ जो गुस्स छी, उं आफी-आफी भ्यार निकली। और यो कविता रूप में सैद यो वास्ते निकली कि यं म्यार बाबू कवि, लेखक, संपादक श्री दामोदर जोशी 'देवांशु' ज्यूक परसाद छन, जो म्यार पैद हुंण है बै लै पैली इंटर में पढ़ण बखत बटी कविता लेखंणईं। उनर पैल कुमाउनी कविता संग्रह 'कुदरत' १९६९ में प्रकाशित है गोछी। उनर परसाद और हात म्यार ख्वार पारि हमेशा रओ, भगवान थें यै प्रार्थना छू। उनूंलै आज म्यार 'आ्ब-आ्ब' कून-कूनैं लै यो किताब खुदै छपवै हाली। उनूं दगा्ड़ आज लै आपंण आशीवाद् छत्त म्यार ख्वा्र पारि धरी दुसर विश्व युद्धा्क सेनानी ९९ बरसा्क बड़बाज्यू श्री देवी दत्त जोशी, आ्म श्रीमती पार्वती जोशी और इज स्वर्गीय हेमलता जोशी, जनूंल यो ज्यूनि और हात में कलम दिबेर मकें यो लैक बड़ा, उनूं वास्ते म्यार पास कूंणा्क तें आंखर न्हैतन। आपंण भै-बैंणी विनय प्रभा, आभा, नितीश, पत्नी बीना, पुत्र वैभव और पुत्री काव्या क प्रति लै मैं आभारी छूं, जनर क्वे न क्वे रूप में य संकलन कें छपूंण में भौत योगदान छू। मैंल लै कक्षा-आठ बटी तुकबंदी कविता लेखंण शुरू करि हैछी और हाइस्कूल-इंटर (१९८५) बटी म्येरि कविता अल्माड़ में स्वाधीन प्रजा और हिलांस आदि पत्र-पत्रिकान में छपंण लागि ग्येछी। अघिल आंखर पत्रिकाक (लखनऊ, सन् १९९४) संपादक आदरणीय बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु' ज्यू और दुदबोलि पत्रिकाक संपादक आदरणीय मथुरादत्त मठपाल ज्यूल (रामनगर, सन् २०००) म्येरि कविताओंकि जो बड़नत करी, वील म्यार उत्साह कें अगास पुजै दे, म्यार कवित्तनैकि गाड़ कें गंग बणूंण में उनर भौतै ठुल योगदान छू, जै है मैं कब्बै उरिण न है सकनीं। मठपाल ज्यूल म्येरि कविताान हूं 'एक नोट' ल्येखि बेर लै मिं पा्रि इतू लाड़ खन्यै जस हालौ, कि में धन्यवाद कै बेर उना्र उपकार कें कम न करि सकनू। में यो संग्रहैकि भूमिका लेखणा्क तें एम. बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वाणि में हिन्दीक एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रभा पंत ज्यूक लै दिल बटी आभारी छूं, जनूंल इतू गंभीरताल म्यार य काम पुर्यै दे।

एक और बात मैं जरूर बतूंण चानूं कि मैंल यो कविता करीब १५ साल पैली, क्वे हल्द्वाणि-नैन्ताल में पढ़ाइ और उत्तराखंड आंदोलना्क दौर में तो क्वे दिल्ली और नोएडा में इंजीनियरिंगैकि नौकरीक दौरान

करीब १६-१७ बटी २५ सालैकि उम्र में लेखी हुई छ्न। लेखंण म्यार खून में छी, सो सन् २००० में आपंण राज्य बनते ई इंजीनियरिंगिकि 'कमाऊ' नौकरी कें छोड़ि बेर घर 'कुमाऊं' हुं 'भ्वाजि' आयूं कि दूसरोंक किलै, आपंणि मिहनतैल आपंणै घर सजूंल। यो बात मैं यो कारणैल बतूणयूं कि एक त पाठकों कें म्यर कविता रचणाक बखतक म्यर वैचारिक स्तरक पत्त चलि जाओ, दूसर यो कि सैद मैं आपंण दौराक सबूं है युवा कुमाउनीं कविन में शामिल छूं । इमें मैं आपंणि वचे बड़नत न माननूं, पर यो बतै बेर नई पीढ़िक युवा कविन थें कूंण चानूं कि उं लै हिंदी या अन्य भाषोंक दगाड़ आपंणि दुदबोलि कुमाउनी में लै लेखना भल हुंन। आज, मैं पत्रकारिता में छूं, और य कूंण में लै मकें के शरम न्हें कि आज मैं कुमाउनीं कि, हिंदी में लै कविता न लेखि सकनयूं। सैद यो कारणैल कि आज म्यार भितर यो कविता लेखणाक जमानौक जस उमाव न्है। आज मैं आपंण भितराक विचारों कें आपंण लेखूं में प्रकट करि दिनूं, फिर कवित्त लेखंणाक तें जस विचारोंक जोश चें, उ न बचन।

यो संग्रह कें छापंण में म्येरि कोशिश सिरफ इतू छू कि हमैरि दुदबोलि कुमाउनिकि जब लै कैं बात हओ, वचे उकें कमजोर न कै सकौ। यो संग्रह कुमाउनीं भाष-साहित्याक भनार में मणीं लै बढ़ोत्तरी करि सकल, इमें मैं आपंण सौभाग्य समझुंल। म्यार यो संग्रहैकि वचे कविता में कत्ती कविताक अंश देखीनीं, कि नैं, यो साहित्याक पंडितै तय कर सकनीं, पर म्येरि कोशिश सिरफ इतू छू कि मैं जो धरती में पैद है रयूं, वीक लिजी आपंणि 'औकात', अकलाक मुताबिक ज्यादे है ज्यादे जि दि सकूं, दियूं। आपंणि धरती माताक दूध, माटक कर्ज चूकूंण म्यर धरम भै। अघिल, हमैरि कुमाउनीं भाष कें, इकें बुलांणी, प्यार करंणी युवाओंकि, नई पीढ़िकि और युवा कवि-लेखकोंकि भौत जरवत छू। किलैकि आज कुमाउनीं लेखणंई कवि, लेखकोंकि परंपरा, उनार काम कें अघिल बणूंणी हात चैनीं। यो परंपरा उरातार आगे बड़ते रूण चैं, योई माता शारदे, दुदबोलि कुमाउनी थें प्रार्थना छू।

ऐल इतुकै, प्रतिक्रियाओंक इंतजार रौल ।

नवीन जोशी 'नवेंदु'
ब्यूरो प्रभारी, राष्ट्रीय सहारा, नैनीताल।

संपर्कः 9412037779, 9675155117,

होलि, 28 मार्च, 2013 ईमेलः saharanavinjoshi@gmail.com

भूमिका

कत्ती लै, क्वे लै काम-काज किलै नि हो, कविता सुणन और सुणूँन बरबखत सबूँकैं भलै लागूँ, पै पत्त नैं कविन कैं देखि लोग ख्वार किलै ख्वानीं, उनुकैं देखि लुकण किलै फै जानी? यौ त भै सोचणीं बात, समझणी बात यौ छ, जब हम 'कविता' यौ आँखर कैं पड़नूँ, सुणनूँ, लेखनूँ या कूँनूँ, त यस ल्यूँ यौ आँखर स्त्रीलिंग छ, और जब 'काव्य' कूँनूँ, त उ पुल्लिंग जस चिताईण फै जाँ। कविताक अ)नारीश्वर ज्यास कल्याणकारी गुणन्यूक वीलै जब हम उकैं मलिये मली चानूँ, त पद्य में हमूँकैं उ सब गुण देखीनी जो एक स्यैंणि में और एक बैग में हुनीं, येकै वील कविता कभै बड़बाज्यूकि च्यारि मैक्यूँण,देखी, कभै आमैकि च्यारि हुल्यारि लगूँण जसि चितायीं कभै बाबूकि च्यारि नड़क्यै, कभैं इज्यैकि च्यारि डाड़ ह्यलैं, त कभै ह्यून्यूक घाम जसि निमैलि लागैं। मल्लब यौ छ, एक न्यानि-न्यानि कविता मैं लै एतुक तराण हूँ कि उ, ऊ सब कर सकैं, जकैं ठुल-ठुल भाषण और किताब लै नि कर सकन। कविता मैंस्यैकि यसि दगड़ू हैं, जो हर हाल में आपण दगड़ूवैकि मदत करैं।

कुमाउँनी साहित्य में कविता कूँण-सुणन तब बै है रौ, जब लेखण हूँ नै त कागज छी, नै कलम ओर नै स्याइ। हम्यार खुड़ आम-बड़बाज्यूक आम-बुबु लै जब औरी खुशि हुँछी, तब गीत गाँछी और जब उनुकैं अत्ती उदेख ल्याग छी, तब लै उँ गीतै गाँछी, उन्यौर आपण गौ-घर्यक ईष्टौक नाम लिण में लै अणबणाइए क्वे-नै-क्वे गीत बण जाँछी। गीत और कविता में के ज्यादे फरक न्हाती, द्वीनै कैं तुम साँवकै भै-बैंणी समझो, किलैकि द्वीन्यूक आङ में बगै त एक्कै खूनेकि गंग, उनुकैं एक्कै बोट्यूक द्वी फल या फूल कूँछ भलै, या फाङ जे लै कूँछ, जड़ त एकै हुनेर भै द्वीन्यैकी, अगर कविता और गीत कैं एक्कै गाड़्यूक द्वी किन्यार समझछ, पै लै द्वीन्यूकै बीच में बगै एकै भावनाकि गंग।

जब बै 'कुमाउंनी और गढ़वालि भाषा' कैं संविधान्यैकि अठूँ सूची में ज्योड़न्यैकि बात जोर-शोरैल उठण ल्यागी, तब बै वाल-प्याल कुँणन में लुकी-भैटी कुमाउँनी साहित्य लेखणीं आपणि-आपणि नई-पुर्याणि पुन्तुरिनल कैं ख्वोजि-ख्वाजि, टट्क्ये-टुट्कीबेर छपूण फै ग्यीं। अब जै दुणी कैं पत्त ल्यागनौ, क्यास-क्यास स्यैणियाँ और बैग छन हम्यार उत्तराखण्ड में एक-है-एक दिमागदार और लेखण-पढ़नी। कभैं-कभैं सोच ज्यास पड़नी, पत्त नै आइ ज्यूणै यौं सब काँ दुर्पना लुकबेर भैरौछी, किलै नि करछी आपणि दुदब्वोलिक मान-सम्मान। पंजाबि, बंगालि, गुजर्याति और लै कतुकै भ्याष बुलाँणनियाक च्यारि और किलै नि लेखछी उनरि च्यारि। भल हौ उन्यौर, जनुल सबुहै पैली यो जागर लगैक्र आपणि दुदब्वोलि कैं परेम करण सिखा, हुस्काहुस्की इ सई कम-से-कम हम साहित्य लेखण्यैकि दौड़ में त ल्यागी गयाँक्र देरै में सई अकल त ऐ हम उत्तराखण्डियाँ कैं आपणि दुदब्वोलिकि इज्जत करण्यैकि। यौ बात अलग छ, आज लै उकें बुल्याँण में शरमै ल्यागै हमुकैं, तबै त जब क्वे पहाड़ या गौ-घरन बै भ्यार ऊँ, उ हिन्दी बुलैबेर आपण रौब जमूँण देख्यीं। येक कारण यौ छ कि गौ-घर बै आई अनपढ़ या कम पढ़ी-लेखी मैंस सोचूँ, अगर मैंल ये दगड़ि कुमाउँनी में बात करि, त यौ मैकैं आपूँ है कम समझ्यौल और शहर्यौक पढ़ी-लेखी मैंस सोचूँ, जब मैं अंग्रेजी में बात करूँल तब म्येरि ज्यादे इज्जत ह्वलि। पै, एक बात त पक्की छ, द्वीन्यैकैं यौ बात याद नि रूँनि कि ब्वोलि या भ्याष्क काम त बस एक मैंस्याक मन्यैकि बात दुहर मैंस जाँणै पुजूँण्यौक छ।

जसिक रुड़िन में जब आम्यौक बोट फुलूँ उ बखत वीक फूल कैं देखि यौस चिताईं, पत्त नै आलिबेर कतुक जै आम ल्यागणीं छन, पर आखिर में उ बोट्म उतुकै आम बची देखीनीं जनुनमें ह्याव, बर्याव, और डाव्यैकि मार कैं सहन कर्यैकि तागत हैं। उसिकै, आज कुमाउँनी में गद्य और पद्य लेखणिय्याँण क्वे कमि न्हैती, उनुन में है कतुक कब जाँणै रूँणीं यौ त बखतै बताल। अस्तु....

कुमाउँनिक नई कविन में जो एक नाम आइ जुड़नी छ, उ छ-नवीन जोशी 'नवेंदु'। श्रीमती हेमलता और श्री दामोदर जोशि ज्यूनाक सुपुत्र, नवीन ज्यूक जनम त छब्बीस नवम्बर उन्नीस सौ बहत्तर (२६.११.१९७२) में हौ, पर उनुमें 'नवेंदु' की जुन्याली जसि देखीण लागी तब बै-जब यौ कक्षा आठ-नौ में पढ़छी। नान्छना जब कभै यौ कविता लेख छी, त महापुरुषन पर या देशभक्ति पर लेखछी। लिपि त तब लै देवनागरी इ छी, भाष हिन्दी छी, मल्लब यौ कि ज्यादेतर कवि और लेखकनाक चारी इनुल लै कविता लेखणैकि शुरूआत हिन्दी बै इ करी, पछा कुमाउँनी में लेखण लागीं। कुमाउँनिक गद्य साहित्यैक किताबनौक सम्पादन करण में लै यौ आपण बाबूकि मदधा करनीं, आखिर बाबू धौं मिली गुणै त छन, जो आज नवेंदु नव सृजन करनयीं। कुमाउँनी गद्य संग्रह 'गद्यांजलिक' अलावा पत्र-पत्रिकान में लै इनरि रचना प्रकाशित हुनै रुनीं । जब यौ 'पॉलिटैक्नीक नैनीताल' बै मैकैनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करनौछी, तब लै इनुल आपण कॉलेजैकि स्मारिका में छात्र सम्पादकाक रूप में लै काम करौ। ऐल यौं समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा' नैनीताल में पत्रकाराक रूप में सेवा करणयीं।

'उघड़ी आखोंक स्वीण' यौ कविताकैकि पुन्तुरि नै पुर गढ़व छ, जमैं भाव और विचारनाक मोत्यूंल गछीण कतुकै किस्मैकि रंग-बिरंग म्वाव भरी छन। जब मैंस ज्वान हूँ उबखत वीक आङ में अत्ती तराण हूँ और मनस्वाप लै तब उ भौत कुछ करण चाँ और जब नि कर पान तब, क्वे त हुलार हूँ बाट लागूँ और क्वे उकाव हूँ कविता लेखण लै उकाव हूँ जूँणी एक बाट छ। स्वीण त सबै देखनीं क्वे सिती में त क्वे ब्यूँज में। जो बरबखत बंद आँखन स्वीण देखनीं, उँ जाँ छी उत्ती रै जूँनी पै जो स्वीणन कैं उघड़ी आँखूल देखनीं, उनुकैं आपण स्वीण पुर करणौक क्वे-न-क्वे बाट मिली जाँ।

जब कभैं कैकैं उ करणौक सुबत या बाट नि मिलन, जो उ करण चाँ तब उ आपण या परयाक स्वीणाकैं पुर करणाक लिजी, उनरि पीड़ कैं कम करणाक लिजि क्वे नइये बाट खोजि लिनी। आपण या दुहरैकि मनैकि पीड़, रीस, शिकैत, भगती और पिरेम जास भाव तथा समाजैकि दुर्दासाक लिजी जिम्मवार लोगूँकि करतूतन कैं उघाड़ि दुणियाक सामणि ल्यूँणाक लिजी, क्वे कविता-गीत लेखनी क्वे चित्र बणूँणी, क्वे पेन्टिंग करण जस क्वे लै दुहर बाट कैं अपणयै लिनीं। साँचि त यौ छ नई बाट कैं बणूँणी उइ लोग छी और आज लै छन, जो दुणी में के करण चाँछी या करण चानीं जनुल कभैं उघड़ी आँखन क्वे स्वीण देखौ, या देखनयीं। कविता लेखण लै समाज कै मनकस बणूणौक या समाज में बदलाव ल्यूँणौक एक बाट छ।

यौ कविता संग्रह में समसामयिक विषयन पर कटाक्षौ नै प्रतीक और बिम्ब लै छन। कत्ती-कत्ती दर्शन लै देखीं जाँ। उनरि **'लौ', 'पत्त नै', 'रींड़', 'असल दगड़ू'** कविता यैक भल उदाहरण छन। जाँ एक तरप नवेंदु ज्यूल **'दुंङ', 'तिनाड़'** जास प्राकृतिक उपादानूँ कैं कविताक विषय बणै राखौ, वायीं दुहरि उज्याणि **'हू आर यू', 'कुन्ब', 'किलै', 'तरक्की', 'हरै गो पिरमू', 'भ्यार द्यो लाग रौ हो', 'मैंस अर जनावर', 'अगर', 'परदेस जै बेर'** जसि कवितान में मैंसनाक मनोविज्ञान लै उघाड राखौ। एतुकै नै, एक पढ़ी-लेखी दिमागदार मैंसाक चारि, उ लै समानताक लिजी महिला सशक्तिकरण के जरूरी माननीं। तबै त उँ **'तु पलटिये जरूर'** कैबेर, च्येलि-स्यैंणियोंक मन बै गुण्ड, लोफरनौक डर निकाउनैकि बात कूँनीं और उनुकैं अघिल बढ़नौक बाट बतैबेर उनुधौं आपण तराण पछ्याणन हूँ कूँनीं-**"तु जे लै पैरि/लागली बाट/घर बै/घर बै इ/लागि जाल गुण्ड/त्यार पछ्लि....बस त्यार पलटण तलक/और मैकैं फर विश्वास छु/तब त्वे में देख्येलि/उनुकैं झाँसिकि राणि/काइ माता।"**

यमैं क्वे शक न्हैती कि प्रकृति होओ या हमरि जिन्दगि, रिश्त-नात होओ या खाण-पिण, संतुलन सब जाग जरूरी हूँ। जब-जब घर भितेर या भ्यार संतुलन बिगड़ूँ तब-तब हमौर पर्यावरण खराब हूँ, घर-परवार और समाजैकि व्यवस्था लै गजबजी जैं। **'जड़ उप्पाड़'** में उ कूँनीं-**"जब बिगड़ि जाँ/मणीं**

म्यस/पाँणि लै/डाव बणिं/टोणि द्यूं/ड्वन कै/ख्वप्रेरि/लगै द्यूँ/छ्वल घाम/घाम सुकै द्यू/पात पतेल कि/हुत्तै बोट कै।"

यौ साचि छ कि संसार कैं देख्णौक सबन्नौक आपण-आपण ढंङ हूँ, पर ज्यूँन रूँण्क लिजी उमीदैकि सबुन कैं जरूरत हैं। अगर मैंस कैं **'उमींद'** नि होओ, त उ आपणि भितेर लिई साँस कैं भ्यार निकाउँण में लै डरन। उ भलीभाँ ज्णूँ कि अन्यार्क बाद रोज उज्याव हूँ और जुन्यालि रात्क बाद अमूँस जरूर ऐं, तबै त उकैं आस ल्ग रै अमूँस्क बाद ज्यूँनिकि-**'रडिल पिछौड़ में/आँचवा मुणि छ्रेपि/रडिल करि दयेलि/फिरि आङ ल्गि/अङवाल भरि/उज्यायि करि दयेलि-ज्यूँनि।"**

जब लै कैकै मनम पीड़ हैं, त वीक आँखन बै आँसु च्वी जानीं और जब कभैं उ जसिक-तसिक आपण आँसुन कैं पि लै ल्यूँ, तब लै उ मनैमन डाड़ हालनै रुं। जसिक द्यौक पाणि धारती कैं नवै-ध्वेबेर वीक धूल-म्ट सब साप करि द्यूँ और उ हरिपट्ट देखींण फैजै, अगास में ल्गी बादव जब बरसि जानी त उ लै हल्क हैबेर इत्थै-उत्थै उड़ि ज्नीं। उसिकै जब मन्क अगास में उदेख्क बादव ल्ग जानीं, तब आँख बै आँसु बरसिबेर वीक मन कै कल्ल पाड़नीं। पर, नवेंदु ज्युँक बिचार एहै अलग छ्न, तबै त उँ **'डाड़ मारणैल'** कविता में कूँनी-

'कि हुं/डाड मारणैल/जि छु हुणीं/उ त ह्वलै/के कम जै कि ह्वल, और लै सकर है सकूँ/फिर डाड़ किलै/फिर आँस क्स/फिर लै/जि ऊँणई आँस त/समाइबेर धारि लिहओ/कबखतै-कत्ती/हँसि आलि अत्ती/काम आल।"

'आँखर' उनरि एक प्रयोगात्मक कविता छ। यौ छ, कम आँखरन में ज्यादे कूँणी। नान्तिनन कै भल लागणी, नान्छ्न्क्रि नर लगूणा और 'घुघूती, बासूतिकि.....फ्रम दिलूणी जसि-**"भै जा भि मै/के ख्वै ले/यौ दै ख्वा/ए-द्वि 'पु' लै ख्वा/ 'छाँ' पि/'घ्यू' लै ख्वा/धौ कै ख्वा।"**

'आदिम' कै पढ़िबेर उर्दू गजल कै पढ़नि जसि मिठी-मिठि लागै-**"उँच महल में आदिम, कतुक न्न जस ल्गू/कतुक लै लम्ब हो भलै, ब्न जस लागूँ।"**

'कॉ है रै दौड़' में उनूंल आज्क समाजैकि भभरियोयिक जो क्थ लेख राखी उकैं पढ़बेर लागूँ मैंस कैं भगवान्नैल एतुक दिमाग दि र्खौ, पै लै उ संसार्क भूड़पना ओझी किलै रौ, जो सिद्द-साद्द बाट छ्न उनूमें किलै नि हिटन? जब सबूकै संसार गाड़ाक वार बै पारै जाण छ, तब मैसूंल यौ भजाभाज किलै लगै र्खी? अगर मैंस दुह्रन्नैकि टाङ खैचण है भल आपुकै समावण में ल्ग जाओ, त वीक मन्नौक आधू असन्तोष त उसिकै दूर है ज्ल-**"सब भाजणई-पड़ि रै भजाभाज/निकइ रौ गाज/करण में छ्न सिंटोई-सिंगार/अगी रौ भितेर भ्यार।"**

उसिक त ट्लि-ब्लि मारणी मैंस कैकैं भल नि ल्गन, पै साहित्य में सिद्दी बात है भलि उ बात ल्गैं जो घुमै-फिरैबेर कई जैं। सिद्दी बात उतुक असर नि करनि, जतुक ब्लिकि मार करैं। सैद येकै वील साहित्यकारन कैं व्यंग्यात्मक शैली में लेखण अत्ती भल ल्गूँ। यौ मामुल में **'उघड़ी आंख्वोंक स्वींण'** में कत्ती टपकी, कॉयी चटैक छ्न और कॉयी फचैक। **'ब्रह्मा ज्यूकि चिन्त', 'तु कूंछी', 'को छ हम', 'अच्यान्क मैंस', 'झन पिए शराब', 'न मर गुण्ड', 'फरक', 'खबरदार', 'पनर अगस्त्क दिन'** जसि कविता, क्नन्क बीच में खिली फूलन्नैकि जसि औरी भलि देखीनी-

"आज छि छुट्टी/करौ मैल ऐराम/सेइ रयूँ दिनमान भरि/लगा टीबी/क्वे पिक्चर नि उणैछी/बजा रेडू/कैं फिल्मी गीत न उणाछी/सब ठौर उणाछी भाषण/द्रयखण पर्णी-सुणन पर्णी/सुण्यौ, भारत माताकि जैक न्हार/करीब सात म्हैण पछां/पैल फ्यार/छब्बीस जनवरिक पछां।"

ज्यून रूँणाक लिजी जतुक जरूरी हूँ आङ में खून, उतुकै जरूरी छ पाणि लै। दुणियाँक लिजी जतुक जरूरी छ दिन उतुकै रात लै, पराणिक लिजी जतुक जरूरी हूँ ऐराम, उहै नै कम नै ज्यादे, जरूरी हूँ काम लै। मैंसैकि ज्यूँनि में पिरेम भावैकि उई जाग छ, जो रेगिस्तान में पाणिकि और ह्यू में घामैकि। इज-बाब, भै-बैणि, दगड़ू-सुवा सबूक परेम आपण-आपण जाग उतुकै जरूरी छ, जतुक साग में लूँण और खीर में चिनि। जब मैंस ज्वान हुण लागूँ, वीक नान्छनाक स्वीण लै बुरूँसाक फूलूँक चारि खितखिताट करण फै जानीं। नान्छना आमैकि राज-राणिक काथैकि राजैकि च्येलि, **'किरन परि'** बणि वीक मनम कुतकाइ लगूँण लागैं और उ करण लागूँ **'स्वीणैक क्वीड़'।**

जापानिक **'हाइकू'** हिन्दी में इ नै, अब कुमाउँनी में लै खूब देखीण-सुणीण फै ग्यीं। अगर म्येरि जानकारि सई छ, त कुमाउँनी में हाइकू लेखणैकि शुरूआत सबुहै पैली ज्ञान पंत ज्यूल अस्सीक दशक में करि हाल छी, पछा उनरि किताब **'कणिक'** नामैल छापिणी। हाइकू लेखणैक प्रयोग नवेंदु ज्यूल लै करि राखौ-**"बंण बै बाग/शहर बै मैस्योलि/हरै ग्ये आज।"**

आखिर में, मैं नवेंदु कैं उनरि रचनात्मक समाजसेवा क लिजी बधाई दिनूँ। **'उघड़ी आंस्वोंक स्वीण'** उनार देखी स्यूँणा कैं पुर करैलि, यौ संग्रह में नवीन जोशि ज्यूल आपणि कवितान कैं एकबट्या राखौ। मकैं पुर विश्वास छ, उघड़ी आखूँक स्वीण पढ़नियाँकैं नवेंदुकि ज्यूनि, जुन्यालि रात जसि अङाव हालड़ी लागलि।

डॉ. प्रभा पंत
एसो. प्रोफेसर, हिन्दी
एम.बी.रा.स्ना.महाविद्यालय, हल्द्वानी

शुभकांक्षा के दो शब्द

'उघड़ी आंखोंक स्वींण' नवीन जोशी 'नवेंदु' द्वारा आचंलिक भाषा कुमाउनी में लिखा गया काव्य संकलन है। यह कवि का प्रथम कुमाउनी कविता संग्रह है। जो उसके एक स्वप्न की परिणति है। इससे पूर्व कवि की रचनाएँ छिटपुट रूप में पत्र-पत्रिकाओं सहित डॉडा कॉठा स्वर (काव्य संग्रह, ऑखर तथा दुदबोलि आदि में प्रकाशित होकर कुमाउनी साहित्य की थाती बन चुकी हैं।

कवि 'नवेंदु' ने स्वयं संघर्षमय अतीत देखा है। जीवन की जटिलताओं-विषमताओं और विद्रूपताओं से वे स्वयं दो-चार होकर आगे बढ़े हैं। भाषा प्रेम बचपन से रहा। आंचलिक भाषा को अपने उद्गम में ही उपेक्षित होते हुए देखा। जब पहाड़ी बोलने वालों को लोग 'गंवार' तक कह देने में नहीं चूकते थे। ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी कवि ने माता-पिता और समाज रूपी पाठशाला से कुमाउनी भाषा रूपी अमृत को अपने मन के कलश में भर लिया और उसे ही जन कल्याणार्थ व भाषा विकासार्थ लेखनी द्वारा अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

उघड़ी आंखोंक स्वींण' से तात्पर्य आंखों देखा यथार्थ है। कवि वास्तविकता के धारातल पर विश्वास करता है अतः उसकी कविता में कल्पना की उड़ान नहीं है। फूहड़ हास्य, अतिशयोक्तिपूर्ण अथवा अतिरंजित वर्णनों द्वारा वह वाहवाही नहीं लूटना चाहता। श्रृंगारिक दृश्यों के चित्रण से भी उसको ज्यादा लगाव नहीं है। शब्दों का ढकोसला उसे प्रिय नहीं। अतः उसकी कविता का प्रत्येक शब्द विस्तार लेने की क्षमता रखता है। वह आदर्श का नहीं यथार्थ का पक्षपाती है, और शाश्वत मूल्यों के प्रति प्रतिब) है। सत-असत की विवेचना किये बिना वह भावना के ज्वार में बहने वाला नहीं है। उसकी भाषा जनभाषा की कसौटी पर रखी उतरती है और जन-जन की समस्याओं को प्रतिबिम्बित करती है। स्पष्ट है उसमें जनभाषा की सहजता, स्वाभाविकता, अल्हड़पन और अनगढ़ता विद्यमान है।

कवि मानव के द्वारा खुली आंखों से देखे गये स्वप्न को साकार होना देखना चाहता है। इसके लिए वह दृढ़ संकल्प शक्ति, कठोर परिश्रम और अध्यवसाय को ब्रह्मास्त्र के रूप में प्रयोग करने की युक्ति बताता है। कवि की कविता में आमजन की व्यथा मुखरित होती है जो कवि को जनकवि होने के अभिधान के निकट ला खड़ा करती है। उसकी कविता बायवी न होकर जाग्रत और उतिष्ठित जीवन का सन्देश देती है।

कवि का मानना है कि आज आदमी कहीं खो गया है। इतनी भीड़ में भी वह पहचाना नहीं जा रहा। यहाँ वह नहीं उसकी छाया चल रही है। हिन्दू चल रहा है, मुसलमान चल रहा है, सिक्ख और ईसाई आदि रूपों में उसकी पहचान है। कबीर और गांधी कहीं दृश्यमान नहीं हो रहे हैं। नवेंदु का संग्रह मनुष्य को मनुष्य बनने का सन्देश देता है। वस्तुतः कविता संग्रह चरम शिखर पर पहुँच गये भ्रष्टाचार, कदाचार प्रदूषण, क्षेत्रवाद और आतंकवाद आदि के विरु) शंखनाद है। कवि आशान्वित है कि यह भेदभाव और जड़ता का कोहरा जल्दी हट छंट जायेगा। सद्बुि का सबेरा जल्दी प्रकट होकर मानव के मोह व स्वार्थ के संसार को अपनी किरणों की तलवार से छिन्न-भिन्न कर देगा। भारत का गौरव पुनः लौट आयेगा। भाषा के साथ विलुप्त हो रही अपनी संस्कृति भी पुनः फूलने-फलने लगेगी।

नवीन जोशी 'नवेंदु' अपनी माटी से जुड़े युवा व उत्साही साहित्यकार हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं का असली स्वर छिपा है। समाज की पहचान छिपी है और छिपी है गरीब, बेरोजगार, भ्रमित, श्रमित वर्ग की पीड़ा की प्रतिध्वनि। साहित्य के नव हस्ताक्षरों के लिए उनका रचना संसार एक दृष्टान्त है। उनकी प्रतिभा सतत् विकसित होती रहे और उनका भविष्य उज्ज्वल हो। इसी शुभकामना के साथ !

महाशिवरात्रि, १० मार्च २०१३

-दामोदर जोशी 'देवांशु' सम्पादक-गद्यांजलि
(पूर्व प्रधानाचार्य)

नवेंदु की कविता : एक नोट

कुमाउनी के युवा कवि नवीन जोशी 'नवेंदु' और उनकी कविता से मेरा पिछले अनेक वर्षों से परिचय रहा है। उनकी कविताओं की विषय-वस्तु का स्पान बहुत विस्तृत है, जिसमें दैनिक जीवन की साधारण वस्तुओं से लेकर गहनतम मानवीय अनुभूतियां सम्मिलित हैं। वे बिना लाग-लपेट के अपनी बात कहने में समर्थ हैं। अनेक स्थानों पर भावों की ऊंची उड़ान भरने पर भी उनकी कविता अपनी सहजता-सरलता का त्याग नहीं करती। वे सरलतम शब्दों में मन के गहनतम भावों को प्रकट करने में समर्थ हैं। उनकी यही सामर्थ्य उन्हें अपनी उम्र से कहीं अधिक तक पेंठ करने वाले एक सशक्त रचनाकार का रूप देती है। वे कोरी लफ्फाजी नहीं करते। वरन, उन्हें जो कुछ कहना होता है, उसे वे ठोक-बजाकर, और अनेक स्थलों पर ताल ठोंक कर भी सरलतम शब्दों में पाठकों के आगे प्रस्तुत कर देते हैं।

मानवों के बीच के आपसी रिश्ते ठण्डे पड़ चुके हैं, और हर इन्सान जैसे इन्हीं ठण्डे रिश्तों को अपनी नियति के रूप में स्वीकार कर दुबका हुआ है। अपने बाहर वह एक सुरक्षा खोल सा ओढ१ कर दुबका हुआ है, और इसी में वह अपनी सुरक्षा समझ रहा है।

म्येसी गईं मैंस/ बारमासी / अरड़ी रिश्त-नातन्ाक अरड़ में/ इकलै बिराउक चार/ चुल्ाक गल्यूटन में लै - अरड़

मानव केवल स्वप्न बुन रहा है। करने का सामर्थ्य होते हुए भी वह एक विचित्र प्रकार की तामसिक वृत्ति से घिरा है।

आफी बांदी खुद खोलंण, दुसरों कें चांणई/बिन के पकाइयै, लगड़-पुरि चांणई । - सब्बै अगाश हुं जांणई

समय बहुत बलवान है। समय के साथ बहुत कुछ बदल जाता है। लड़ाई भी। शत्रु पक्ष बदल जाता है, लड़ाई का कारण, उसकी तकनीक, उसका उद्देश्य सब कुछ बदल जाता है-

लड़ै- बेई तलक छी बिदेशियों दगै / आज छु पड़ोसियों दगै /भो हुं ह्वेलि घर भितेरियों दगै।

कवि के पास एक उत्कृष्ट जिजीविषा है, जिसके दर्शन हमें उसकी अनेक कविताओं में होते हैं। उसका मानना है कि घोर संकट के क्षणों में भी हमें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए-

पर एक चीज/ जो कदिनै लै/ न निमड़णि चैनि/ जो रूंण चै/ हमेशा जिंदि/ उ छू-उमींद/ किलै की-/ जतू सांचि छू/ रात हुंण/ उतुकै सांचि छू/ रात ब्यांण लै। - उमींद

'सिणुक' शीर्षक कविता में कवि एक सिणुक (तिनके) के भी अति शक्तिशाली हो सने के तथ्य को रेखांकित करता है-

जो कान/ सच्चाइ न सुणन/ फोड़ि सकूं/ जो आंख/ बरोबर न देखन/ खोचि सकूं/ जो दाड़/ भलि बात न बुलान/ उं दाड़न ल्वयै सकूं।

मानवीय सामर्थ्य के बौनेपर का अहसास कराने वाली कविता 'ज्यूंनि', जिसमें गजल की रवानी है-मुझे बहुत अच्छी लगी-

कूंण्याक तैं ज्यूनि, ज्यूं हर आदिम।/ सांचि कौ कूंछ-ज्यूनि बोकण जस लागूं/ उ ठेठर जो डाड़ मारि बेर सबूं कैं हंसूं / म्यार आंख्याक पांणि में वी आदिम जस लागूं।

समाज का एक बड़ा वर्ग सर्वहारा वर्ग का है। वह एक तिनके की तरह कमजोर-निरीह-अल्पसंतोषी, आत्मसंतोषी है-

तिनाड़न कैं कि चैं ?/ के खास धार्ति नैं/ के खास अगास नैं/ के मिलौ/ नि मिलौ/ उं रूनीं ज्यून/ किलै, कसी ?/ बांणि पड़ि ग्येईं ज्यून रुंण्याक -तिन्ाड़

'भैम' कविता में कवि का संदेश बहुत स्पष्ट है। दशहरे में फूंका जाने वाला रावण तो मात्र एक बहम है। फूंक सकते हो तो-

मेरि मानछा/ न बणाओ/ न भड़्याओ मरी रावण/ जब ठुल-ठुल रावण छन जिन्द दुनी में/ करि सकछा/ उनन कें धारो चौबटी में/ उनूं कैं भड़्याओ/ खाल्लि/ भैम भड़्यै बेर कि फैद ?

मनुष्य को मुंह तो खोलना ही होगा। आपाधाापी और अनिश्चितता की आज की परिस्थितियों में यह और भी अधिाक आवश्यक हो चला है। 'कओ' कविता में कवि आह्वाहन करता है-

कओ,/ जोर-जोरैल कओ/ जि लै कूंण छू/ पुर मनचितैल कओ/ तुमि चुप न रओ/ निडर-निझरक है बेर/ अपण-पर्या भुलि बेर/ पुर जोरैल/ हकाहाक करो।

आशा का स्वर-

ह्वल उज्याव, अर ए दिन जरूड़ै ह्वल/ मिं जानूं-तैसि न सकीणी क्वे रातै न्हें -हम्ार गौं में

'उघड़ी आंखोंक स्वींण' कविता, जिस पर इस काव्य संकलन को नाम दिया गया है, आशावाद की एक श्रेष्ठ कविता है, इसकी एक अन्तिका देखैं-

छ्जूणईं ईज्याक थान कैं/ बाबुक पूर्व जनम्याक दान कैं/ झाड़णईं झाड़/ छांटणईं गर्द/ समावणईं पुरुखनैकि थ्याति/ चढ़ूणईं फूल-पाति/ दिणईं आपणि बइ/ हरण हुं दुसरोंकि टीस-पीड़/ रात्याक धुप्प अन्यार में/ मिं लै देखणयूं-उघड़ी आंखोंक स्वींण।

जीवन क्या है ? विषम परिस्थितियों में भी जी जाना ही तो-

चिफ्याव सिमार ब्याट में लै, दौड़ छु ज्यूनि - ज्यूनि

फिरि लै-/ जि ऊंणईं आंस त/ सम्याइ बेर धारि लिहओ/ कभतै कत्ती/ हंसि आली अत्ती/ काम आल - डाड़ मारणैल

कवि ने छन्द-मुक्त कविता, गीत, गजल, क्षणिकायें, हाइकू आदि विविधा रचना -शैलियों पर सार्थक रूप से अपनी लेखनी चलाई है। अनेक स्थलों पर बिम्बों और प्रतीकों का सहारा लिया है। अनेक अलंकार कवि की रचना में स्वत: आ गए हैं। कवि के पास एक समृ) कुमाउनी भाषा है। निम्न शब्द प्रचलन से हटते जा रहे हैं-

गल्यूट, घ्यामड़, उदंकार, असक, एकमही, अद्बिथर, कट्ठर, कुमर, भुड़, पांजव जैसे ठेठ ग्रामीण कुमाउनी शब्दों का व्यापक और सही स्थान पर प्रयोग हुआ है। अनेक स्थलों पर मुहावरों, लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग हुआ है, यथा-किरमोई बर्‌यात, गुई जिब्‌ाड़, ब्याखुलिक स्योव, चोर मार, मरी पितर भात खवै, सतझड़ि करण, आंखन जाव लागण आदि।

नवेंदु जी को अपनी तरुणावस्था तक अपने जन्म स्थान कपकोट क्षेत्र के ग्रामीण परिवेश में रहने का अवसर मिला है। किसी भी भाषा को सीखने के लिए यही सर्वोत्तम आयु होती है। आगे चल कर कपकोट के बाहर भी उनको कुमाउनी परिवेश मिला। उनकी समृ) कुमाउनी का यही रहस्य है, जो आज की युवा पीढ़ी में कम ही दिखाई दे रहा है। फिर घर के भीतर उन्हें अपने रचनाकार पिता का सानिधय मिलता रहा, जिससे रचनाशीलता के लिए ललक और सामर्थ्य का निरन्तर विकास होता चला गया। उनके पिता श्री दामोदर जोशी 'देवांशु' हिंदी और कुमाउनी के एक सशक्त रचनाकार/ कवि हैं। स्वयं के लेखन और प्रकाशन के अतिरिक्त उन्होंन कुमाउनी रचनाधार्मियों के एकांकी, निबंधा, कहानी आदि संग्रहों का समय-समय पर सम्पादन/प्रकाशन और कुमाउनी भाषा को आगे बढ़ाने में भारी सहायता की है। मेरी तो यही कामना है है कि नवेंदु जी साहित्य के क्षेत्र में अपने यशस्वी पिता से कहीं आगे निकलें, क्योंकि 'पुत्रत शिष्यात् पराजयमम्'-यानी पुत्र और शिष्य से तो पराजय की ही कामना करनी चाहिए। अलमतिविस्तरेण।

-मथुरा दत्त मठपाल

महाशिवरात्रि पर्व, सम्पादक-दुदबोलि (कुमाउनी वार्षिक पत्रिका)

१० मार्च २०१३ ई. पम्पापुर, रामनगर, नैनीताल जनपद।

इजा !

इजा!
झिट घणिक तैं
ए घणि कै तैं सईं
म्यार सामुणि, मॉंथि-मुणि
अघिल-पछिल
हर तरफ बै
मकैं च्यापी-छ्येरी
अन्यार्‌क गाज कैं
अत्याचार्‌क राज कैं
जुलम-जबरदस्ती
अर डर कैं भजै
सुफल कर म्यार काज कैं।

इजा !
झिट घणिक तैं
करि दे मकैं निडर
निझरक-बेफिकर
बेखबर है बेर
मिं द्‌यखंण चांणयूं
स्वींण,
उघड़ी आंखौंक स्वींण!
अगाश में उड़णीं स्वींण
बेअधार स्वींण
पर निश्चित स्वींण
जनूं पारि
बेफिकर ह्वै
मिं दि सकनूं टेक
चिंणि सकनूं मजबूत भिड़
लगै बेर ठङार
पुजि सकनूं लगिलौ न्यात
जरूड़ै-स्वींणौं पारि।

कि ल्येखूं

कि दि सकूं मिं
कै कैं लै?
वी,
जि
मकैं मिलि रौ
दुनी बै ।

कि सुणै सकूं मिं
कै कैं लै?
वी,
जि
पढ़ि-सुंणि-गुंणि
र्‌खौ यैं बै ।

कि ल्येखि सकूं मिं
त्वे हुं?
वी,
जि
त्वील, कि कैलै
कत्ती-कबखतै
कौ हुनलै
कि ल्यख हुनल
जरूड़ै ।

अतर-
कॉं बै ल्यूंल मिं
के, तुकैं दिंण हुं
के् सुणूंल तुकैं नईं?
के् ल्यखुंल त्वे हुं
अलगै
य दुनी है !
मिं, के
परमेश्वर जै कि भयूं ।

अच्यान....

अच्यान
मकैं लागणौ-
म्यार भितर
बरसन बै भैटी
जुग-जुगन्यक
द्यौ-द्याप्त, परमेश्वर
उन्यर कई-सुणी
बचन-आंखर,
बिश्वासैकि
तागत-सबत,
सगींण लागि रैत्र
अर
जोर-जबरदस्तील
न्यां-न्यां कूनैं
धमकूनैं-लत्यूनैं
मिं कैं निग्व्यव-गुसैंक समझि
भबर्यूंण-कुकर्यूंण
लुटंण, धरम भ्रष्ट करंण हुं
पाजीण ल्यागि ग्येईं, खम्म कै
म्यार भितर-निमखंण
जबरदस्तीक जा पौंण-धो टरकूंण
झुट, बेइमान, अलच्छणि
राकस!

अच्यान
मकैं लागणौ
य मैलि हौ
मकैं उड़ै द्यौल
य कचुव पांणि
मकैं बगै द्यौल
पर,
मिं, फिर लै
आपंण विश्वासौक् दि
निमांण नि द्यूंल
आस्यौक खाम
उखड़ण नि द्यूंल
मकैं बिश्वास छु।
किलैकी-मिं,
द्येखि सकनूं

स्वीण
अर स्वीण द्रयखणाक तैं
अर स्वीण टुटंण पारि
जसि तागत चैं
हरेक में नि हुनि
मिं में छू।

कां है रै दौड़

कां है रै दौड़
भलि छै कुशल बात.....न्यान-तिन
अयांण-सयांण.....धिनाइ-पांणि
घर-दौड़, भितर-भ्यार
बंण-जङव, ह्यव-पांणि
ढोर-डंगर, फसल-पाति
बुति-धांणि....
आब कि पुछ्छ
ककैं छु पत्त
बस छु दौड़
कां हुं ? न्हैं पत्त।

सब भ्याजणई-पड़ि रै भजा भाज
निकइ रौ गाज
करंण में छ्न सिंट्वेइ-सिंगार
अगी रौ भितर-भ्यार
क्वे आपूं ज कै कैं न चितूंणय
क्वे मैंस कैं क्वे मैंस न मिलणंय
क्वे ज्यून कैं क्वे ज्यून न मिलणंय
क्वे सच्च कैं क्वे सच्च न मिलणंय
क्वे हिन्दुस्तानि कैं क्वे हिन्दुस्त्यानि न मिलणंय
क्वे पह्यड़ि कैं क्वे पह्यड़ि न मिलणंय

फिर उं सयांण कूणीं आपूं कैं (?)
छ्यर फ्वेकि
ढुंढणई मुक्ति-शान्ति.....
जां न ज्यूनि छु
न मैंस....न सच्चाइ....न मौतै ऽ
जां जि छु, कि न्हैं
क्वे कै सकूं पुर भरौस्यैल
कि मिल्यौल वां
छ्यर, सिफर अलावा और के ?
पर छ्यर सिफर है लै ठुलि
ल ह्वैलि'ई क्वे शान्ति, मुक्ति
वी तैं न ह्वैली क्वे दौड़
सन्तोष है महासन्तोष
शान्ति है निः श्वास शान्ति
मुक्ति है महामुक्ति ?

मुख्यौव त्यापो

ओ रे देशौक नौजवानों, हात बटी हात मिल्याओ।
धार्ति पारि जो ब्वझ बणि रौ, उकैं घट्याओ, क्यून लग्याओ।
आज तुमूकै बख्वत धत्यूंणौ, हात-हात में मुख्यौव थ्यापो
दुश्मणौंक लिजी इकबटी ज्याओ, आपंण हातौंकि ताकत न्यापो।
आज फिरि बणि ज्याओ 'राम', और राकस काव मारो
जामवन्त्यौक जस ज्ञान बांनो, हनुमन्तैकि जसि उछ्याव मारो।
आज बख्वत फिरि दुहराई ज्यूंणौ, आजादीकि फिरि म्यव ज्यापो
हम सब छां पैली हिन्दुस्तानी, हर दिल में य गीत थ्यापो।
हम को छां, हमैरि पछ्यांण के छू, हर बख्वत यैक धियान धरो
देशौकि भल्याइ पैल काम, वीक पछ्यि हर काम करो।
दुश्मणौंक फंड़ तो उठंण-चांणौ, उकैं पकड़ि-निचोड़ि च्यापो।
देश में ब्वे दियो शान्तिक कल्पवृक्ष, फिरि पिरेम्यौक मुख्याव त्यापो।

अरड़

ह्यूंन्याक अरड़ी दिनों में लै
काँ रैगो आ्ब
पैलियौक ज अरड़,
म्येसी ग्येई मैंस
बारमासी, अरड़ी रिश्त-न्यातन्याक
अरड़ में-
इकलै
बिराउक चार
चुल्याक गल्यूटन में लै-
कुकड़ी रई मैंस
लकड़ी ग्येई उन्यर जजबात
अकड़ नई जै-तैं हुं
हड़की कुकरों चार ।
को् भ्यागि कैं मिलणौ आ्ब
इजक लाड़
को् थांणौ आ्ब
बाबुकि नड़क
को् म्यानणौ आ्ब
सयाणौंकि सला
कि भै-कि बैणि
कि च्याल-कि च्येलि
कि धुलौ-कि स्यैंणि
कि द्यूद-कि भुलि
कि ब्वारि-कि बोजि
जैं च्याओ-वैं ठण्ड
वैं अरड़
बारमासी अरड़ ।

सिणुंक

लगूंण है पैली बिलुक
समजि लियो इतुक
मिं सितिल-पितिल
ख्वालि उस-यस
दाड़ खचो्रणी
कान खज्यूंणी
कौ भड़यूंणी क्यड़ जस
नैं.....बिल्कुलै नैं।

मिं सिड़ि बंणि
तुम्रा पुरुखन कैं
सरग पुजै सकूं,
सूंड में फैंटि बेर
ह्याथि कैं लै
फरकै सकूं,

जो् कान
सच्चाइ न सुंणन
फो्ड़ि सकूं,
जो् आंख
बरोबर न द्यखंन
खो्चि सकूं,
जो् दाड़
भलि बात न बुलांन
उं दाड़न कें ल्वयै सकूं
फिरि,
तुमि कि छा?

म्यार/सिंणुक्राक
टो्णि बेर
करि न सकना द्वि
हौर मिं,
गढ़व जै बणि जूंलौ,
फिरि कि?
लड़ला मिं हुं?
आ्औ, करि ल्हिऔ
द्वि-द्वि हात
पर कै द्यूं इतुक
मिं सितिल-पितिल

.....नौं
मिं सिंणुक ।

रीड़

ओ् मनखा! पांणिक ऱ्यला !
ह्राय रे त्यर अफुल्याट
उपनौंक जस तिड़तिड़ाट
मुस्यौंक जस चुड़फुड़ाट
स्यावौंक जस डूंडाट
कुकुरा प्वाथौं जस कूंकाट
सोच धैं-त्वी है त
इनैरी ज्यूनि भलि
न कै कै के लिहंण-न दिंण

किलै?
कि छु त्यर
कि ल्यै रौछियै
कि लिह ज्ालै?
त्येरि त
आपंणि ज्यूनि लै
न्है-आ्पंणि
रीड़ में डुबी छु
दूदक रीड़-पूतक रीड़
म्यांटक रीड़-ब्याटक रीड़
ह्रावक रीड़-प्यांणिक रीड़
सूर्जक रीड़-चनरमाक रीड़
परिवारौंक रीड़-पड़ोसियौंक रीड़
सौकारा्क रीड़ कैं त भुली जा्
और बता
को तारौंल यं रीड़न कैं?
रूंण दे-
खल्दीक हिसाब न लगा
खल्दीक मुंणि हुंणी
धकधकाटौंक
हिसाब जरूड़ लगा
कतू निमड़ि गयी
कतू बचि रयी
यौ बता।

जड़ उपाड़

बोट
ठ्ाड़ रूं
आपंण ज्ाड़न में
अर ज्ाड़ रूनीं पसरी
भिं में, उतुकै
बोट पसरी रूं,
ह्ाव में जतू
मिलैं जब तलक
ठीक हौ, पांणिकि खुराक।
पर जब बिगड़ि जां
मणी म्यस
पांणि लै-
डाव बणिं,
ट्ेड़ि द्यूं
ड्ावन कैं
खपोरि-
लगै द्यूं
छ्ल घाम।
घाम सुकै द्यूं
पात-पतेल कि
हुत्तै बोट कैं।
पितिलि ह्ाव लै
करंण ल्ागैं जांणी अत्ती लाड़
झुलैं उकैं
इथकै-उथकै
ह्ावैकि चार नैं
तूफानैकि भैं।
जड़ उपाड़ हैं जां बोटक
सकी जैं वीकि सकत
सुकि जां उ
गिनै-गिनै ब्ाली जां
ज्ाड़ सड़ि ज्ानीं
म्ांट बगि जां ज्ाड़ौं बै
ह्ाव लै बिन ठौक लगाइयै
मांथि-माथि'ई उड़ि जैं
हात तांणियै रै ज्ानीं सबूंक।

जब तलक

जब तलक पैद नि हुंन
बिं बै पौध
ल्‌गूं-मरि गो बिं
खै ह्‌लौ अन्यारैल
उड़ै ह्‌लौ ह्‌वैल
सुखै ह्‌लौ घाम्‌ैल
बुकै खै ह्‌लौ ढोर-डंगरौल
बगै ह्‌लौ पांणिल
कि द्‌बि-द्‌बि' ई
स्यौंती-स्यौंती
कि सड़ि-पड़ि-झड़ि गो
बुसी कपसी गो, मरि गो.....
सांचि है सकैं क्वे लै बातऋ
न्‌नू-न्‌न इकल बिं
शतुर हजार
के लै है सकूं
परदेश में
जो मरि ज्‌लौ
कैक ह्वल दोख
छुरिल क्‌टी जैं जब मुनि
नि हुन छुरि कैं दोख
नि हुंणि चैनि मुनि लै
इतू सितिलि-पितिलि, कौंइ।

पर छि यो बिं में तागत
ल्याकत-सगत
हौंसल.....तरांण,
सखत परांण ।
ऐ गो भ्यार बिं
बणै शतुरन-मितुर
है बेर ज्यून
च्‌णौ न्‌नूं भौ जौ
भो यो भौं ह्वल ठुल
ह्‌व उड़ाल
प्‌णि न्यौत्‌ौल
म्‌ंट कैं थ्‌मौल
घाम लागलौ ऽ
स्योव द्‌यल बटौवन कैं
अन्य्‌ार भैट्‌ौल यैक खुटॉ मुणि ।

मैंल द्यखौ

ए दिन मैंल
द्यखणैकि कोशिश करी
मैंल द्यखौ-
गरीब कैं सेठ सौकारैकि ल्याकत में
बुड़ कैं लै-ब्वे कैं लै
ज्वानौकि हरकत में,
उ सड़कवों चारि इथ-उथ फ्येरीणांछी
उपनों चारि मांथि-मांथी तिड़कणांछी
मुसभिकुड़ि च्वणों चारि
फटाव मारणांछी
अगाश में उणणांछी
ज्वणी कच्यारूंन फाव मारणांछी
भिंपन हिटणियों कैं
किण-पिटड़ जस मिनणांछी
ज्वां बै द्यखौ
नक्कै द्यखीणांछी।

ए दिन मैंल द्यखौ-
सबूकैं भल्
भल् संस्कारि
कै कैं नक नि द्यख
उ दिन
मिं स्वीण द्यखणौछी।

मिं रूढ़िवादी भल

मिं आतंकक
जबाब दिंणक
आदी छुं
ज्यौड़ौंल ब्वादी छुं
आतंकवादी छुं ।
क्वे लै थ्वपि दिओ
क्वे लै लै च्यापि दिओ
थै ल्याल उं
या मणी दिन
गुणमुणाट कराल
आंखिर कतू दिन
भूकै-तीसै रै सक्ल उं
यौ ज्वणनीं उं
अहिंसावादी
विकासवादी कूनीं आपूकैं ।
आपूं कैं पैली
समाज कैं पछां
माननीं
आज्वक समाजवादी छ्न उं ।
पर मिं चुप नि भैंटुल
धर्ती धाप, अगाश खाप करि
गज्यै द्यूंल तीन लोकन कैं
हाक करूंल
हुकाव करूंल
हकाहाक करूंल
भाट बणुंल-चारंण बणुंल
प्रतिवादी बणुंल मिं ।
उनरि चार
आपंणि ज्वड़ौं बै
क्वटी बेर
ह्वड-फ्वड में बैठणीं
पातन में घोल बणूंणी
आधुनिकतावादी
प्रगतिवादी नि बणुंल ।
मिं म्वंट बै
आपंण ब्वट बै
कत्तई न हल्कुंल
ज्यूनिकि सच्चाइ,

संस्कृति बै ज्येड़ी रूंल
उनर बिरोधी-दुश्मंण
मिं रुढ़िवादी भल ।

भल-नक

आंपण आंखन बै आपंणै आंस
आपंणि खापड़ि बै आपणी हंसि
आपंण गिजन बै आपंणै गीत
आपंण कपाव में आपंणै चिन्त
आपंण कान में आपंणै ब्वझ
आपंण खुटौं बै आपंणै बाट
आपंण हातन बै आपंणै काम
भल भै कि ?

आपंण आंखन बै दुसरौंक आंस
आपंणि खापड़ि बै दुसरौंकि हंसि
आपंण गिजन बै दुसरौंक गीत
आपंण कपाव में दुसरौंकि चिन्त
आपंण कान में दुसरौंक ब्वझ
आपंण खुटौं बै दुसरौंक बाट
आपंण हातन बै दुसरौंक काम
नक भै कि ?

आपंण पर्या नि सोचि बेर।

पनर अगस्त्याक दिन

आज छि छुट्टि
करौ मैंल ऐराम
स्येई स्यूं दिनमान भरि
लगा टी.बी.-
क्वे पिक्चर न ऊंणैछी
बजा रेडू-
कैं फिल्मी गीत न ऊंणाछी
सब ठौर ऊंणाछी भाषण
द्यखंण पणीं-सुणंण पणीं
सुंण्यौ-भारत माताकि जैक न्हार
करीब सात म्हैंण पछां
पैंल फ्रयार
छब्बीस जनवरीक पछां ।

तिरंग फहरूंणाछी मंत्रिज्यू (?) राजधाणि में
खालि शान करंण ब्हाट
ड्वार पारि ठौक लगूंणाछी
ख्वर नांङड़ !
कि पैरी धरम निरपेक्ष अलोप टोपि (पत्त नैं)
कैसिट में ब्हाजणौछी-राष्ट्रीय गीत
सब खाल्लि ठाड़ छी
तिरंगाक सामुणि
गिज बुजि,
ख्वाजि-खुजै...
मांछर उणूंण छुं
कि गरमैल
हात-खुट हल्कूंणाछी ।

फिरि ग्येई मंत्रिज्यू अलग-अलग ज्हाग
भाषण द्येई, झंड फहराई
पैरि ए ज्हाग राम टोपि
दुसरि ज्हाग रहीम टोपि
तिसरि ज्हाग टोपिक ज्हाग टोप
फिरि चौथ ज्हाग पागड़ !

ब्याव हुं सब तिर
धरि द्येई समाइ बेर
उ झंड, उं कैसिट
उं देशभक्तिक गीत,
न्हार, भाषण,
उं शहीदौंक क्वीड़

उं देशभक्तिक किस्स....
.....सब तिर
और फिरि-
सब स्ये ग्रेईं-म्येरि'ई चार
द्वि अक्टूबर तलक ।

(स्व. नरसिम्हाराव ज्यूक प्रधानमंत्रित्व काल में लेखी कविता)

ह्यिौक उमाव

हंसी ऽ !
म्येरि ज्यूनि'ई ऽ
आपंण ह्यिौक उमाव कैं,
तुकैं कतू भल म्यूनूं मैं
कसी तुकैं बतूं ।
त्यर उद्देखी मुखड़ द्येखि
मकैं कतू डाड़ ऊं
त्यर हंसण, कफुवा फूलौंक चार
मकैं कतू याद ऊं
फिरि लै कबखतै
मैं सोचनूं-
तु नैं-क्ये बात नैं
त्येरि फाम लै नैं-क्ये बात नैं
स्वीड़न में सई, तु मिलली मकैं
यैसि भेट लै नैं-क्ये बात नैं
जबकि-
म्यार कतुकप (कि सब)
बेजबाबी
सवालौंक जबाब
तू छै,
होय, त्वी ऽ
जकैं मैं भौत भल म्यूनूं
पर यौ लै ठीक छूं
नासमझी में
मिं हमेशा
त्वी है टूर भाजते रयूं
त्यारै ऊंणैकि आस में
पत्तै न चल
तु कब ऐ छै
कब न्है गे छै
और फिरि मिं
त्वी कैं याद करते रयूं
अ्ब मैं वीकि इन्तजारी में छुं
जकैं मौत कूनी... ।

ज्यूनि अर मौत

ज्यूनि अर मौत
छन गाड़ाक् द्वि किन्ार
बिन पुरि गाड़ तरि
फटक मारि नि मिलि सकन द्वियै
ए दुसर्ाक पिरेमी दिन भर
ए दुस्ार कैं टाड़ै बै
निमूनीं तीस चै-चै
पर रात में जब सब सिति ज्ानीं
मैंस कूनी-
हम नींन ग्ाड़नयां ।
उं ए दुस्ार कैं भेटनी
अङवाल खितनीं
लाड़ करनी-प्यार करनीं
जांणि को-को लोकन में
जां इकलै न ज्यूनि जै सकैं
न मौत
वां घुननीं
मैंस कूनीं-
हम स्वीण दयखनयां ।
घुमनै-फेरीनैं
कब रात ब्यै जैं
पत्तै न चलन
उं ए दुस्ार कैं छोड़णै न चान
मैंस य बख्त बिजणै न चान
फिर जदिन अथांणि है जैं
ज्यूनि मौत्ाक तिर पुजि जें
कि मौतै ऽ
ज्यूनि कै ल्हिज्ांण हुं ऐ जैं
जनम-जनम्ाक
दुणिय्ाक सबूंहै ठुल पिरेमी
मिलि ज्ानीं
इकमही ज्ानीं
खुसि इतू है जैं
डाड़ ऐ जैं
मैंस लै डाड़ मांरण भैटनी
फूल चढूनीं उन्ार मिलंण पारि
जुग-जुगन तलक
रूनी फिरि उं दगड़ै

पर मिलड़-बिछुड़णं
दुणियौक नियम
ए दिन मौत रिसै बेर
छ्वेड़ि दिं ज्यूनिक दगड़
डांड़ मारंण फैजैं ज्यूनि
डाड़ मारन-मारनै ज्यूनि कैं
बिछुड़ंण पणूं मौत बै
जूंण पणूं
नई लुकुड़ पैरि
नई दुनी में
बंणि बेर नई काया...
वां मिलैं उकैं
मौतैकि जौयां बैंणि माया।
वीकि' ई चारि
द्येखीण चांण
उकैं वी समझि
लागि जैं उ
वीक पिछाड़ि ।

नईं जमा्न में

अजब-गजब द्यखौ
(उत्तराखंड आंदोलना्क) उ जमा्न में
मैंस देखणांछी स्वीण
राज्या्क विकासा्क
गौं-गाड़न में द्यखौ-कफ़र्यू
घुघुतिकि घुर-घुर में सुणीं
बन्दूगौंकि गो्इ
जां लागि रूंछी रोज
भा्इ-चारा्क म्या्व
वां ज्वानौंकि लाश द्यो्खीं
जां है रूंछी, हंसि-ठा्ठ-खुसि
वां इज-बाबुकि डाड़ पड़ी द्येखी
बजार में द्येखीं
धरना, जुलूस, हड़ताल
मरीनैंकि जिन्दाबाद
ज्यूनौंकि मुर्दाबाद
ठो्सीणांछी मैंस-स्यैंणी
झेलून बड़ पैमा्न में,
अजब-गजब द्यखौ
उ जमा्न में ।

.....

पहाड़ों में द्यखौ बड़ बिकास
गौं-गौं तक दयो्खीं सड़क
रिटणाछी जीप, गाड़ि, मोटर-कार
घर-घर में द्यखौ टी.बी.
एक-एक टी.बी. में द्यो्खौ
छै-छै डिसौंक कनैक्सन
पेट खा्लि हो भलै
गा्ड़ खड़ि हुं, खंणि बिचै ग्येईं भलै
डा्व बोट खोपि-काटि बेचि हाली भलै
के रुजगार न्है भलै
घरक काम करंण में शरमै भै
नईं-नईं मिजात करणै भै
बिड़ि-सिगरेट-सुर पीणै भै
खा्ंण हुं क्रीमरौल, बिश्कुट चैनेरै भै
ए दुसरैंकि हौंसि में
हिन्दी-हिंग्लिश

कुमाउनी हिमाउंनी बंडण द्येखी
मैंस द्येखी भैटी रात्ति-ब्याव
जुवाक फड़न में
अजब-गजब द्यखौ
यौ नई जमान में ।

हमि मिलुंल

म्यार आंखन बुजी द्येखि
सुवा !
झन समझिये
त्यार सामुणि भै बेर लै
मिं त्वीकैं
चाँण न चांन,
सांचि-
आँख बुजि-स्वींणन में
हुरफुरानी !
त्वी कैं ई
चांण लागि स्यूं मिं ।

म्यार गिज
त्यार सामणि
के कै नि सकौं, है सकूं
चकबकानी !
म्यार आँखन कैं पढ़िये
म्यार मूंख कैं गुणिये
जब सुंणी ज्याल तुकैं ।

म्यार खुट
है सकूं
हर घणि-त्यार तिर
नि ऐ सकौं
पर म्यर ह्यि
खितखितानी !
त्वी थै ई पुजि रौल ।
म्यार खुट न सई
म्यार मनसुब हमेशा
त्यारै दिगाड़ हिट्याल ।

जमान्याक डांसि ढुङी उच्च भिड़
है सकूं
मकैं त्यर हात लम्यूंण न दिओ
पर म्यार आंख
कुतकुतानी !
तुकै ठौक लगै
भलीभैं चिताल लै
हौर त्यार ह्यि दिग्याड ज्येड़ी

म्यर ह्यि
त्यार हर दुख-पीड़ कैं
अपण्यै लै ल्यल।

जब लै, जां लै, जि बात पारि लै
तौहड़्ल त्यार आस
वैं, उत्ती, उनूकैं
सोसि ल्याल म्यार आंस ।

तु म्येरि ह्वेली ऽ नैं सई,
कौव ल्याजी पातौं न्यारी !
शुकुर त्यार कसी !
कफुवा फुल्यूण जसी!
आपंण मनैकि रा्णी !
मिं धरूंल त्यार हरेक
कौंव मनसुबनौक ख्याल
जमा्न कतुकै रोकौ हमूकैं
नि सकल हमूंहै
मिं भै रूल त्यार हरेक क्वीड़न में
हमि मिलुंल
ए दुसरा्क स्वीणन में ।

को जितौल

अगाश में अजब
लड़ै है रै
जून और बादवौंकि

जून आपंण ब्राट
लागि रौ
मांठू-म्यांठ
न कैं यथ् चांणौ
न उथ
बस लागि रौ
आपणै सुरन मेंऋ

वां वादव
सोचणौ-छोपणैकि
जून कैं।
कि छोपि सकलै?

कबखतै
सुकिल बादव लै
छोपि दिणौ
जून कै
और कबखतै क्व बादव है लै
जून
खुसूकन्
मुचि जांणौऋ
और कबखतै
जून आफ़फी लै
लुकि जांणौ खेल में
बादवौंक पछ्यि ।

को जितौल यौ लड़ै?
हौक जोर पारि फेरीणी
बादव
कि आपंण दम, आपंण ब्राट हिंटणी
जून?

ढुङ

ढुङ जब घन्तर बणनी
ठुल-ठुल एकन्ली-द्विन्ली लै
सिलाम करनी उनूकैं
ट्याड़-ट्याड़नैकि कपाइ फोड़ि
करि दिनीं सिद्दि,
कूनीं-
झन करिया कुकाम
झन जया कुबाट ।
मैंस जब-जब भबरीनीं
भुलि जानीं बाट
ढुङ है जानीं तिख
बुड़नी खुटौं में
करि दिनीं ल्वेयोव
कि द्वयास लागि
घुर्यै दिनीं भ्योव
फजै दिनीं पताव ।
पर, मैंस जब जानीं भाल बाट
ढुङ बंणि जानीं द्याप्त
क्वे ग्वेल्ल, क्वे गंगनाथ
क्वे ब्रह्मा, विष्णु, महेश लै
गाड़ में बगि-बगि बेर
गंगल्वाड़ बणि जानीं शिवलिंग
भलि अशीक दिनीं
जि माङौ-दि दिनीं ।

जांणि कतू काम
मस्याल घैंसण, धान कुटंण, ग्यूं पिसंण
गाड़-कुड़, इचाल-कन्ह्याव
काँ न लागन ढुङ
औंव-खून लागि गोयौ
घ्यू में छौंकि चाटी जानी ढुङ।

पर आज ढुङौकि के कदर न्हैं
लत्यायी-जोत्यायी
बुसिल-पितिल समझि
ख्वेड़ी-फोड़ी जांणईं ढुङ
द्वि-द्वि डबल में गाड़-स्यार, माङ, खंड़ि
ब्येची जांणई ढुङ...

भो यैं ढुङ
यं आज्ञाक ब्राट्ाक र्व्ाड़
बंणि ज्ञाल 'माइलस्टोन'
ल्येख्वी ज्ञाल इनूं पारि
बख्वाक कुन्ाव
शिलालेख बणि ज्ञाल यं
सुंइ-सुंइ, ढुनि बेर
छजाई ज्ञाल संग्रहालयों में
पहरू द्याल इनर पहर
डबल लाग्ाल इनूकैं द्यखण्ाक
पै कि फैद
मरी पितर भात खवै
जब ज्यून छनै
निकरि इनैरि फिकर
ख्ालि मारी लात।

तिनाड़

तिनाड़न कैं कि चैं?
के खास धर्ति नैं
के खास अगास नैं
के खास घाम नैं
के खास हौ-
के खास पांणि नैं
के मिलौ-नि मिलौ
उं रूनीं ज्यून ।
किलै? कसी?
ब्यांणि पणि ग्येई ज्यून रुंणाक ।

अतर-
उनार के स्वीण नैं-के क्वीड़ नैं
के खुशि नैं, के दुख-के पीड़ नैं
छैं लै त ऽ नाना ऽ -नान
नाना खुशि-
एक छिट प्यांणिक मिलि गयौ ऽ
उं खुशि ।
ए घड़ि घाम मिलि गयौ ऽ
कुड़-कच्यारै सई
मणी ठौर मिलि ग्येई ऽ
उं खुशि
बस, जोरौक पांणि
जौरौक घाम
जोरैकि हौ कि डर भै
अर उ लै निपटि ग्येई ऽ
ज्यान बचि ग्येई ऽ
उणि-पत्येणि-बगि
कैं फजि जाऔं ऽ
उं फिरि लै खुशि
किलै? कसी ऽ
डाड़ मारणौक टैमै नि भै

फिर आँस आल लै ऽ
पोछ्यल को?
उं क्वे नका-मुकां खाई
म्वाट-तगाड़ बोट जै कि भ्याय
जनूकैं चैं सबै तिर ब्यांकि-ब्यांकि'ई
अर तब लै रूनीं

हर बखत
डाड़ै मारन।

घुम्तून हुँ

म्येरि ज्यूंनि
रात्ति ब्यांणैकि
या कि ब्यावैकि
ठंडि, हउवा-हऊ
हौ
या चुचिक भौ
या घ्यू नौंणिक डौ
या सन्यूत मौ
जसि न्हैं
बिल्कुलै न्हैं।
यौ छु बड़ि कट्ठर
बाग-भालुन्याक दु-उड्यार
या जोगि-मातन्याक
नंग आङ में छ्यर फोकि
धुंणि स्मूंणाक
जोग्याक ड्यार-डफ्यर
में रूंण जसि,
उच्च हिमाव्याक ड्यानौं
भ्योव, कप्फर, पैर, पैराड़
जसि उच्चि-निच्चि,
ह्यूं जसि अरड़ि
ह्यू जसि'ई त्याति
बौड़ि-च्येलिन्याक असक-असजिल
घा-लाकणौंक गढावों चारी भ्यारि
श्यालुक बगेटों जसि फ्याटी
चिर्याड़ पणी ख्युटों
भालुक जसि बुकाई
मुनी बण्याठ्यैल जसि कचकचाई
मांखौंल भनभनाई जस घौ।
हौर, यस्सै म्यर लाड़ !

ख्यालि घुमंण हुं नैं
म्यांथि-म्यांथि'ई चै उड़ण हुं नैं
आपंण सामव दगड़ै ल्यै
यां ख्वांण् पिंण हुं
सैर-तफरीह करि
इकै भोगंण-बिग्यूंण हुँ
कै-कै इजाजत न्हैं
भल् म्यनो नक्

आला ऽ, आया
तुमि हमा्र परमेश्वर
सौ फ्रया्र आया !
पर धरिया धियान
यां ऐ, यां कैं ख्वां्ण
यां कै पिंण
यां कै लगूंण
यां कै बिछूंण पड़ल
मिकैं भोगंण पड़ल
म्यरै बड़ंण पड़ल
जो छु मन्जूर
त ऽ आओ, सौ फ्या्र आओ,
तुमि हमा्र परमेश्वर भया ।

थैलि और बोतल

थैलि
और बोतल
यो कल्जुग्क राज-रांणि
अमरबेलाक कु बिं
अकलबर्क स्याव-कुरिक झ्याड़
झौ ज्मो, भड़्व फुलौ, बकौव फुलौ
तन्र कु नौं मेंऋ

पर जि कूंछ-जस कूंछ हो आज
है रौ इनरै राज
जां कूंछ वां
घर-घर में
शराबक् जहर ल्यूंणी
हर घर कैं बिन्यूंणी.....!
पर, द्यखो
मैसोंकि हौंसि !
पैलि-पैली मणीं शरम छी
लुकै बेर लूंछी
खल्दीन में
कि कमरूंन खो्सि
आ्ब त ऽ.....
जि ल्यूनईं उवा्च्छ
दल्द-थाड़ मुंणि च्यापि बेर लै
सात हात तलि
खण्यै बेर लै
नका्ट, कुलच्छणि
तनूं तैं काव लै हरांण
फिरि-फिरि मली ऊणीं
जि धरो, वी कैं बिन्यूणी
पलास्टिका्क-पौलिथीन्क
थैलियूनै.....बोतलूनै
थिका्व, साग-पात, पिसूं-चांओ
को कओ
दै-दूद-घ्यू-ह्यूं लै
इनू में ई मां्गनई-ल्यात्त,
द्यखै-द्यखै ल्यूनईं

दिगौ ऽ
कस् लाड़? कस प्यार इनूं दगै

पैली पांणि आंचुइ भरि
चूव लगै पीछी
आ्ब स्यूं बोतलै
बोतलैकै हड़कूनईं ।

पत्तै न्है

तु मकैं भली भै ज्ञांणछै, मिं तुकैं ज्ञांणू
पर मिं आपूं कैं ज्ञांणनूं, कि नैं, पत्तै न्है।
ब्वाट हिंटण भौत दिन है गयीं, पटै ल्वागि गे हिटनै
काँ फजि गोयूं, मिं पछ्याणनूं-कि नैं, पत्तै न्है ।
अरे! मिं यौ कां ऐ गोयूं, सैद जां फजंण छी फजि गोयू
पर कां फजंण छी, मिं ज्ञांणनू-कि नैं, पत्तै न्है ।
जो मकैं भल् ल्वागूं, उ पर्या किलै है जां
यौ आपंण-पर्या, मिं पछ्याणनूं-कि नैं, पत्तै न्है ।

ज्ञांण त छु, हिटंण लै छु, पर ज्ञांण कां पत्तै न्है
कब निमणि ज्ञाओ ब्वाट, कब डुनी ज्ञाओ खुट
कब को दगड़ तिर्यै द्यल, कब को रिश्त पर्या है ज्ञाल
है ज्ञालि कब कै कईं कें गल्ति, कब खतम है ज्ञालि यो मस्ति,
डरनूं मिं यौ रात जसि, आटू-अद्फरि बात है
आंखन् उज्यांव कब ह्वल, फिरि नईं दिन कब ह्वल
फिरि लै छु एक दौड़ यौ ज्यूंनि, ए दुसरैकि होड़ यौ ज्यूनि
कां फजैलि-कि पै ल्यैलि, पत्तै न्हैं ।

हिटते रूँल

हमि आपंण ब्वाट में, थकुंल न हारि बेर।
हिटते रूंल वां जांलै, ब्वाट जांनै रौंल ।।
रुकुंल न अद्बाट में, बिसूंल न ब्वझ कैं।
मिलल जो बटौ ब्वाट में, दगड़ै उकैं लिहजौंल ।।
अन्यार हो ब्वाट में कती, कि हो अन्ध मोड़ ।
खुटौं में आंख ज्येड़ि बेर, हिटते अघिल रौंल ।।
हिम्मत ह्रूंल न कबै, कट्ठर हो ब्वाट भलै ।
हिटते अघिल रूंल हमि, फराल आफी हौल।।
जिंतुल हमि, हार्यल उं, निमणि ज्ञाल सौल-कठौल ।
फरी ज्ञाल ब्वाट आफ्फी, जब ल्वागौल हुड़की बौल ।।

इराद

आब आजि मणी, हिंटणौक इराद छु
ज्यूनी ऽ, त्येरि रांफ में, त्रातणौक इराद छु ।
मरणौक बाट ढुंढन-ढुंढनै, ज्यूंनि मिलि गे
आब डाड़ मारन-मारनै, हंसणौक इराद छु ।
किलै आयां, किलै हिटि दि गयां, वये त ह्वल यैक कारण
वये त ह्वैलि हमैरि जरवत, वी करणौक इराद छु।
ठोकरन है डरते रयां, हर लड़ै जितंड़ि वै
आब य आखिरी लड़ै कैं, ह्रणौक इराद छु।
छलबलू हंसिक पिरेमी छ्यां, आब ऐगे समझ
मांफि दे आंसू-त्वीकैं, आब पीणौक इराद छु।
हंसणैकि इच्छ छी, हंसि लै मिली यां
फ्राटि गो खुशिल ह्यि, आब डाड़ैल सिंणणौक इराद छु।
ज्यूनिकि काथ छी, काइ अमूंसिकि रात जसि
रात ब्यै, द्येख्यौ 'नवेंदु', आब ज्यून रूंणौक इराद छु।

झन पिये शराब ललुवा

झन पिये शराब ललुवा, झन पिये शराब ।
य इलम खराब ललुवा, य इलम खराब ।।
पैली त्यार गाल लाल भरिया, आब निचोड़ी नीमूं ।
आपंणि दास दयख ललुवा, नि कौ आजि पीनूं।।
आज तु पिणैं छै इकैं, भो तुकैं य प्येली।
सतरंगी स्वींणौं बटी, पताव ख्येड़ि द्येली ।।
तु लै ख्यड़ शराब ललुवा, तु लै ख्यड़ शराब।
झन पिये शराब ललुवा, झन पिये शराब ।।
भुखै छन नान त्यरा, डाड़ मारणै स्यैंणी।
इज-बाबू अलग रूंणईं, दुखी छैं भै-बैंणी ।।
घर अलग खुजि गोछ, बजी गो छ गोठ ।
आज लै संमल नतरी, है जालि इवकै चोट ।।
है जाल आजै शराद ललुवा, है जाल आजै शराद।
झन पिये शराब ललुवा, झन पिये शराब ।।

बाट्क कुड़

जांणि को् जुग बै
जुग-जुगन बै
हर बट्यौव कैं
ऊंणी-जांणी मैंसन कैं
बिन भेद-भौ करियै
उनैरि का्इ रात्क तैं
मैंल आ्सर द्ये
हात थ्मि
ह्यत-बुत स्रि
सह्र द्ये
हौर जैल कौ
अपण्यै लै ल्ये ।

पर अफसोस
रात ब्यांण पारि लै
उं न बिज
वापिस जांण हुं न त्क
उनरि नींन न टुटि
यें करंण लागीं
खटि-पटि
मकैं लुटि
सारंण लागीं
म्येरि लटि-पटि।
हात जोड़ि-कौ छौ ऽ
मणी न्है लै ग्येईं
मणी आपंण हक जतै
मकैं आपंणै जैजात बतै
ब्यन करि ल्हि ग्येईं म्यर
मणी यैं लै अड़ि रयीं
मिं सुन्क च्ड़ कै
करंण ल्गीं छ्र।

कल्ज में ल्ड़ धरि
तड़िक तरांण लगै
पापि परांण बचै
फिरि छाज्यूं मिंऋ
पर आजि हैगे उनैरि
ट्ेड़ि दीठि
ऐ गो जिबाड़ में पांणि

करंण लागि ग्येईं
चोर मार ।

मनखो !
यौ कुड़ाक रुंणियो!
म्यार पहरुओ !
करो म्येरि फिकर....

नतर-
है जा्ल अन्धेर
सब है जा्ल छा्र-मा्ंट
उधरी भिड़
टुटी पट्खांट
है जालि
तुमरि तक्दीर...।

इतिहास

इतिहास, एक विषय
मैंल न पढ़ि रय
उ जो किताबन में ल्येखी जां
कॉपिन में उत्‌ारी जां
और इनत्यानन में
नकल्‌ाक फर्ज में बै स्‌ारी जां
दिन-म्हैंण-साल रटंण पणनीं
यै वील न पढ़ ।

इतिहास, एक विषय
मैंल न सुंणि रय
नेता सुणूंनी उकैं
जमैं साल भर च्‌ाण-प्व्‌ाथ बिटनी
और तीथ-त्यार ऊनै
उमें फूल-पात चढ़ूंनी
बस, इसी कै ज्यूंन धरि र्‌ाखौ
मरी मुर्द फुकंण हुं जस उनूंल
पौहर्‌ैं र्‌ाखौ इतिहास ।

उनूंथैं क्‌े फछै
क्‌े थैं कूनीं इतिहास
कतू फरांण बख्त इतिहास कई जां
अर कतू बख्त में
ऐलक बख्त लै
रणते जाणौ
इतिहास बणते जाणौ
उं य नि ज्‌ांणन चांन
न जांणि'ई सकनीं।

मैं लै
न जांणन, न पछ्‌यांणन
य्‌ास इतिहास कैं,
मैं जांणनूं-उ इतिहास
जमैं मैं ज्यून छुंऊ
आइ लै-
इतिहासक उडियारै ऽ
छु म्यर ड्यर
आइ लै इतिहासैकि ख्‌ादी ऽ
छु मैंल ब्‌ादी

आइ लै फा्नणयूं
इतिहास्क मडुवा रवाट हौर
झुंगर-कौंणिक फा्नै लै
आ्पंण ला्दण।
इतिहासाक छ्यूल
आ्इ लै ब्ाइ राखीं मैंल
भ्योव घुरयूंण लैक्ाक
सच्चाइ, ईमानदारिक बैल गोरु-ब्ाछ
आइ लै प्ाइ-त्ाइ, सम्ाइ रा्खी मैंल
आइ लै डरनीं म्यार परांड़
देशि अंग्रेजन कैं द्येखि
आइ लै न हिटन में
डरै्ल-शरमै्ल-बांणिल
निझरक माल रोड पारि
ब्याव छै बटी आठ बाजी तलक
कि नेताओं लाल-निलि गाड़ि उंण बखत
आइ लै चलणै में छ्न मिं पारि
जलीं व्ाल बाग्ाक जा गोइ-ज्ांठ
जैं ऽ तैं ऽ, आपंण हकैकि बात करंण बखत
आइ लै हातै में छु म्यार
भ्ाूक, गरीबी अर बिरुजगारीक तिरंग
आइ लै रिटनीं म्यार आ्ंखन में
आजादीक स्वींण!

यारो !
तुमि कुंणाछ
इतिहास पुरांणी गो
द्वि हजार साल है ग्येईं
नईं जम्ान ऐगो
देश बै गरीबी न्हैगे
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' इतिहास बणिगो
'ग्लोबलाइजेसन' ऊंणौ
मकैं सांचि'ई न ऊंणइ।

पछ्यांण

मिह्वाक बोट में
नाशपाति
आरुक बोट में खुमानि
कुशम्यारु
गुलाबाक डाव में
नौ-नौ रंगौंक फुल्यूड़
स्यौड़ियौंक आड़
मैसौंक,
मैसौंक आड़
स्यौणियौंक लुकुड़/मिजात
धरम भबरी मैंस
कि छू कैंकि असलियत
कि छू कैंकि पछ्यांण
को जांणू?

उं आपफी न जांणन
लागि रयीं जमानाक टंटन में
घ्योरी रयीं कंछ-मंछन में
पत्तै न्है, कां हुं....
किलै.....जांणई।
पड़ि रै फिकर
छींक पुजणैकि
दुसरौं कैं ध्वाक दीणैकि !
पत्तै न्है
क कैं दिणईं असल ध्वाक।

पछ्यांण ! हस्ति !
कतू सस्ति?
लुकुड़-ज्वात/जुड़-दाड़ि-बाव
बदइ
बदइ जांणै अस्ती ऽ
बिकास?
दुसरौंक जस करण-अदपुरै
पताव जांण, चांण अगास

असलियत?
नि छी जब लुकुड़
कि पैद हुंण बखत
जास छियां नंग

आब छन लुकुड़ै
दुसरौंकि हौंसि
हुंणयां नंग...

कि यै छु हमैंरि
पछ्यांण?
हमर विकास?
कि बचि रौ
हमूं में हमर निसांण?

राजक च्यल

मिं,
आपंण बाबुक तैं
'राजक च्यल',
तुमि लै
हौर सारि दुणीं
सब्बै,
भो म्यर भौ,
तुमर
हौर सारि दुणियाक
च्याल लै-'राजाक च्याल'
'राजकुमार!'

धर्ति उतुकै
जतुक छी
जुगन पैली
कसी बणाल सब्बै राज
के पारि करल राज
लड़ाल नैं ऽ
करल कि
लुकार खपिरन कैं
हत्याण हुं।

मिं नि कूंल
आपंण भौ कैं
'राजक च्यल'
मिं कूंल उथैं 'भौ'
सिरफ 'भौ'
'म्यर भौ'
करूंल लाड़
सिरफ लाड़
अर दयूंल भलि शिक्षा
भलि बांणि
और मिं बणूंल
अर चूंल
उ बणौं
भल आदिम
सिरफ भल आदिम !

लौ

को कूं मौत आली ऽ
'मिं मरि जूंल'
मिं त ए चड़ छुं
दुसर ड्‌व में भै जूंल ।
को कूं-ह्‌व आली ऽ
'मिं उड़ि जूंल'
मिं त ए हड़ छुं
आपणी ज्‌ाग में अड़ि रूंल ।
को कूं-गाड़ आली ऽ
'मिं बगि जूंल'
मिं त ए ढीक छुं
दुसर ढीक कैं चै रूंल ।
को कूं-धन दौलत आली ऽ
'मिं बदलि जूंल'
मिं आफ्‌फी अनमोल छुं
बस आपूं कैं बचै बेर धरूंल ।
को कूं रात आली ऽ
'मिं घाम ज न्है जूंल'
मिं त उज्‌ज्‌याव छुं
जूंन, त्‌ार, मुछ्‌याव बड़ि जूंल ।

मिं काल छुं
बिकराल छुं
डरो मैं बै
न्‌ानूं भौ छुं
लाड़ करो मिं हुं
मिं ब्रह्मा-विष्णू-महेश
मिं बखत जस बलवान छुं
आदिम कैं मैंस बणूणीं
दुनिय्‌ाक कण-कण में बसी
क्‌यूँ न्हैत्यू-को न्हैत्यूं
यां लै छुं-तां लै छुं
जाँ जरूरत पड़ैलि वां मिलुंल
थापि दिऔ कत्ती न हलकुंल
बौया छुं मिं बिराट छुं
अरे! मिकैं ढुढंण काँ हिटि दि गोछ
मिं तुम्‌ार भितर, मिं आ्‌पण भितर
मिं 'लौ' ।

बखत

ज्यूनि भर्‌क तैं वचे आपंण न भय
बस घणि-द्वि घणिक तैं, हर खेल खेलण है गो ।
कब सोचछी-चंद-त्‌रै मिलन
ज्यूनिक बगिच में बस फूलै खिलन
मैंल माडी छी सिरफ हंसि, सिरफ लाड़
पर ज्यूनिक मल्लब सिरफ डाड़ मारंण रै गो।
ज्यूनि ज्यूं लै त ऽ कसी बिन इच्छैकि
कसी सुंणि ल्यूं झुठि क्‌थ-बिन सच्चाइकि
डरनूं कि फिरि ऐ ज्‌ाल वचे अन्य्‌ार
म्यर बिस्वासक दि आ्‌ब त ऽ डबडबांण फै गो।
किस्मतैल द्‌यौ हमेशा ध्‌वख
मिहनत्‌ौक न मिल ए फल लै च्‌वख
को् चां जितौ दुसर लड़ै
बखत भाजणीं ध्‌वाड़ौक खुट टोड़ण फै गो।
ज्यूनि भर्‌क तैं वचे आपंण न भय
बस घणि-द्वि घणिक तैं, हर खेल खेलण है गो ।

रुम-झुमा

रुम-झुमा-रुम-झुमा, गीत गानूं-हम तुमां ।
गीत गानूं-हम तुमां, रुम-झुमा-रुम-झुमा ।।
आ्‌ओ गा्‌नूं म्‌ालशाई, आ्‌ओ गा्‌नूं अजू-बफौला ।
न्योइ में ह्योल लगूनूं, आ्‌ओ गा्‌नूं वचे भग्नौला ।
हातों में हात खिती, आ्‌ओ गानूं चांचरि-इ्‌वाड़ा ।
नि लै ऊनां, फिरि लै गा्‌नूं, जि लै ऊनीं थ्‌वाड़-थ्‌वाड़ा ।।
आ्‌ओ द्‌यखनू भारत-जागर, आ्‌ओ ज्‌ानूं रामलिला ।
न्‌ान छ्नां का खेल खेलनूं, भडिर मिठा-तित तिला।।
रुम-झुमा-रुम-झुमा, गीत गानूं-हम तुमां ।
गीत गानूं-हम तुमां, रुम-झुमा-रुम-झुमा ।।
आ्‌ओ बणूनूं पू-लगड़ा, ज्‌ानूं उतरैंणी बागिश्‌यरा ।
सौंणा का पुर महैंणा, म्यौल है रूंछ जागिश्‌यरा ।।
साल भरा म्याल-ख्‌याला, हर मौसम ऽ त्यारा ।
सबों दिगा्‌ड़ भाइ-चारा, सबों दिगाड़ ऽ प्यारा ।।
आ्‌ओ बजूनूं बींण बा्‌ज ऽ, आ्‌ओ बजूनूं तूतुरी ।
छ्लेरों क नांच द्‌यखनूं, ढोल बजूनूं ढम-ढमा ।।
रुम-झुमा-रुम-झुमा, गीत गानूं-हम तुमां ।
गीत गानूं-हम तुमां, रुम-झुमा-रुम-झुमा ।।

वीक स्वीण

वीकि फाम.....
जब लै ऐं
मकैं आपंण दिग्ाड़
पत्त नैं क्ां-कथ्
कत्थप-कत्थप
ल्हि जैं-
भौत टाड़ तलक
कएक दुख-तक्लीफ, टीस-पीड़
जांणी घन्तर
हम्ार थ्ाई कष्टौंक
खुलि ज्ानीं आफ्फी पुन्तुर ।

वीकि फाम
दग्ाड़ ल्हि बेर ऐं
उ जमान्ाक
जब न मिलि रौछ्यिां हम
पुरांणि, पर बिल्कुल साफ
लुव्ाक जंजीरौंल ब्ादी
मिं, म्येरि इज्ैकि
फोटूंन कैं
और उं स्वीण लै
जो मिं द्यखछीं
वी दगै भेट हुंण पछ्ति्ाक तैं
हरी-भरी स्वीण
खूब मुखुत चक्ाल स्वीण
सब तरफ दैल-फैल
सब तरफ हंसि-खुसि
अहा ! उ आजादी !!
और फिर ए दिन
उ मिलि ग्येछी-हमेशाक लिजी (?)

आज फिरि,
वीकि फाम ऊंणै
उ नि ऊंणैइ-हरैंगे
हैंगे उ नंगौकि, मल्लबियोंकि
जनूं तैं वीक मल्लब
लुकुड़ उघाड़ण
कूंण न कूंण, जे मन आय कूंण
कुकरम करंण

गाइ दिंण, मार काट मचूंण
रै गो बस ।

किरन परी

बेई रात्क छन वक्षीड़
द्यखौ मैंल ए स्वीण
ए भौतै ग्वेरि फनार
द्येखीण चांण
आम्क काथौंकि
राजैकि च्येलि,
स्वर्गैकि अप्सरा,
म्यर स्वीणौंकि रांणि,
कि पैल दर्जैकि
हिन्दीकि किताब बै
म्यर हिय में भैटी
'किरन परी' न्यात
वक्षे, कोप्प....ख्याप ।
कफुवा....दाड़िमा.....
फूल जसि.....
कि हथगइ जसि.....
....जांणि कसि-कसि.....
मकैं द्येखि मणी हंसी ऽ
सुन-चान्दि बरसंण ल्ागीं
बलांण ल्ागी ऽ
हिर-मोत्यूं-ज्वाहरात
बगंण ल्ागीं
जि कैं ठौक ल्ागि गयौ ऽ
उ लै बणंण ल्ागौ
सुन-चान्दि-हिर-मोत्यूं-ज्वाहरातै ऽ ।

उ अघिल ऊंण ल्ागी
हात फैलै ऽ
मकैं अङ्वाल खितंण हुं
मिं भाज्यूं.....
नीन, कि स्वीण
टुटि पड़ी द्वियै ।

आब, यार पुछ्नईं-
पै मिं भाज्यूं किलै?
कि मिं सुन-चान्दिक
न है जन्यूं !
कि मिं,
मिं रै सकन्यूं।

म्येरि सुवा

म्येरि सुवा सौरास जै रै, कसी काटूं मिं टैमा ऽ।

ड्यान-काना घुघुती घुरै, मिकैं नि ऊन चैना ऽ।

तीन दीनों बै द्यो तौहड़ि रौ, नौव-चुपटौव भरीयां ।

सुरु-सुरू तू लै ऐजा, मिं तुकैं चैरीयां।।

तू और मिं जूंला बंण हुं, गोरु-बाछ ऽ चरूलौ।

गोरु-बाछ चरला जब , मिं तुकैं चै रूंलौ।।

स्यरौक गड़ ऽ मिं जोतुलौ ऽ, तु धरली बीना ऽ।

कच्यार में लोटि लफाई, हम कास देखीनां ।।

म्येरि सुवा ऽ ऐजा घर ऽ, मिकैं लागैंछ बांटुली ।

हर बखत ऽ यै सोचुंछ, म्येरि सुवा कसि होली ।।

मनसुब

मिं त्येरि
एक 'होइ' प्रारि
आपंणि ज्यूनि
करि द्यूंल-त्यार नौं
तु कौली ऽ
रोकि द्यूल-धर्ति
फोड़ि द्यूंल-अगाश
ख्येड़ि द्यूल-पताव
टोड़ि ल्यूंल-अगाश्याक त्यार.....
हौर त्यार
अणकस आंण क्यास सवाल...
आज हमूंकै ठीक ल्यागनी
आपंण-आपंण कूंण बात भलै
के बात नैं,
आज हमि न द्यखनयां
न समझनयां
असल बात भलै.....
पर, भो
यैं ऽ आंख्वर,
मकैं-म्यारै कई
ल्याल्ल न्यानतिन्योइ ज्यास
हौर तुकैं
यौ आपंणि ज्यूनिक
सबूं है भल बख्त सैद....।
पर, फिरि लै
आज
मिं ठाड़ छुं
आपंण 'यैं' क्वीड़ौं दिगाड़
हौर तु आपंणि 'नैं' क ट्याक!
बख्त बदलूं
इकनस्सै न रूंन कब्बै
हौर बख्त्याक दगै
नि बदलन कि-कि
हौर कि बदलि जां
हम द्यखुंल अघिल कै ।

स्वींणौक क्वीड़

ज्यूंण बख्त
त्वील कौछी सुवा....
हम मिंलुल स्वींणों में
कि कूं
त्यार सोरन में
आंखै न ल्यागण्याय ।
नींन कूंणै
स्वींणों थैं
खबरदार !
आब झन आया
मिं पटै गोयूं
झुठि कूंन-कूंनै,
अर स्वींण कूनईं
हमि निउजी गयां
झूठि द्यखंण-द्यखूंनै

फिर लै
ए रात
आंख्याक पुत्याव कसीकै
जरा मुनीं
त सब तिर नजिक
तु, त्यार क्वीड़, त्यर लाड़
और, आंख्याक पुत्याव
उघाड़ी ऽ
सबै तिर टाड़
तु लै,
बस, डाड़ !

स्वींणों ! ज्यागो मणीं
आऔ भिंपन
च्याऔ, खुटौं मुंणि
न उड़ो, मांथि-मांथी
लम्यूंण दिओ मिकैं
आपंणै हात ।

सितिल-कट्ठर

कतू सितिल हुं
बख्वत कैं द्यख्वंण
मनसुबन कैं सुणंण
पर भौत कट्ठर हुं
बख्वत कैं भोगंण-चितूंण,
मनसुबन कैं गुणंण ।

कतू सितिल हुं
स्वीण द्यख्वंण
कै थैं ह्यि लगूंण
कै कैं भल मानंण
पर भौत कट्ठर हुं
स्वीणन कैं अपण्यूंण
ह्यियौक उमाव फटूंण, बतूंण-
ह्यियैकि द्यास कूंण ।

कूंण्याक तैं आंख्यरै न मिलन
ग्यूवै में अटकि ज्यानीं
मूख्वै में हरै ज्यानीं
बन्द गिजौंल
सिरफ आंख्यौल, करण पणैं बात
बख्वत्याक कुंज लै
बरस है ज्यानीं
ह्याय्याक क्वीड़
ह्यियै में रै ज्यानीं
स्वीणै है ज्यानीं ।

कतू कट्ठर हुं
आंख्यौंकि भ्याष समझंण
ह्यियौक कुलबुलाट थांण
कै कैं बिसरूंण-भुलै दिंण
कतू सरल हुं
ह्याय्याक रिश्त ट्योंणंण
आपंणि दुनीं उजाणंण
छ्यर फोकंण ।

म्यर छौव

बेई रात
आपंण स्योव द्येखि
मिं निडर-
कैं हुं न डरणीं लै
डरि गोयूं ।
म्यर स्योव
म्यर छौव
मिं बै सोल हात लम
चार हात चौड़
नौ हात भिं तलि
नौ हात अगाश मलि
लाल ल्वे स्यूनी हात
लाल ल्वे च्वेड़ी दाँत
ल्वे में ई भिजाई झांकर
कतुकन कें खुटौंल च्यापी
स्याव में भैटी
कपाव में भैटाई राकस
क्व म्वस चुपड़ी मूंख
छ्र फोकी नंग आङ ।
मनख्योव कत्ती नें !
मिलौ तिरथांण में
आपणी खाड़ खंणणौछी
आपणै हाड़न्यैकि
च्वेरि करंणौछी
झुठि बलाणौछी
इज्जत लुटणौछी
आपंणै
घर कुणि फुकि
आग स्यकणौछी
मार-काट मचूणौछी
आपंणी चित्त में भैंटि
महल बणूणौछी
मिलौ शमशांण में।
मिं डरि गोयूं
बेई रात
आपंणै छौव द्येखि ।

उमीद

एक दिन
इक्र सांस लै ल्गि सकूं
न्ड़ि लै ह्रै सकैं
दिन छनै रात,
कब्बै न सकीणी
क्इ रात
लै है सकैं !
छ्यूल निमड़ि सकनी
जूंन जै सकैं
भितेर्यौक भितेरै ऽ
गोठ्यौक गोठै ऽ
भकार्यौक भकारूनै
स्यौक स्यै
उजड़ि सकूं
सारि दुनी रुकि सकैं
ज्यूनि निमड़ि सकैं
ज्यान जै सकैं,
पर एक चीज
जो कदिनै लै
न निमड़णिं चैंनि
जो रूंड़ चैं
हमेश्या जिन्दि
उ छू-उमीद
किलैकी-
जतू सांचि छु
रात हुंण
उतुकै सांचि छु
रात ब्यांण लै ।

हाइकू

(१)
आज्क नेता
'देखौ, देखुंल' कूंणी
ए अभिनेता ।

(२)
अन्यारि रात
इकल बटौव कैं
मैसोंकि डर ।

(३)
बंण बै बाग
शहर बै मैंस्योलि
हरै गे आज ।

(४)
गरीबौंक कैं
औतरण ब्ट लै
नि रैगो आब ।

(७)
गरीबौं ऽ खुसि
न्यान-न्यान, प्रेमा दि,
सेठौं ऽ डबल ।

(६)
पहाड़ा हाल
हाड़ै-हाड़ रै ग्येई
ज्यांन हरायीं ।

(७)
आपंण च्यल-
छिपिल, दुसरक
हुं हड़ जस ।

(८)
पर्या-दगड़ू
यार-भलि भट्यूणी

परदेस में ।

(९)
आदिम में छु
सबै तिर, पै इककै
मैस्योइ नहां ।

(१०)
गौं में चोरि
पुलिशौकि न्है हार
छु देशौ ऽ अंत ।

(११)
निपटियौक
गोपी बांमण जस
कानून हैगो ।

(१२)
राजनीति भै
सिसूंणक पात जसि
सुल्टि लै उल्टि ।

(१३)
सुकिल दिन
कावाक कपाव कैं
फोड़ि बै ऊनीं ।

(१४)
बाबुक खर्ची-
फर्ज, च्यालौक खर्ची-
बाबुक कर्ज ?

(१५)
जुल्फी पोशाक
खुस्याणि खुराक भै
आजौ ऽ मिजात ।

(१६)
मंत्री भै काल
नाइ-भ्यान हराय
फरूनै ऽ चौल ।

(१७)
ह्वेड़ बुद्धि नैं
कौंड़ औखत भय
आजा ऽ छ्वारन ।

(१८)
सीमान पारि
लड़ै हैरै जोरैकि
घर लुकी मिं।

(१९)
द्याप्त सब चां
स्वै हुंणि पेट किलै
लुकूंण भय ।

(२०)
गूंठ नैं मुट्ठि
फुरफुरै उठि भै
आजा ऽ मनखी ।

सब्बै अगाश हुं जांणईं

उसी त सब्बै, अगाश हुं जांणईं
पर किलै उं, जहाज कैं चांणई।
उ मुसि भ्याकुड़, जो फटकंण में रईं
पत्तै न चल कब, उड़ंण भुलि ग्येईं।
हिटंण बखत उड़ीं, आब उड़ंण बखत हिटणंईं
त उपनों चार, किलै तिड़कनईं?
हिम्मतै न्हैं, कि पांखै गइ ग्येईं
जि लै हो खुटां, मुनि टोपियै रै ग्येईं।
काम के न करि, बस स्वींड़ बुणनईं
आफ्फी ब्वांदी खुट खोलंण, दुसरों कैं चांणईं।
हरै गो तड़ी तरांड़, रै गो प्वापि परांड़
बिन के पकाइयै, लगड़-पु चांणईं।
जमान्वाक छ्न, कि मैसन्वाकै ऽ छ्न
भौत छ्न खुम, जो तलि हुंणि खैंचणई।
उड़ण चांणईं, उं ब्वादी-गोठ्याई च्वाड़
ठुङ मारि दगड़ै, पिंजर किलै न ल्हि उड़णईं।

लड़ैं

लड़ैं-

बे्ई तलक छी बिदेशियों दगै
आज छु पड़ोसियों दगै
भो हुं ह्वेलि घर भितेरियों दगै।

लड़ैं-

बे्ई तलक छी चुइ-धो्तिक लिजी
आज छु दाव-रे्टिक लिजी
भो हुं ह्वेलि लंगौटिक लिजी।

लड़ैं-

बे्ई तलक हुछी सामुणि बै
आज हुणै मांथि-मुणि बै
भो हुं ह्वेलि पुठ पिछाड़ि बै।

लड़ैं-

बे्ई तलक हुंछी तीर तल्वारौंल
आज हुणै तोप-मोर्टारौंल
भो हुं ह्वेलि परमाणु हथ्यारौंल।

लड़ैं-

बे्ई तलक छी राष्ट्रत्वैकि
आज छु व्यक्तित्वैकि
भो हुं ह्वेलि अस्तित्वैकि।

मिं तुमर पहाड़ छुं

मिं तुमर पहाड़ छुं
आ्ब त हाड़ै-हाड़ छुं
मि कै भुलि जया झन,
मिं कै बचै धरिया बस
मिं तुमर परांण छुं
मिं तुमर पहाड़ छुं।

मि जा तुमि लै उच्च बणो
काम तुमि लै सच्च करो
हिटते रूंण छु सदा अघिल
तड़ि में जब तलक तरांण छु
मिं तुमर पहाड़ छु ।

हिटो-हिटो, अघिल बणो
औरों कै लै दगड़ धरो
क्ान में धरंण छु देश्ौक ब्वझ
अद्बा्ट में नैं पटांण छु
मिं तुमर पहाड़ छुं।

फजंण छु उ उच्च ड्ान तिर
श्ाान्ति-तरक्कीक उ छ्ान तिर
जां सबूं हुं ह्वल भल ख्वांण-लगूंण
जां न कै हुं कस्सी डाड़ छु
मिं तुमर पहाड़ छुं।

न्है गे फरांणि बिसूं सदी
ऐ गे नई इकाईसूं सदी
नईं स्वीण, नईं फङ फुट्ाल
मंजिल न आ्ब टाड़ छु
मिं तुमर पहाड़ छुं।

मिं भलै हाड़ै हाड़ छुं
फिर लै भली भैं ठाड़ छुं
श्ाु(हौ-पांणिकि ख्वांण छुं
सुन-चान्दिक पख्वांण छुं
मिं तुमर पहाड़ छु।

सैद

जब लै मिं
करूं टाड़ नजर मणीं
नजरिक नजिक लागि जां जाव जस
उलइ जैं मुनइ,
द्येख्यूं
अन्धेर, हर तरफ अन्धेर
अन्यार, जां चाओ वां अन्यार
भीड़, हर तरफ अत्ती भीड़
किरमइयौंकि जसि बर्यात
जां चाओ वैं मैंस
अघ्याड़ि मैंस, पिछ्याड़ि मैंस
खुटौंक मुणि च्यापीणी मैंस ऽ
ख्वार में भैटी मैंस ऽ
अन्धेरै मैंस-ह्योलधार
अस्पताल में देखो सब्बै बीमार
खेलाक मैदान में सब्बै चंग
जेल में देखो सब्बै चोर
मंदिर में सब्बै धर्मात्मा
और तिर्थाण में सब्बै विरक्त...
हर तरफ निमखंणै मैंस
कुकुरा जा छौंण
करन मरा-मार, कटा-काट
ल्वेयोव, खुन्योव
खूनैकि बास हर उज्यांणि
जां चाओ वां लाल पट्ट
कै कै मूंख में सिरी ऽ नैं
मूंख लालै, आंख लालै
दिन, रात्ती, ब्याव लालै
धर्ति-अगाश-पताव लै लालै
सब रीसैल तमतमाई,
म्यार आंख लै लाल है जानीं
द्यखन-द्यखनै,
मिं डरि जांनूं
टाड़ द्यखणै छ्वेड़ि दिनूं
आंख बुजि लिहनूं।

पर, कि म्यार आंख बुजि लिहंण है
यो लाल पट्ट-यो खुन्योव
थामी जालौ?

यो खून-डरि जा्लौ?
नैं.....कत्तई नैं
घाम न न्है जा्न-आ्ंख बुजणै्ल
बस अन्यार है सकूं
तौ, के करणै पड़ल
आपंण 'खूनैकि'
खे्ड़ा-खेड़, फो्का-फोक
जनसंख्या
थामि बेर
सैद यो खुन्योव
कम है जा्ओ
सैद, उ पैलियै बै ठा्नी
चलक
मणीं पछां उज्याणि
खसकि जा्ओ
'एक दगड़ू, एक ना्नाक'
उ घर-थान में
सैद, जो शान्ति
हम चानूं हमूंकै मिलौ
सैद.....!

खेल खेलनूं

आओ, खेल खेलनूं
मिं त्यार पुठ में चढुंल
तु वीक फठ में चढ़
मिं तुकैं घुरयूंल
तु उकैं घुर्या
ए दुसरौक ख्वर फोड़नूं
आओ, खेल खेलनूं।

जो बगिच हमूंल बज्यै रौछी
वां उनूंल सुनक घड़ निकाइ हालौ
जि हमुंल ह्यव समझि अग्यै ह्यलछी
उ उनूंल सोद्यै समाइ हालौ
आपंणि टेड़ि दीठि उनूं पारि धरनूं
उन्यर भिनेरैल उनरै भितेर अग्यूनूं
आओ, खेल खेलनूं।

तु म्येरि दगड़ू, पर रिसाई साथी
वां बै कौ 'कबडि-कबड्डी'
ध्वाख दे उकैं-जिता मकैं।
हमि बणुंल राज-राणि
उकैं द्यखूंल घुत्ती
उ सांच खेल खेलू, वी ऽ भल
हमि झुठि खेलनू, हमि'ई ऽ नाक
पर जरा टेड़ि कर दीठि
य गाड़ हमर, य भिड़ हमर
य मैदान हमर, मैदान बणूंणी हमर
हमि छां पुरांण्, उ छू नईं
फिकर नि कर, पधान लै छू आंपण
उं कां-कां बै सरकि-सरकि बेर ऐ रयीं
हमि घुरी-घुरी बेर लै ख्वम लम्यूनूं
आओ, खेल खेलनूं।

आओ, खेलनूं राजनीतिक खेल
तु सरकार बै समर्थन वापिस लिह ले
म्येरि सरकार बणै दे
हमि करूंल साचिकि कुकरगत
फांचि कि चिन्ता
समावूंल आपणि-आपणि
मरौ आफी जन्ता

साल-साल में चुनाव करूंल
तु क्वे नई 'दल' बंणै लिये
मिं क्वे नई 'दलदल/मोर्च' बणूंल
देश डुबौ भलै गरीबीकि गड़ में
गरीबीकि ज्वाग गरीबौं कैं काटि
उनर तेल पेरनूं
आ्ओ, खेल खे्लनूं।

ए बणूनूं 'च्यस'
कैं स्यत-कैं म्वस, करूंल म्यस
राम-रहीम-नानक-ईशु
सबूकैं अलग-अलग पछ्यिल कैं खैचुंल
कै कैं ए लाप, कैं कैं बांकि लाप
कै कैं ए दिश, कै कैं और दिश
हौर कबीर ज्वास न्वाक द्वि-द्वि
कै कै तीन, कै-कै चार लै
खपिर करि खेलुंल 'जु'
देखुंल 'धुं'
हौर देशौक 'बोट' लगूनूं
आ्ओ, खेल खेलनूं।

आ्ओ खे्लनूं इस्कूलक खेल
च्वाहे क्वे दर्जैकि हो अर्जी
जै कैं जो दर्ज में धरनूं-हमैरि मर्जी
इस्कूल में न पढ़ूंणौक हमूकैं मर्ज
ट्यूशन पढ़ूंण हमर फर्ज
जो ट्यूशन पढ़ल उकैं पास, दुसारन फेल करनूं
आ्ओ, खेल खेलनूं।

आ्ओ खेलनूं पुलिसौक खेल
जकैं पकड़ि ल्हिनूं-उ चोर
न पकड़ी जानौ-उ मोर
पैंस व्वालनैकि स्खेल बणनूं
गरीबन कैं जेल खितनूं
आ्ओ, खेल खेलनूं।

आ्ओ खेलनूं दोस्तीक खेल
दोस्ती कैं ब्यौपार बणूनूं
मैंसन कै दोस्त बंणै लुटनूं
आपंणि भूक-तीस निमूनूं
गरीब दोस्तौंक ख्वार डेल फो्ड़नूं

अमीरों दिगाड़ मेल करनूं
आओ, खेल खेलनूं।

बस, खेल न खेलना-क्रिकेट
हाकी फुटबाल या कबड्डी
या वबे लै खेल!
हारण-जितणौक फिल्ड है भ्यैर
दांव लगूनूं, डबल कमूनूं
विज्ञापनन् में रोल करनूं
खेलाक भेल करनूं
आओ, खेल खेलनूं।

महानगर में

आपंणि टैम-बिटैम, ख्वांणि-निख्वांणि
ख्व्येड़ी लफाई ज्यास
ट्याड़-ब्याङ
म्वाट-पत्याव
भारत, पाकिस्तान-आस्ट्रेलियाक नवश ज्यास
कुकुर खितड़ी
र्‌वाट्याक कन्तर
दौड़न-दौड़नै
तैयार हुनै, कि-
डीजल-ग्रीस-मोब्लैल में स्यानी
ध्व्येई-अणध्वेई हातौंल-ब्यासि ख्यानैं, मिकैं
घर्‌याक श्येरुवै ऽ फाम ऐ जैं
नरै लागंण फैजैं
श्येरू-म्यर कुकुर!

पैदल हिटंण-
औरौंकि को् कओ
रिक्श-सायकिल व्याल लै
समझनीं आपूं कैं 'र्‌याजैकि सव्यारि'
'हिट-हिट' न कूंन
'हट बे्, हट्-हट्' कूनीं।

सह्‌र, आ्सर-
यार-दोस्त, इष्ट-मितुर, मितरामी
दिनी-नौदिनीं, बारदिनीं बिरादर, सब्बै पर्या
क्वे द्वि दिन्यांक ठौर-ठिक्यांण लै नैं।
अगाश में खुट
उपन ज्या तिड़ी
मड़ुवा ब्याल्ड़ ज्या छितरी..।

ग्याड़ि में ऊंण-जांण,
ए हात कत्थप, दुहर कत्थप
ए खुट अगाश में
दुहर अत्याण लगै
कसीकै भिं में
ज्यांणि कतू खुटौंल च्यापी
सांस लिहंण हुं हौ-
साजि त-स्वीण द्‌यखंण
ब्यासि, गरम, गनैंन

पश्यणै बास अलग
भीड़ औरीं
औसांण ल्यूंलू
चूख जस निचोड़ी ज्यूंलू
आङ च्यापी रूं
चार नैं-छ्यौ दिशन बै मैंसौल
जसी शेरू च्यापी रूं
घुम्तू कुकरौल !

फैक्ट्री में
हर बखत-नड़क
'कम इन, ग्यट आउट'
यू-यू, हड़ि-हड़ि
इथ आ, उथ जा
पर-पर रौ
फिरि लै-
कुकुरै चार लुर कै हात जोड़ियै
दीन भरि काम में फतोड़ियै
घट्क फितौड़ ज ऽ
नांचणै में
पिरेमा द्वि आंखर कब्बै नै
हर बखत-तैयार सब्बै
बुकै ख्वांण्क तैं!

बांकि कि कूं
बांकि सब ठीक छुं
पर कूंण में कूंण ऐ जां
कि कूं-
स्यैप बड़ंण हुं
यां महानगर में
आछ्यूं-ज्यूनि कुकुरी गे
वी ऽ घरक
शेरू कुकुरै.....।

कां है रै दौड़

कां है रै दौड़
भलि छै कुशल बात.....न्यून-तिन
अयांण-सयांण.....धिनाइ-पांणि
घर-दौड़, भितर-भ्यार
बंण-जङ्व, ह्यव-पांणि
ढोर-डंगर, फसल-पाति
बुति-धांणि....
आब कि फच्छ्य
कक्कै छु पत्त
बस छु दौड़
कां हुं ? न्है पत्त।

सब भ्याजणई-पड़ि रै भजा भाज
निकइ रौ गाज
करंण में छ्न सिंट्वेइ-सिंगार
अगी रौ भितर-भ्यार
क्वे आपूं ज कै कैं न वितूंणय
क्वे मैंस कैं क्वे मैंस न मिलणंय
क्वे ज्यून कैं क्वे ज्यून न मिलणंय
क्वे सच्च कैं क्वे सच्च न मिलणंय
क्वे हिन्दुस्तानि कैं क्वे हिन्दुस्त्यानि न मिलणंय
क्वे पह्यड़ि कैं क्वे पह्यड़ि न मिलणंय

फिर उं सयांण कूणीं आपूं कैं (?)
छ्यर फ्वेकि
ढुंढणई मुक्ति-शान्ति.....
जां न ज्यूनि छु
न मैंस....न सच्चाइ....न मौतै ऽ
जां जि छु, कि न्है
क्वे कै सकूं फर भरौस्यैल
कि मिल्यौल वां
छ्यर, सिफर अलावा और के ?
पर छ्यर सिफर है लै ठुलि
ल ह्वैलि'ई क्वे शान्ति, मुक्ति
वी तैं न ह्वैली क्वे दौड़
सन्तोष है महासन्तोष
शान्ति है निः श्वास शान्ति
मुक्ति है महामुक्ति?

मुख्याव त्यापो

ओ रे देशाक नौजवानों, हात बटी हात मिलाओ।
धर्ति पारि जो ब्वझ बणि रौ, उकैं घटाओ, काम लगाओ।
आज तुमूकै बखत धत्यूंणौ, हात-हात में मुख्याव थापो
दुश्मणौंक लिजी इकबटी जाओ, आपंण हातौंकि ताकत नापो।
आज फिरि बणि जाओ 'राम', और राकस काव मारो
जामवन्तौक जस ज्ञान बांनो, हनुमन्तैकि जसि उछ्याव मारो।
आज बखत फिरि दुहराई जांणौ, आजादीकि फिरि माव जापो
हम सब छां पैली हिन्दुस्तानी, हर दिल में य गीत थापो।
हम को छां, हमैरि पछ्यांण के छू, हर बखत यैक धियान धरो
देशैकि भलाइ पैल काम, वीक पछ्यि हर काम करो।
दुश्मणौंक फंड़ तो उठंण-चांणौ, उकैं पकड़ि-निचोड़ि च्यापो।
देश में ब्वे दियो शान्तिक कल्पवृक्ष, फिरि पिरेमौंक मुख्याव त्यापो।

ज्यूंनि

त्वील कौछी-आंस और, डाड़ छु ज्यूंनि
डाड़ भुलै, हंसि बेर जांणौ, खुसिकि गाड़ छु ज्यूंनि।
यौ अनौख दुनी कैं, जांणणैकि कोशिश में
सुख-दुख गछ्याई, ज्यौड़ छु ज्यूंनि।
क्ये ढुंढन-क्ये हेरंण लम्ब बाट में
कबखतै ख्यलणीं, कबखतै ख्यलूंणी
एक अनौख, खिलौंण छु ज्यूंनि।
कबखतै भारि-कि उठि न सकन
कबखतै हवू-जांणी ह्याव जसि
कबखतै मरी जतियक दौंड़ जसि
हर बखत फेरीणीं, घटक फितौड़ छु ज्यूंनि।
उकाव कती-हुलार कती
उच्च डान-निच्च कन्हाव
सैंण बाट, साऊंण पंजाव
चिफाव सिमार बाट में लै, दौड़ छु ज्यूंनि।

नौ में कि धरि राखौ

नौं में कि धरि राखौ
के लै है सकूं म्यर नौं
क्वे चनर, क्वे सीङ
क्वे राम, क्वे खान
कि क्वे लै जान
क्वे लै है सकूं म्यर धरम
क्वे लै जात
क्वे लै इल्याक क्वे लै ज्याग
क्वे देश, क्वे भेष
क्वे द्वीप, महाद्वीप, प्रायद्वीप
ग्रह, उपग्रह
है सकूं म्यर जनम गौं
वीक नौं में लै
कि धरि राखौ
कैं लै है सकूं मैंल ज्यांण
के लै करंण
जरूरी है सकूं-कैं लै फजांण

पर मिं पुजुंल वा हुन्तै
चुल्याक् गल्यूटन बै नै हिटि द्यूल सिद्दै
बिन सिवाइयै, तात्तै
ख्यालि खुटन न पठ्यै द्यूंल इकलै सुद्दै
कि हातन कैं रित्तै
श्यान करंण बाट
म्यर आङ, आंङक एक-एक बात-झूस
नङ, मिं पारि भैटी जुं-किन
म्यर मन
म्यार पुर स्वीण
पुरि हंसि-फरि डाड़ लै
पुरि ज्यूनि-मौत लै पुरी
सब ज्याल दगड़ै आफी-आफफी
पुरि बर्‌यात-
म्यर नौं, गौं, इल्याक, ज्याग, ठौर
देश, भेष
द्वीप, महाद्वीप, प्रायद्वीप
ग्रह, उपग्रह
म्येरि पुरि पछ्यांण, चिनांण, लच्छंण
के लै लुकूल नैं
के लुकि लै कां सकूं
इज्याक थान में।

ग्वड़िकि रोड

म्यर गौं
ग्वड़िकि रोड बै
छी पांच-छै मैल
अर ध्वड़ी खड़ंज बै लै
मैल भरि टाड़
अर साऊंण पांजव लै
गौंक कुड़न बै टाड़ै ऽ
पर गौं में रूंछी-शान्ति, पिरेम
मनक सन्तोष
के लै करणैकि आजादी
फल-फूलनैकि इफरात
न्यनै सई-
हरिया-पिंङ्वा ग्वड़,
भरीं भकार, अर
साफ, म्यंछ द्येखीणी गाड़,
छ्वां-छ्वा करणीं घर
छीड़, करणीं छूंछाट
ठंडि, हऊ हौंक सूंसाट
कफू, घुघुतिक घूं-घूं-घूंराट
न्योलि, इज्वड़, चांचरि
रोजै त्यार, रोजै म्याल
और लै, जांणि के-के.....।

पर, आब
के न्हां
सब तिर खैगे रोड
जि बचछी
स्यरि लिह न्है ग्येईं
ग्वड़ि-ठ्याल
कुड़ौंक भितर
कुंड़-करयाणि तलक
हरैगे आजादी
भ्याजि ग्येईं शान्ति-पिरेम दगड़ै
काँ ग्येईं? ककैं छु पत्त

बचि रै
त सिरफ रोड
जै तैं
ज्यांणि कतू

आन्दोलन, धरना, तोड़-फोड़
करौ त्याग
के हुं? किलै?
'विकासाक लिजी'
यै छु बिकासै?
कि क्वे कोड़।

गाड़ ऐ रै

ओ उच्च अगाश में भैटी त्यारो ऽ
मणी मुंणि हुणि त च्ओ !
बचै ल्हिओ म्यार घर कैं
वां गाड़ ऐ रै।
हर तरफ बगणौ गरम प्यांणि
खून कूंछी-जकैं मैंस
मलि जिहाज में उड़ि
सरकार चुनाव्कै निसांण ल्यै रै।
मिं लै जै ऊंछी मणी,
सुणि ऊंछी वीक हवाइ स्वींण
कि करूं म्यर नौं कै बेर
उ इतू टाड़ बै ऐ रै।
म्यार गिजन हासिल न्हैं हंसि
चलो के बात नै
यां तौ सबूकैं लिजी
आंसन्कि यैसि गाड़ ऐ रै।
म्यार गौं लै ऊंछी सौंण
झुलछी झुल भै-बैंणी
अफसोस आब न लाग्ल
पैलियै यैसि डाड़ ऐ रै।
समेरि ह्ली मैंल लै
आपंण समान, छ्र और म्ट
पर भ्जूं त कॉ भाजूं
मैंस कूनईं-भ्जो बाड़ ऐ रै।

उ ब्वाट ल्वगि गो

भोट्यैकि छुट्टि में,
उ जांणौ घर
भोट दिंण हुं नैं
भ्वटंण हुं घरवालन,
सोचणौ-
रोजै होते रूंन भोट
एक छुट्टि त मिलैं
समझदार छु उ ।

उ छु समझदार
उ भोट न दिंन
जो हुंनीं समझदार
उं भोट न दिंन
'भोट मांगणी सब्बै
इकनस्सै
इक्कै खाड़ाक भुड़-पिनाउ
ढपोली सब्बै
मन सबूंकै उधरी कुड़
द्वगिल सब्बै'
उ यै समझूं
समझदार छु उ।

क्वे समझदार
न दिंणय भोट
जो दिणयीं भोट
छ्न कमअकली
अनपढ़-गंवाड़ि-ध्यूमण (?)
पड़ि ग्येईं उकैं सोच-
जो यै छु सांचि त ऽ
क कैं, क्वस कैं
द्याल यं भोट?
को जित्यौल?
कैं कि बणैलि सरकार?
वीलि सोचि ह्वलौ
उ ब्वाट लागि गो
भोट दिंण हुं।

कारगिल हुं

आज-द्वि जून नियानबे,
हल्द्वाणिकि सड़कों में है रै
औरीं भीड़-
ठ्यालौंकि।
बेइ'यै ऽ पोरूं
हम्रा कुमूंक ए सपूत
'मेजर राजेश अधिकारी'
है रौ शहीद!
नेरूं
'कमाण्डो कैलाश रौतेला'
लै भौ शहीद /
पै आज तं ठ्याल
ज्वानौंल ठसाठस भरींणी
फिरि वैं?.....कारगिल हुं !
क्वे डर-क्वे भय नैं
निझरक-बेफिकर
है बेर
मातृभूमिक तैं
बलिदान दिंण हुं।
.....जै गोल्लज्यू, जै गंगनाथ
जै नौलिंग ज्यू.....
तनूं पारि स्यौ करिया।

कवित्त, म्यर कवित्त
आजि फरी नि रै
मिं जैकार करूंल तनैरि
जोश द्यवूं.....ल तनूकैं
.....ऐगे खबर.....
नैन्तालौक इन्द्र, मोहन, महेश....
अल्माड़ौक प्रताप, दिनेश, हरीश.....
बागिश्यरौक रमेश, बिशन, भूपेन्द्र.....
पिथौरागढ़ौक जवाहर, उर्वा, केवला.....
.....और लै जांणि कतुकनैकि
अदपुरि ज्यान पुरी गे।
बस, उन्नर बहादुरिक किस्स रै ग्येईं।

जब शरीफ-शरीफ नि रय
उं अटल रयीं
मुनि टोर नि करि

बरकि ग्येईं आफ्फी
बा्करों चार
भारत माताक मन्दिर में
गोइ-खाईं, ग्वा्ल खा्ईं
छाति में
पुठ में नैं
शहीद है ग्येईं ।

मि ए कवि
सोचंछी, भाट-चारण बणूंल
कि कूं-
हिम्मतै नि हूंणइ के कूंणैकि
सिरफ श्रद्धांजलि
सिरफ-द्वि फूल
उन्ा्र खुटौं में।

ऐन बलांण

मांछर थैं-

माछरा ! यो मैंस है त्वी निक् छै
कम है कम
सुरू-सुरू कै
कै कै पुठ में
दांतिक त न लंगूनै।

स्याप थैं-

स्यापा !
तु लै मैंस है निकै छै
तु कै कैं सुद्दै
बिन गिज्याइयै त न डसनै।
फिर
त्यार डसियौक
मन्तर त मिलि जां ।

काॅन थैं-

काॅना !
यो मैंस है त ऽ त्वी निक् छै
तु कम है कम
बुड़ंण में
आपंण-पर्या त न सोचनै।

बाघ थैं-

बाघा !
यो मैंस है
तु लै निक् छै
कम है कम तु
दुहारनै कमै त न हत्यूनै ।

भूत-पिशाचन थैं-

भूत-पिशाचो !
यो मैंस है तुमि'ई निक् छा
कम है कम

आपंण गौं-गाड़ छोड़ि तुमि
मावन हुणि त न भ्याजना ।

मैंस थैं-

मैंसा !
सबन है नक् छै तु
कि है गो तु कैं?
तु किलै तिड़ी रौ छै?
उछ्याव मारि
अगाश पुजंण चां छै
तब लै
उड्यारनै ट्वली रौ छै
प्रेतन है लै
पलतरफ पुजि गो छै ।

करम

"परमेश्वरा !
त्वी बता-
जब त्वी छै-
पैद करणीं,
खवूंणी, पोषणी'
हम्रा भितर
न्हाक या भ्हाल
विचार पैद करणीं
तब उ बखतै
किलै न मारनै
एक कन्तोव
जबखत बुलाणीं
कुबात हम्रा थोव
जबखत
ल्हागनूं हम कुब्हाट
किलै न उठनि तुकै
उ बखतै चमक?"
पुछ्णौछ्यू द्याप्तन
चमकी बिजुरि
भै चमक
क्वे ऽ भ्यार बै...(?)
नैं, भितर बै सैद....
पुछ्ण भैटौ-
'को छु परमेश्वर'
ब्रह्मा? विष्णु? महेश?
नैं.....नैं....
परमेश्वर छु श्रद्धा.....
अर विश्वास
जो वी है जैं कम
त ऽ घटि जैं आफ्फी
तागत
परमेश्वरैकि लै,
फिरि कूंण भैटौ-
करम भै तुमर धरम
अर फल दिंण म्यर
काम भै प्यार, नि भै चाम
न मिलन राम, बिन करियै काम
न सेकि सकन
क्वे दुसरक घाम

मिं न्हैत्यू
न खवूणी-न पोषणी
न बिचार पैद करणी
न मारणी
करम भै ठुल!
फिरि मिं कसी भयूं
सजा दिंणी लै
करमै ऽ दिनी सजा लै
-मजा लै
करमै ऽ भै परमेश्वर ।

इन्टरभ्यू में

इन्टरभ्यू में
पुछी गेई मिं हुं
'म्यार भ्याल गुण!'
कि कूं के समझै में नि आय
'सच्च, ईमानदार
बखत्यौक पाबन्द.....'
कि बतूं ऽ-या नैं ऽ
बखत्याक बदली ढ्याव द्येखि
के कूंणै नि आय ।
"जनूथैं कूंछी गुण
है ग्येई दुर्गुण
अर भ्याल गुण त्याल
'गुंणी' नैं
है ग्येई 'भालु', 'गुंणि',
'पुरांण', 'आदिम'
दुर्गुणि है ग्येई 'गुंणी'
गुंण है ग्येई 'रोग-कोढ़'
यौ कूंछी म्यार दगड़ू
अर कूंछी मिं हुं लै गुंणि' ई
अर ढील-ढीलै
मिं लै कूंण भै गोछ्यूं
इनूकै आपणि बिमारि' ई ।
पर,
पत्त नैं कसिक
"मिं छुं सच्च, ईमानदार
बखत्यौक पाबन्द....."
यै जबाब द्यौ मैंल
हौर छांटी लै गोयूं
इंटरभ्यू में
कि भै यैक मल्लब
के समझै में नि ऊनय ।

बुड़ बोट

मिं बुड़ बोट
म्यर जिगर किलै आज ?
कि कूंणई-खुसू-खुस
करनईं जुगुत सैद
मकैं गिनूंण हुं
बनूंणई पिलान सैद
पह्यूणईं बन्काट
बड़्याठ !

ज्यूनि भर लै लुछ्नै रईं
पात-पतेल, क्याड़-म्याड़
ह्याङ-फ्याङ,
हौर जि मैंल
तनूकैं प्यावणा तैं
रूड़-अरड़, ह्यूं-पांणि सै
ज्याड़ौं बै बगणी म्यंट कैं थै
आपंणि ज्याग में अड़ि,
आपंड़ ज्याड़न में ठड़ी बेर
शुद्ध हौ-प्याणि द्ये

पर, आब
ओ्छै ग्येईं म्यार दिन सैद
पात झड़ि,
ह्याङ सुकि ग्येईं
जब तलक छी आङ में दम
न द्याबि सक
अगाश लै हमूकैं
आ्ब जब दमै निकइ गो
द्याबि सकैं धर्ति लै
तौ किड़...पिटङ ज्यास
बुसिल मैंस लै
भतकै सकनीं
द ऽ हो ऽ !
हैंगे खुरि-तुरि
ह्वेलि आ्ब झर फर
कय्ल म्यर सराद
सुणीण ल्यागि ग्येईं बात
ख्यल्याल 'जु'
लगाल म्यार नौंक 'बोट'

बंणाल एति 'पार्क'
लगाल संगमरमरैकि
नंगि स्यौणिकि मूर्ति
ख्वारून पांणिक फब्बार लगै
फिर नवाल उकैं
ह्य, बड़ि बान
रंभा, उर्वशी, मेनका....कौल
संस्कृति, कला में नौं धर्‌ाल
शहर कैं छजाल।

मिं के लै नैं

मिं ए आम आदिम
यै है बांकि,
....के नैं,
मिं के लै नैं ।
म्यार स्वीण के नैं
म्यार क्वीड़ के नैं
म्येरि पीड़ के नैं
पर म्येरि घीण करनीं सब्बै।
किलैकी-
मि ए आम आदिम
यै है बांकि.....के नैं,
मिं के लै नैं ।
म्यार गीत के नैं
म्यार रीत के नैं
म्येरि प्रीत के नैं
म्येरि जीत न हुनि कब्बै।
किलैकी-
मि ए आम आदिम
यै है बांकि.....के नैं,
मिं के लै नैं ।
म्यार हाड़ के नैं
म्यर लाड़ के नैं
म्येरि डाड़ के नैं
मिं हुं खाड़ खोदीनीं तब्बै।
किलैकी-
मि ए आम आदिम
यै है बांकि.....के नैं,
मिं के लै नैं ।
म्येरि अकल के नैं
म्येरि शक्ल के नैं
म्यर बल के नैं
मिं जस पगल नि मिलन जब्बै।
किलैकी-
मि ए आम आदिम
यै है बांकि.....के नैं,
मिं के लै नैं ।
म्यर कई के नैं
म्यर सई के नैं
म्येरि इज्जत के नैं

म्येरि किस्मत के नैं
म्यर के फरक नैं
म्यर के झरक नैं
मिं मैं गुण एक नैं-दुर्गुण नब्बै।
किलैकी-
मि ए आम आदिम
यै है बांकि.....के नैं,
मिं के लै नैं ।
म्यर नौं है सकूं के लै
म्यर गौं है सकूं कैं लै
सकींण लागि गे म्येरि लौ लै
बंणि गे ए घौ म्येरि ज्यूनि हुत्तै।
किलैकी-
मि ए आम आदिम
यै है बांकि.....के नैं,
मिं के लै नैं ।
क्वे कै दियो वी 'हाथ' म्यार दिगाड़ि
क्वे थमै दियो म्यार हात में 'फूल'
क्वे बंणै दियो म्येरि नौकि' ई 'पार्टी'
उनूं छोड़ि, होलि म्येरि भलिआम कब्बै ?
किलैकि,
मिं ए आम आदिम
यै है बांकि ने नैं.....।

म्यर कुड़

म्यर कुड़
यौ खन्यर
य नि छी यस्सै
चार-पांच पीढ़ि पैली,
सबूंहै भल
तिपुरी महल
सुनक चड़
धनक घड़ छी।
सारि दुनि में
सात समन्दर पार लै
यैकि हाम छी
हंसि-खुसि छी
हर दिश
सुखी-सुक्यार छी सब
बे फिकर छी आपंण
सात पीढ़िनाक् तैं,
उनार भ्याल भविष्याक तैं
पर आज
यौ खन्यर बचि रौ मिं हुं
उ तिपुरी महलक।
मिं जांणू-यौ लै नि बचल
म्यार न्यानतिनों हुं
जो नि करि मैल
यैकि सज-समाव
आइ लै।

भरौस

अन्यार हैरौ ऐल, मिं म्यनिं ल्यूं तुमरि बात
पर फिर ह्वल उज्यॉव, मकैं भरौस छु ।१।

खाल्लि 'द्यखौ', 'द्यखुंल' कूंणी, द्यखाल के करि बेर
बक्तर्याट छ्वेड़ि ह्वाल छ्यॉव, मकैं भरौस छु ।२।

क्यॉव करि, पैंरि स्यत, स्वांग रचि जो छ्यॉ पधान
ह्वल उनर मूंख क्यॉव, मकैं भरौस छु ।३।

दूसर्याक घर-कुड़ अन्यूणी, समझ्याल सबूकैं आपंण
कर्याल देश्यैकै साज-समाव, मकैं भरौस छु ।४।

निरपटै ट्वली भ्याजणी भाज्याल नैं भबर्योव में
चाल सब अन्ह्याव-कन्ह्याव, मकैं भरौस छु ।५।

जनम कांणौक लै खुलनीं आंख, ए बारि त टुटैं नींन
बदईनीं थिक्याव-ऊनीं म्याव, मकैं भरौस छु ।६।

दिन छ्नै है सकूं अन्यार, पड़ि सकैं रात लै
हात में थाम्याल मुछ्याव, मकैं भरौस छु ।७।

ल्यागि रौ हौल झुटिक, सांचिक आंखन जाव
खराल छींक बादव, मकैं भरौस छु ।८।

कॉं ज्यालि हंसि? अर किलै? मूंख छ्नैं ऐ मिलैलि
ज्यांण न पड़ल सुद्याव, मकैं भरौस छु ।९।

बेई रात

आब मिकैं पुर विश्वास छु
रामराज ऊंणी छु।
बेई रात
लंका में
ए रावण मंदिर में
रावणौक औतार भौ बल
रावणैकि आत्मा वां बै
भौत जाग गे बल
भारत लै ऐ बल
दुनियैकि हालत द्येखि उकैं
रुवे ऐ गे बल
अस्यंण-पस्यंण है बेर
सरग चांण लागी बल
राम कैं धत्यूंण लागी बल
"रामज्यू ! द्यखणाछा य अजुगुति कैं
.....कि हैगो तुमार देश कैं
.....अगर यौ सब ठीक छु
त किलै मुचा ऽ मिकैं
कि करौ रावणैल अलगै ऽ ?
वीकि बैणिकि नाक काटी गे
तब चोरी वील सीता
सीता.....तुमैरि स्यैंणि (?)
उ लै कि छी कोशिश में
झुठ जाव
रचि बेर भजा उकैं
स्वयंबर बै
नतर, आपंण आराध्य शिबज्यूक
कैलाश कैं हल्कूंणी
न टोड़ि सकनै उ धनुष कैं?

वीकि लंकैकि तिर दुश्मंण आओ
उकैं भषम करि जाओ
वीक धरम देश बचूणौक नि भयौ
फिरि लै
तुमूल उकैं मारौ ।

पर यां त ऽ
.....देश बेची जांणौ
घर भितर पांजी दुश्मणन

लगड़-पु खवाई जांणौ
कैकी बैणिक ववे नांक काटणौ
कैकी स्यैंणि ववे भजूंणौ....।

फिरि लै,
कि तुमि चुप रौला ?
रावण मरि गो
पर वीक वंशज
कि तुम्रा हात मुक्ति नि पाला...?
राम ज्यूल बचन, देई बल
रघुकुल्याक बचन !
ऊंल मैं द्वि-चार दिनन में
ल्यूंल औतार, करूंल उद्धार
बचूंल देश कैं
स्थापित करूँल फिरि 'रामराज'

बाग ऐगो

बेफिकर-निझरक है बेर
नि रओ
घ्वाड़ बेचियैकि जसि नींन में
न सिओ.....
बाग ऐगो !

.....द्वार-म्वाव उघाड़ि बेर धरो
आंख-कान खोलि बेर धरो....।
अतर-
कसी पत्त चलल-उ
.....कब ऊं
कसी ऊं
कि करूं
कसी करूं.....।
द्वार ढकि बेर लुकिया झन
बागा ऽ अघिल झुकिया झन
नतर-
तुमूकैं डरान चितै बेर
उ है जाल शेर
चिरि-फाड़ि कचुनि बेर
खै जाल हुत्तै
भली भैं चाओ धैं-
उ इकलू बानर
हौर हमि इतू सगर
ए दुसरैक हात साेरो
बाग कि सब काव मारो ।

पहाड़क हाड़

मिं पहाड़
मिं तुम्हार पुरुखनौक परांण
खबरदार !
मिकैं वचे आब पहाड़ झन कया
मिं हाड़ै-हाड़ रै गोयूं,
फिरि लै
मिं ठाड़ छुं
तुम्हार सीमान पारि
दुश्मणौक सामुणि
लुवौक फाव जस।
भगीरथ जस
तुमूकैं छाव करणा लिजी
आपंण पात-पतेल हलकै बेर
तुम्हार दगै हंसनूं
तुमूकैं पिंण हुं पाणि मिलौल कै
आपूं ह्यूंल फुतफुत है जनूं
किलैकी-
तुमैरि पीड़
तुमैरि एक डाड़
म्यार ड्यान-कानौं में फ्येरी-फ्येरी बेर
जांणि कतू फ्यार
सुणीते रूं
तुमर एक आंस
म्यार छीड़नौक सूंसाट बणि जां।
पर अफसोस !
आब ज्यादे दिन
नि करि सकुंल
मिं तुमैरि फाम
मिं हाड़ै-हाड़ रै गोयूं ।

दूदक रीण

तिरथांण में
ख्वर ख्वेरि
ठड़ी बेर
म्येरि धात-
"ओ इजा ऽ ऽ !
किलै छ्वेड़ि ग्येछी मकैं
किलै दिगाड़ै ल्हिणांण
भुलि ग्येछी मकैं....."
पत्त नैं
इज तलक पुजी ऽ, न पुज ?
फिरि दस दिन तलक पौह्राई
दियैकि जोत
वीक नौंक धरी घ्यू-गूड़क ड्राव
गौ-गास
फिरि सराद
साल भर तलक्क तर्पण
बार्सी सराद
इज कैं मिलीं ऽ न मिल ?
पत्त नैं
के इसी जै कि
के आब जै कि
चुकाई जै सकूं दूदक रीण
लाड़क रीण .....
अपछ्न में लै कुमर बुड़णैकि खबर
कसी पुजछी इज तलक पैलियै
आज तलक मि सोचनूं
म्यार लिजी ब्राबु थैं लड़ण
उनन नड़क्यूंण
जरा जर ऐ गयौ ऽ
रातैकि नींन, दिनक चैन हरूंण
म्यार लिजी ब्योलि लूंण्क स्वींण
म्यार बाल कट्रेरि बट्यूंण्क क्वीड़
कां हरै ग्येईं किलै हरै ग्येईं
किलै फोड़ि ग्ये
किलै ख्वेरै ग्ये म्यर ख्वर
मिलैं जब स्वींणन में
आइ लै करैं लाड़
बस जबाब न दिनि।

आदिम

उंच महलन में आदिम, कतू न्यांन जस ल्यूंलूं
कतु कै लै लम्ब हो भलै, ब्यान जस ल्यूंलूं ।

इकबटाओ, समेरि ल्हिओ, में पुरी जैं वीकि ज्यूनि
सब तिर इकबटै बेर लै, लुटी जस ल्यूंलूं ।

रिङणौ घटक फितौड़ जस, झिट घड़िकि लै सुबुत न्हैं
कतुकै लै भ्यजो वचे दुनीं में, टुप्प सिती जस ल्यूंलूं ।

कूंण्याक तैं ज्यूनि, ज्यूं हर आदिम
सांचि कौ कूंछ-ज्यूनि, बोकंण जस ल्यूंलूं।

उ ठेठर जो डाड़ मारिबेर सबूं कैं हंसू
म्यार आंखाक पांणि में, वी आदिम जस ल्यूंलूं ।

दगड़ै हिटनूं

हिटो !
दग्ड़ हिटनूं
कैं लै
मणि-मणी सई
रणि-रणी सई
दगड़ै हिटनूं ।
टाड़-टाड़ रै बेरै सई
चै-चै बेरै सई
सब तिर
मणी त्वी पारि गुजरी
मणी मिं पारि हुणी
मणी हमि द्वियॉ पारि बितणी
भुलि बेर।

हिटौ !
दगड़ै हिटनूं
कैं लै, मणिं-मणीं सई
तुमि आपूं में हरै ज्ाऔ
मिं लै बिलै जूंल आपूं में'ई
हिटो ! बदलि बेर ब्ाट
हिटनूं दगड़ै, हरै-बिलै बेरै सई।

हिटौ !
हिटनूं दगड़ै
फिरि पैली बटी
सूर्ज्ाक उज्यांणि
इन्द्रैणि में भै बेर
दिन स्वींण टोड़ि बेर
असलियत्ांक
कट्ठर धारन
फरांड: पांजव बणै।

हिटौ !
दगड़ै हिटनूं
आंखन कैं द्यखंण दिओ
आंखन कैं।
हातन कैं बुलांण दिओ
हातन थैं।
ह्यि मिलै बेर
सोच एक करि बेर
मिलै बेर खुटन
आंख ज्येड़ि बेर

बांटि बेर
करूंल कम
दुख-पीड़-टीस ।
हिटौ !
दगड़ै हिटनूं
मणि-मणी सई
बिन मंजिलै कै सई
टाड़-टाड़ै सई
हरै बिलै बेरै सई
ए दुसर्‌क तैं ।

ज्‌ागो

ज्‌ागौ,
हौर अधिल झन बड़िया
तुम पैलियै भौत अधिल बड़ि गोछा
खुट भिं बिन धरियै
हिटणौछा,
खूब ठुल है गोछा।

तुम्‌र जो हात
म्यार खुटां पुजछी
आब ख्वार पुजंण फै ग्येईं।
इजा !
मिं जै टुपू-टुप चै रौछी
तुमि तरक्की करला कै
म्यार ट्याड़-बाङ रिख्‌ड़न कै
आंखर द्‌याला कै
तुमूंल त उं
दरार जै बणै द्‌येईं।

अरे प्‌ोथा !
तुमूंहै त ऽ
हमैं जै भ्‌याल भयां वयाप
हम्‌र गीत-न्योलि-इज्‌ड़-चांचरि-कौतिक
ह्‌ोइ, दिज्‌इ, बग्वाल, त्यार-ब्यार
तुमार त डिस्को है त ऽ
लाख भ्‌याल।
होइक चीर बादंण त ऽ
पुर्‌यै ह्‌लौ भली कै
आपंण हत्‌र ख्येड़ि
चीर ज्‌ास आफूं पारि
ब्‌ादंण फैगोछा,
तुम्‌र आङ्‌क लुकुड़
मैंसैकि उमर ज्‌ास
घटते जांणईं
कि तुम
पुरांण जमान्‌क
द्‌याप्त बणंण चांणौछा?

गुबर पारि

गुबर पारि
ढुङ मारणै्ल
कि फैद?
जब जांलै फैली रौल
औरौं कैं दुखाल।

य है भल,
अक्कल लगै
झाड़-पात मिलै
थापि
कि रित्तै
सुखै दिओ,
जगूंणा काम आल
मुर-मांछर भाज्ाल,
खत्त में, कि गड्ढ़ में
ख्येड़ि दिओ
सड़ि बेर पोर्स बणै्ल
नांजा ऽ बोटन मैल लागै्ल
गोरु बाछै्क हनलौ ऽ
भिं पाल-खव लै
लिपी जै सकूं।
पर खाल्लि
ढुङ मारणै्ल....
कि फैद?

जागर लगाओ

आरक्षणौक भूत भुती गो, हो ! जागर लगाओ।
कतू नान यैकि भेट चढ़ी
कतू ज्यान है न्है ग्येई
कतुकनाक भ्वां टुटी
जाणि कतू जांठ टुटी
कतुकनाक घर डाड़ पड़ी
कतुकनांक पुलिस पछ्याण पड़ी
बल्दाक जाग बाकर जोती गो, हो! जागर लगाओ।

म्यर च्यल एम.ए.पास छु
फोर फस्ट क्लास छु
नौकरि है हताश छु
उ तौ उनार सरास छु
हमैरि पीढ़ी नीलाम हुंणै
उनार खुटी सिलाम हुंणै
आम आदिम छुती गो, हो! जागर लगाओ ।

उनूंल हमूं कै गाइ दे
कपकै हमैरि कपाइ दे
वी पारि फिरि गोइ चलै
तौ सरकार है त ऽ ग्वार भलै
तनर दि फटूंण छु
अत्याचारौक जबाब बतूंण छु
देबथान में मुती गो, हो ! जागर लगाओ ।

आज पखांणन कै खजबजाई जांणौ
स्येई बाग भालुन घजबजाई जांणौ
ऋषि मुनिनौक हवन बिग्याई जांणौ
नानतिननौक भो दिन ह्याई जांणौ
देबिनैकि इज्जत पारि लै हमल हैगो
आपंणै पाई स्यापौक फंड़ ठाड़ हैगो
सिद मैंसौक मुंख म्वस पोती गो, हो ! जागर लगाओ।

(उत्तराखंड आंदोलनाक शुरुआती दिनों में लेखी कविता)

ख्याड़ ह्लंण

के नि हुन
खाल्लि
ख्याड़ ह्लंण हुं,
थूक लै न्है
ख्याड़ ह्लंण हुं
छु बड़ि सोच-बिचारैकि चीज,
न्है सुद्दै
नङ, बाव, मैल
.....गु-मूत लै
हरै सकूं सवाद
पत्रूंणैकि तागत
थुकि बेर अत्ती
बिग्ी सकैं
ज्ग ठौर
जैं-तैं थुकि,
हग्नि-मुति बेर
ग्इ-कुबात लै
छ्न समावणी लैक
न्हैंतन जत्ती-तत्ती
होदंण हुं,
भ्ल बात लै
कुअकलिन हुं
भै तस्सी-
अणकस्सी।

आंखर कबित्त

को् छै तु ?
कॉ् छै?
जाँ लै छै
वाँ बै आ
'न्ां' नि कौ,
कौ, 'नौं' कि?
कौ, कि चैं?
ओ ऽ ! तु छै
तु त ऽ भै ज छै
भै जा-भिं में
के खै ले
यो 'दै' खा
'छां' पि
'मौ' लै खा
ए-द्वि 'पु' खा
'घ्यु' लै खा,
धौ कै खा।
'अं' कौ, य छु 'गौं'
धो-धो कै जै आ छै
'न्है जां' नि कौ
'जै-तैं' न रौ
'यैं' रौ
'यैं' हौ ब्
ग्यूं बिं सि में बो
'यां' के न्हां? 'वां' जे् छु
'कां' छु यां जै सु 'हौ'
'वां' छु 'धुं'
च्, 'द्यो' ऐ गो
उ 'ह्यूं' चा
ह्यि यैं लगा
दि यैं जगा।

कओ

कओ,
जोर-जोरैल कओ
जि लै कूंण छू
पुर मनचितैल कओ
तुमि चुपि नि रओ।
निडर-निझरक है बेर
आपंण-पर्या भुलि बेर
पुर जोरैल
हकाहाक करो
हाक लगाओ
कओ, जोर-जोरैल कओ।

आपंणि'ई नैं
लुकरि लै
मितुरौंकि' ई नैं
शतुरौंकि लै
पक्षौ ऽ कि नैं
बिपक्षौ ऽ कि लै
जन्ता ऽ कि नैं
सरकारैकि लै
आपंण गौं-गाड़ै कि नैं
देश-विदेशैकि लै
कओ, जोर-जोरैल कओ ।

झुठि नैं सांचिकि कओ
अन्यायैकि कओ
अत्याचारैकि कओ
गरीबीकि कओ
बिरुजगारिकि कओ
जि लै जसि लै छु
दु:ख-तकलीफैकि कओ
कओ, जोर-जोरैल कओ ।

बिन कइयै्ल
व्याप्क् व्याप लै
के क-के ऽ लै
के न लै है सकूं
य याद धरो, यैंकि फाम करो
कओ, जोर-जोरैल कओ ।

कओ,
इतू जोरैल
आंखर, व्याल-पाल धारन बै
फिरि-फिर ऊनै रओ
जुग-जुगन जांलै,
हनुमान कैं फाम ऐ जओ
आपंणि तागतैकि
बणि जाओ-नई किताब गीताकि
औतार है जओ-फिरि क्वइ माताक्
निकलौ 'ऊँ' नौं, ब्वाजो "पांचजन्य"
है जओ भ्याल-ए आजि 'महाभारत'
ऐ जओ भ्याल-परलय
पर झुठिकि मुनइ टोर हुणीं ऽ चैं
मूंख दै-म्वस चुपड़ीणैं चै
सांचिकि जीत हुणीं चैं
जुग बदलीणैं चैं
सतजुग ऊणैं चैं।
यस है जओ-अलख जगाओ
कओ, जोर-जोरैल कओ
जि लै कूंण छु
पुर मनचितैल कओ
तुमि चुपि नि रओ।

राजअनीति

राजनीति नैं
राजअनीतिकि दुकान में
जैक जेब में छ्न भोट
वीकि'ई छु चौल
सब तिर है सकूं
डुन घ्वाड़ लै ऐ सकनी पैल ।

जो जतू ठुल छु कुकर्मी
उतुकै ठुल छु सेठ
उतुकै ठुल छु नेता (?) अनेता
जनता, घ्यामड़-घुरू
वीकै पिस्यूं पिसूं-वीकै पेर्यूं तेल
अर खाहुं वी हुं ई अदपेट-अलुंण जौल।

कागजौंकि छु अजब माया
कागजौंक मूंख क्व करि सुद्दै
समेरी ज्वनी कागज्वक हरी नोट
कागजै में बणि ज्वनीं
इस्कूल-अस्पताल-रोड
कागजै में चलि जै रेल
बस चलूणियौंकि दैल-फैल।

सब तरफ छु असर
कि इलाज, कि पढ़ाइ, कि ख्वांण-पिंण
सब बणै ह्वलीं खेल
बस खेलै नि रै र्‌य खेल
कि औलम्पिक
कि हाकी, कि किरकेट
करि ह्वली भारतैकि टीमै हालत
म्येरि'ई जसि
सब ठौर खुसि-सबन्यैकि आंखि
असल इनत्यान में फेल ।

बात तन्वार-ह्वथिक ज्वा दांत
बड़ाल दुश्मण्वाइ, इकबटिओ मुख्यैल कौल ।
न्याय, लोकतन्त्र, अखबार लै
अणहोति !
बड़ण ल्वगि ग्येईं तन्वार फुटबौल
मरनईं मैंस, मारीणईं-क्वटीणईं

भणीणईं झाड़ाक् झुपाड़
पुजलि राँफ धैं कदिनै
ह्वलै कदिनै द्याप्त दैंण
त्रातलै कदिनै ऽ तन्नर सुन्नाक घोल
बिज्वलै ऽ मैंस
भर्लै ऽ कुकर्मन्नाक तौल ।

निखद्दर

द ऽ हो !
मैं लै कि-कि द्येखि भ्यैटनूं स्वींण में
कै-कै थैं, कि-कि करि भ्यैटनूं क्वीण मैं
द्यखौ ए दिन एक बराह स्वींण में
मस्त है बेर पड़ि रौछी छि, घींण में।
ह्याय, किलै कै भ्यैट्यूं उथैं निखद्दर-सुअर,
वील त ऽ उरयै दे गदर
कूंण ल्यागौ मथैंई किलै निखद्दर ?
'निखद्दर छु सबूं है मैंस
निखद्दर जनावर !'

पुछंण भ्यैटौ-
"मिं कुचीज ख्यानूं
निखद्दर ख्यानूं
तब्बै भयूं नैं ऽ मिं निखद्दर?
पर समजि ल्ये इतुक, मैंसा ऽ /
सुनकि थ्याइ में खै बेर सोल ज्यूनार, बत्तीस परगार
त्यरै हगी हुं उ निखद्दर, कच्यार
अर तु त ऽ
खै जछैं फिरि लै मिकैंई !"

ऐ मणीं अकल मकैं, शरम लै
कौ मैंल-"ठीक कुंणौछै सैद तु
.....मैंई छुं निखद्दर....."

पर, बीचै में टोकि, रोकि दे मकैं वील
कूंण भ्यैटौ इकरसास "नैं ऽ -नैं,
तुमि भया द्याप्त !
तुमि छा ज्ञानी-ध्यानी
भगबान तुमूं में रूनी
तबै मैं-
पड़ि रूं तुम्रा कच्यार में
खै लै ल्यूं तुमरै उखई
अर मणीं ढीलैकै तैं सई
भगबान कैं मणीं चितूंणा लिजी
खुसि-खुसि
बणैं द्यूं आपूं कैं तुमर गास.....।"

पछां फाम ऐ पड़ी मकैं लै
भगबान्‌क बराह औतारैकि
हात ज्वेड़ि द्‌येई मैंल
गीत गैंण ल्‌ाग्यूं उन्‌रै।

हम्रार गौं में

हम्रार गौं में आब, पैली जसि बातै न्है
जसी बोट्क, जाड़न बै, क्वे न्हातै न्है।

अगाश में उड़णौक, शौक त सबूकैं छु
पर आपंण पांखन कें, क्वे तोलनै न्है।

कां बै आलि नईं हौ, हौर कसी आलि
आपंण कुड़ाक द्वार, क्वे खोलनै न्है।

वी ए आदिम, म्यार ह्यि में भैटी रूं
उ आदिम, जो कब्बै मिकैं, मिलै न्हैं।

कसी कुं इजा ऽ, मिं छ्जूंल तुकैं
म्यर आशौक कफू, कबै फुलै न्है।

ऐ गोयूं ज्यूनिक, उ आंखरी पड़ौ में
जां खुट्कॅूण त ऽ छु, पर खुटै न्है।

अगाश लम्यूंल, त ऽ सब्बै कूनईं
पर ल्वे में कैकी, उसि तातै न्है।

जो गाड़ बगूणैं, उ कि तरालि हमूकैं
मणीं सह्रार दिणी, क्वे हातै-क्वे पातै न्हैं।

ह्वल उज्यावं, अर ए दिन जरूड़ै ह्वल
मिं जांणू-तैसि न सकीणीं, क्वे रातै न्है।

फरक पड़ूं

साग्‍क फड़ पारि
वीलि आपंण पुर अनुभव
गणित, भूगोल, हिसाब-किताब
सामान्य ज्ञान
हुत्तै अड़ोइ ह्‌लौ
पुर डिमाग खर्चि ह्‌लौ
पांच रुपै है चार-आठ आ्न
कम-ब्‍कि खर्चणा लिजी
एक किलू आ्लूक ग्याड़ों लिजी
जो इवकै दिन में लै निमड़ि सकनी
पर, वीकि स्यैंणि उनूकें
पुर पांच दिनोंक तै पुर्‌यालि
पांच फड़ टट्‌ोइ ह्‌ली

सोचि ह्‌लौ-
कि, कसी, कतू....
उमाइ, थ्‌चि
खुस्याल छ्‌वेलि
कि सिखुस्यालै क्‍टि
कि-कि मस्‍याल खिति
क्‌े दिगाड़ मिस्यै
कि सुद्‌दै गुटुक
कि.....
पचास परगार्‌क
आ्लू साग्‍क सवाद
साग्‍क फड़ पारि
ठड़ी-ठड़ियै
च्‍खि ह्‌ली
पर के फैस्‍ाल न करि सकनय।

भो छ्न भोट,
आज-भो रोजै भोट
बजार बन्द रौलि
आ्ल लै न बिचाल
फिर लै बिन आ्लू ऽ-रित्तै
ऐगो घर हुं उ
ह्‌य, इतू अकर सोचनै
आलु है सकर आलुक सोरौं कैं बोकि।

घर सागैकि खुरि-तुरि करि भैटी
स्यैंणि नड़क्यूनै-
एक किलू आ्ल लूंण में
इतू विचार?
भो कसी द्यला भोट?
ककैं द्यला? कसी करला फैस्ल?

कूणौ-
वीकि कि चिंत?
कै कैं लै दि द्यूंल
कि फरक पड़ूं ।

(यो कविता लेखणा्क जमा्न में आलु पांच रुपैं किलोकै भौ बिचांछी।)

दुसरौंक लिजी

आपंण गाड़क अव्ड़
लुकार गाड़ में सरूंण छ्वेड़ि
कै हुं लै खाड़ खड़ंण छ्वेड़ि
लुकार मांङ बै घा-सोतर चोरंण
छोड़ि
सासु हो कि ब्वारि
आपंण हो कि पर्या
गाइ दिंण छ्वेड़ि
गाड़ पारक हो कि वारक
आपंण गौ इलाकौक हो
कि दुसार देशौक
कै थैं लै लड़ण छ्वेणि
नईं इकाईसूं सदी कैं
नई तिसरि सहस्त्राब्दि कैं
नईं बखत कैं
नईं जमान कैं
पैली है भल
बखत, जमान बणूनूं
दुसरौंक ब्वझ सारनूं
आओ प्यार करनूं।
मणीं आंखरन-
गाइ, घात, लड़ैं, चोरि, डकैति
हत्या, अपहरण, फिरौति
कुकरम, दुराचार, अनाचार हुं
खाड़ खड़नूं
इनूकैं खड़यैं बेर
लड़नूं-
शान्तिक तैं
पिरेमाक तैं
आपंण हुं नै-दुसरौं हुं
दुनियांक भाइ-चार हुं
दुणियाक दुश्मणों दगै।

परदेश जै बेर

भ्वगी!
कि ल्येखूं त्वे हुं आपंण हाल
त्वे बै परदेश जै बेर,
आयूं यां जब बटी
घड़ि चलणै घड़ि है लै हल्कि
ज्यूनि में न्है मणीं लै मस्ति
ज्यान छु यां आन है लै सस्ति
दिन काट्टंण है ग्येईं धौ
बरस जांणईं दिनौंक भौ
ज्यूनि है गे अथांणि
पत्तै न चलणंय-
ज्यूनि काटणयूं
कि गिटि स्यूं
कि ब्यांणि पड़ि गयूं.....
न्हैं के हौंसि!
कैं जांणैकि, कैं पुजणैकि
के भेटणैकि....
सब तिर
म्यौर हंसण, बुलांण....
म्यार तौर-तरिक लै
म्यार स्वीण है ग्येईं।
सोचणयूं-
किलै बंणाईं मैंल उं खेल-कुड़ि
जनूं कैं आफ्फी,
उधारि आयूं मैं
त्वे कैं, घर कैं छ्वेड़ि
के लिजी यां आयूं मैं
यां लै हंसि-खुसि हमेशा रै
एक लाप अघिल.....
क्वे न्हां दगड़
बस, त्यार लै वी ऽ
सूर्ज, त्यार, जूंन....
जो घर में कि परदेस में
रूनी दगड़ै
जनूं में द्येखीं मकैं त्येरि'ई शकल
सोचनूं...कि लागूं जून म्यर
जो रात भर म्यार लिजी बिजूं
मिं हिटनूं
रात भर दिग्वाड़ हिटूं-त्येरि'ई भैं

घर ऊंण हुं गिणनूं
पैली म्हैण, फिरि हफ्त, फिरि दिन
औ उं, तु छै टाड़ जतू
वी है लै बांकि है ज्यूंनी।

असल दगड़ू

मैंसक दगड़ प्यांणि दगै
ज्यूनि भरी कै नैं
पैद हुंण है पैली
पेटै बै हुं,
हौर आग
पैद हुन-हुनै पांणि ततूंण बटी
वीक भितर
मरण्याक पछिल
चित्याक पुर भड़ीण
पछां लै रुं।
ए दिन खुसूकन, फुर्र कै हौ में
उड़ि ज्यांण है पैली
हौं चलैं ज्यूनि कैं
म्याटक बणी मैंसक ग्यात
गत है ज्यांण तलक
रुं मैंस्याक दगड़
हौर फिरि है जां म्यांट
मिसी जां म्यटै में
मणीं उणि जां अगाश में
मणीं बगि जां पांणि में
मणीं हरै जां हौ में
हौर बांकि-कि हुन्तै
भसम है जां आग में
ठौर रै जैं रित्तै
फिरि लै मैंस
करणई इनर बरबाद
फुकणईं घर बंण-आग
बिगूणईं हौ
कचुवणईं पांणि
बोट-ड्याव काटि
आटणईं कंक्रीट्यैल म्यांट
लम्यूणईं अगाश
मचूंणई हल्ल
बिगूणईं आपणि ज्यूनि
भो यं सब्बै
यं मैंस्याक असल दगड़ू
कब्बै लै सकनी निमड़ि
जब तलक छन बची
सबै तिर समेरि

किलै नैं
छ्जूनूं इनूंलि
आपंणि ज्यूनि।

तु पलटिये जरूड़

च्येली!
छ्योड़ी!!
कूंणईं-
बखत बदईणौ
तु धरिये आपंण धियान
झन भुलिये
तु छै छ्योड़ी ऽ
जुगन बै ख्व्येड़ियै ऽ,
भली भैं सराये खुट
कतुकै, कस्सै
बदइ जौ बखत
तु रौली छ्योड़ी ऽ
छोड़ियै ऽ, ख्व्येड़ियै ऽ....
बेई झुगुल पैरि
आज मैक्सी
भो 'मिनी-मिडी'
तु जि लै पैरि
ल्यागली ब्याट
घर बै,
घर बै' ई
ल्यागि ज्याल गुण्ड
त्यार पछिल
बजाल सिट्टि
मार्याल आंख
च्वेड्याल ल्वात
लुछ्याल तुकैं
ग्याव न अटकली
हुत्तै लै न्यैयि ल्याल
हौर....
जांणि कि-कि लै.....!
त्येरि दास दयेखि
उवाक्क, उपर ऐजनी जनूंकै
अर जो सम्मेलनन में
लम्ब चौड़
भाषण दिन-दिन न थ्याकन
त्यार बिकास्याक उपर
उं लै, मौक ऊंण प्यारि
खाप त्यांण्याल
गिज उफराल

ज्यूंनि भर झुराल तुकैं।
य ह्वल,
बस त्यार पलटंण तलक
स्यार न है सको भलै आङ
तु करि ले मन स्यार,
और दे जवाब पलटि बेर
मकैं पुर बिश्वास छु
तब, त्वे में देखियैलि
उनूंकै झ्यांसिकि रूंणि
काइ माता!
आंख निमी ज्याल
खाप तांणियै रै ज्याल
गिज सुकि ज्याल उन्यार
पर,
त्यार खुटी सिलाम,
तु पलटिये जरूड़।

भैम

दशहर्‌ाक दिन
बणैं, छ्जै रख्वीं सबूंल
आ्पंण-आ्पंण रावण,
....आ्ब लगूणईं आ्ग
कै कै रावण लुकुड़ौंक
कै कै कागजौंक
कै में ढ्यंच छु ल्‌ाकड़ौंक
कै में लुवौंक
क्वे रावण भड़ी जांणौ झिट घड़ि में
क्वे स्‌ार
आ्ंख द्‌यखूंणौ
भड़ीण हुं न त्‌ाकणौय,
के कओ-उ लै
भड़ी ज्‌ाल मणी ढील में
छ्‌ार है ज्‌ाल
वीक भितर धरी बम-पट्‌ाख
भड़भड़ाल
फिरि कटकी ज्‌ाल
पर ह्वैलि एक खास चीज
जो न दयेख्वियैलि कै कैं लै
जब धमतरी ज्‌ाल रावण
उण्‌ाल जो् सिणुंक
बणि ज्‌ाल रक्तबीज ।
भैम ह्वल भड़ी गो रावण
पर उं चिणुंक-भ्यार ऐ
पाइय्‌ाल-ताइय्‌ाल
सैंती ज्‌ाल दुनी में
भड़ी बेर लै न भड़ियल भैम।
फिर अघिल साल्‌ाक दशह्‌ार में
और भ्‌ाल, और ठुल
रावण छ्‌ाज्‌ाल ।
भड़्यै बेर, कि वीहै डरि-भाजि
न मरल रावण
न कुम्भकरण
न खर-दूषण
बस, बढ़ल प्रदूषण
और-और है ज्‌ाल पैद
वीक स्‌ामणि
हुंण पड़ल ठ्‌ाड़

करंण पड़ल मुकाबल
लड़ैणि पड़ैलि लड़ाइ
घर बै, भितर बै, आपूं बै' ई।
मेरि म्यानछ
न बड़ाओ
न भड़याओ मरी रावण
जब ठुल-ठुल रावण छन जिन्द दुनीं में
करि सकछ
उनन धरो चौबटी में
रोज जोत्याओ
रोज क्यव करो उनर मूंख
और हिम्मत छै त
उनूं कैं भड़याओ।
खाल्लि मरी रावण कैं
भड़यै बेर कि फैद?

ब्रह्मा ज्यूकि चिन्त

दुनी कैं रचि बेर
आ्ब पैद करंण में
ब्रह्मा ज्यू
भौतै व्यस्त छैं
दगड़ै दोचित पराण लै,
कि उं
कि ख्वा्ल, कि लगाल कै,
पैली फज हुंछी, पाठ हुंछी
क्वे-क्वे भुली-चुली
'ऩ ब्रह्मणे नमः' लै
कै दिछी,
आ्ब उनर नौं
न लिहन क्वे
बस, ल्वा्गि रयीं
बच्च पैद करंण में
ब्रह्मा ज्यू छन भौतै परेशान
कां बै ल्या्ल-'नई डिजैन'
कसी ल्यख्वा्ल-'उन्नैरि कुनइ'
कसी कर्वा्ल-'उनर पोषण'
बस यै में ल्वा्गि रयीं
उनूकें क्वे कामैकि न्हैं सुबुत,
फिर लै निकाइ बेर बखत्
आपंणि बणाई दुनी द्यखंण हुं
ऐ ग्या्य ए दिन घुमंण हुं
कत्ती ठ्वा्ड़ हुंणैकि ठौर नैं
कैं आदिम एक नें
सब 'मि खां-मिं खां' कूणीं
जनावर!
कस ल्वा्ग हुनौल उनूंकैं
आपंण तैं क्वे ठौर, क्वे थान
न पै बेर...
किलै बणाल उं-उनर थान
उं पैद जै है ग्येईं
उं त संहारक 'शिबज्यू' कै भज्वा्ल
और पो्षणी 'विष्णु' भगवान्वा्क
औतारन्वा्क थान बणाल
दगड़ै आपणि राजनीति लै कर्वा्ल
'रामक' चरित्र न अपण्याल
बस कृष्णैकि चारी

रास रचाल
'विघ्न विनाशक' कैं पुजाल
'नरमुण्डधारी काइ' बै डराल
'गोल्ल' ज्यूक थान में
दुसरौंक हुं धात खिताल
जि आपंण खांणौंक मन ह्वल ऽ
भग्वान में नाम धरि
बाकरौंकि मुनइ थचकाल
कुकुड़नौंकि बइ चढ़ाल
सुख में आपंण
दुख में भग्बानौंक
नौं धराल
लालची मल्लबी रनकार।

तु कूंछी

हंसी !
तु कूंछी-हंस
खितखिता,
कसी हंसूं
कि द्येखि हंसू?
दुणिय्राक द्वाव द्येखि
डाड़ै नि ऊंणइ।

तु कूंछी-गीत गा
गीत ल्य्रख,
कसी ल्य्रखू
कै हुं ल्य्रखूं?
य बे'रसी-भ्रांजणी
दुणी में
बुलाण्राक तैं ई
आंखर न मिलण्राय ।

तु कूंछी-ब्राट बणा
ब्राट द्यखा,
कसी बणूं
क कैं द्यखूं
य क्रंकीटाक जङ्व में
आफ्फी जै भबरी गोयूं
आपंणै जाड़ौं बै क्राटी गोयूं
हौर के बतूं लै, त ऽ
को ल्य्राख लगूं अच्यान
भलि बातन कैं,
को जां
भ्राल ब्राटन कैं।

हंसी!
तु कूंछी-उठ, बिज
अघिल हिट,
त्वी बता
क्रां जां
टुक तलक पुजि गोयूं
आब त ऽ अघिल कै
क्वे फाड़ै
न द्येखीन्रौय।

को छं हम

को छं हम?
इस्कूल जांणी
  इस्कूली नैं
  मास्टर नै
        ट्यूटरै ऽ ?
अस्पताल जांणी
इलाज करणी
  डाक्टर नैं
  कम्पौडर नैं
        चीर-फाड़ करणी
        कसाई ऽ ?
कुड़-सड़क बणांणी
  इंजीनियर नैं
  ठेकदार नें
        सिमन्ट-सरी चोरणी
        चोरै ऽ ?
राजनीति करणीं
  जनताक सेवक नैं
  बिकास करणीं नेता नैं
        देश बेचंणी
        दलालै ऽ ?
कोट-कच्छेरि जांणी
  पुलिस नैं
  वकील नैं
        अन्यायिन कैं बचांणी
        सिद-सादन कैं लुटंणी-मारंणी
        गुण्डै ऽ ?
समाज में रूंणी
  कैकै पड़ोसि नैं
  कैकै इष्ट-मितुर नैं
        सिरफ डबलौक
        गुबरी किड़ै ऽ ?
लछिमिक पुजारि नैं
सवारि-
उल्लू ऽ ?

अच्यान्नाक मैंस

अच्यान्नाक मैंस
गीत गांनईं-
'मस्त-मस्त.....'
क्वे दगड़ नैं
आपंणि घर-कुणि
समाज, संस्कृति बज्यै
इकल-इकलै
एक नैं
मस्त (?)
और, करनईं
'प्यार.....'(?)
लाड़ नैं
मैंस दगै नैं, देश दगै नैं
एक (?)
छलबलू छुकरि दगै।
हंसनईं
दुसरौं पारि
खुसि है रईं
दुसरौंक बरबाद द्येखि
डाड़ मारनईं
दुसरौंकि बरकत द्येखि
आंस तौहड़ोनईं
सामुणि में,
पिछाड़ि-
भलि भट्यूनईं ।

खबरदार !

खबरदार !
सावधान ! हुशियार !
आब और नैं !
मिं आब सुणंण ल्‌गि गो्यूं
म्यार कानौंक द्‌वाक
तुमैरि गोइनैकि अवाज़ैल
फ्‌ाट नैं
खुलि ग्येईं।
  म्यार हात
  हतकड़ि खिति
  तुम ब्‌ांदि न सका ऽ
  यं और लै
  फरांङ है ग्येईं
  फैलि ग्येईं।
तुम्‌ार अन्यौ-अत्याचार्‌ैल
मिं डरि गो्यूं
य लै झन समझिया
म्यार आंखौं प्‌ारि ल्‌गी
सब तिर सै ल्हिण्‌ाक
बड़ुव्‌ाक जाव
फ्‌ाटि ग्येईं।
  सावधान!
  अघिल ऊंण है पैली
  सोचि ल्हिओ ए फ्‌यार आ्‌जि
  तुम्‌ार गुई जिब्‌ाड़ में छो्‌पी
  तिमुरी क्‌ान
  पछ्‌याणि ह्‌ाली मैंल
  मिं राघव, मिं रहीम, मिं गुरुमुख
  आब खालि
  चाइयै न रूंल
  चुप लै न रूंल ।
हुशियार !
फिरि कैं, क्वे द्रोपदी प्‌ारि
कुआ्‌ंख झन धरिया!
मिं अर्जुन-मिं धनुष ध्‌ारि
ऐ जूंल मुकाबल में।

खबरदार !
अहिंसा कैं सितिल-पितिल
कमजोर मा्नि
जा्ठ न मा्र्या कै कैं आ्ब
मिं गांधि
फिरि ऐ जूंल
जा्ंठ था्मि।
खबरदार !
मकैं सिदसा्द घ्यामड़ समझि
म्येरि संस्कृति
म्येरि धर्ति कैं
लुटणैकि चोर मार झन करिया
मिं भोले शंकर
उघड़ि सकूं म्यर तिसर आ्ंख
है जा्ल तुमर नौंमेट
रुको !
फिरि सोचि ल्हिओ
कि है सकूं-कि करि बेर
और हुलरि आ्ओ तलि
उ ह्ा्ङ बै
जकैं का्टि ह्ालौ तुमूंल आपफी
आपंण कुकर्मनौंल,
ट्ेड़ि ल्हिओ उ ज्यौड़
बा्दी रौछ जैल
गरम लाल कुर्सि दगै
अतर ! भड़ी जला तुम
आपंणै बा्दी हतकड़िल,
ख्येड़ि दिओ
उं सुन चान्दिक लुकुड़
और पैरि ल्हिओ-वी पुरा्ंण
कुथा्वै सई,
नतर! नङ्ड़ है जा्ला
उ सतिय्ौंकि रांफ्ैल ।
ख्येड़ि दिओ
आपंण ह्ातौंक जा्ंठ
अतर ! तुमरै बा्ंदी
पलटि लै सकनीं
तुमा्रै उज्यांणि
सीङ तांणि,

और य लै समझि लिहओ
तुम्हौर ठुल है ज्यूंण
ब्याखुलिक स्योव जस छु
तुम और ठुल है सकछा जरूड़
मणी देर आजि
पर तुमर अन्त ऐ फजि गो
सूर्ज डुबणौ
खबरदार !

न मर गुण्ड

गुण्ड मरि गो
या मारी गो ?
कैल मारौ?
आ्ब यै है रौ ठुल सवाल
जैल मारौ
आ्ब वीकि न्है कुशल,
ख्वालि चलणई मैसौंक सौल-कठौल
जैल मारौ
उ दिख्वणईं धौंस
जो न मारि स्ाक
मारणईं फौंस ।
कट्टैकि गो्इल मारौ गुण्ड
गुप्तिल उधेड़ौ वीक ल्ादड़
ल्वाड़ौंल फो्ड़ी गुद्दि।
गुण्डै कै छी कट्ट
गुण्डैकि' ई छी गुप्ति
आपणै हथ्यारौल मरौ गुण्ड
मणीं सिद-स्ाद छी सैद/भुलि बेर
खेल-खेल में
दि बैठौ यारन
दगड़ै हड़कूंणौंछी शराब-
आंख बुजि
अगाश चै जबखत,
उ बखतै ठो्की गे गो्इ
फिरि लै फाव मारि
फट्वणौंछी नहर
नहरूंन पड़ि ऐ भ्यार गुद्दि
वै रै पड़ौ चित्त
फिरि लै, कैं बचि न जा्ओ सोचि
वीकि गुण्ड्योइ कैं
भ्यार निकाल्णं हुं
फा्ड़ी गो गुप्तिल-वीक ल्ादण,
इसी मरौ गुण्ड।
अतर बहौड़ाक जा् का्न
हा्थिक जा् जड़ा्ड़
को मारि सकछी उकैं
पुठ-पछिन, अपछन लै
'मरि जा्नौ ऽ भल हुंन' कूंणी, कूंणई-
'नक्कै भौ हो!

हमार ज्ञाति-ख्वांनिक, बिरादरीक, धर्मक.....छी
'.....लड़ैंक रफती रनकर !
इज-ब्बाबक स्यर परिवारौक
ल्याड़िल छी अत्ती
कै हुं कब्बै नैं नि क्यौय
कबखतै-उनूं उपर लै
कबखतै-उनूं हुं लै
लड़्छी गुण्ड
वचे न बुलांछी वीक खिलाफ
कूंछी-हमूकैं कि?
यै वीलै बंणौ उ गुण्ड
वीक परिवारैल-वीक समाज्यैल
बड़ा उकैं गुण्ड
सांचि कौ कूछ-
उनूं लै मारौ गुण्ड।
लड़ैंक रफत छु वीक भै कैं लै
ठ्याड़ है गो बदव ल्हिंण हुं
फिरि ज्यून है गो गुण्ड
कां मरौ गुण्ड
कां मरी वीकि गुण्ड्योइ
वीकि रक्स्योइ, भुत्योइ, नंग्योइ.....
असल बात त ऽ य छु
न मर गुण्ड ।

फरक

दिल्ली में
आइआइटी'क गेट्‌क सामुणि
फ्लाइ ओवर्‌क मुणि
'नो हॉकर्स जोन' पारि
बाल दिवस्‌क दिन
धोपरिक घाम में
पश्‍यणैल तिन
फ्‌टी भिद्‌ड़ टाडि·
हात आपंण ख्व्‌ार
मैंसोंक खुटन धरि-उं
आज न म्‌ांगण्‌ाय डबल
अखबार बेचणईं
लेतमार हुंणईं।
किलै?
म्‌ांगन-मांगनै
बांणि-सारै
हैंगे-यैसि,
य हुंण-खांणै्कि
खेल-खेलणै्कि
इस्कूल जांणै्कि
उमर में
उमर्‌क रात ब्यांण बखत
रात-ब्याव्‌ाक
जुगाड़ में छ्न
सरग चांणईं ।
भिं अगाश को्.....? क्‌ां.....?
छु इनर?
क कैं छु इनैरि फिकर
को् करौल
इनैरि सुद-फाम
सिबौ ! सबूंकै तिर्याई
जम्‌ान्‌ाक सताई
अयांणपनै में सय्‌ांण
यौं न्‌ानतिन ।
भितर,
गेट्‌क भितर,
न्‌ानतिन पढ़नई
इन्जीनियर बणनईं
स्‌ार देश्‌ाक उम्मीद छ्न् यौं

सा्र देश कैं फिकर छु इनैरि
पर क् फरक छु द्वीनों में
गेट भितर हौर
भ्यार हुंणौक
कि और लै के?

डाड़ मारणैल

कि हुं-
डाड़ मारणैल?
आंस ऊनीं
आंख फुटि सकनीं
के न देखीन
है जां अन्यार पट्ट
दिनछनै सांस है जैं
हिंकुरि ल्यागै
सांस रुकि सकैं
इकरसांस ल्यागि जां
स्यर आङ बरकि जां
ख्वाई आङ न ल्यागन
डिमांग काम न करन
क्वे मूंख न लगूंन
गिजूनीं अलग
फिरि, कि फैद?
डाड़ मारणैल !
जि छु हुंण
उ त ह्वलै
के कम जै कि ह्वल
और लै सगर है सकूं
फिरि डाड़ किलै?
फिरि आंस क्यास?
फिरि लै-
जि ऊंणईं आंस त ऽ
समाइ बेर धरि लिहओ
कबखतै-कत्ती
हंसि आली ऽ अत्ती
काम आल ।

हू आर यू

हू आर यू
को छै रे तू?
'मिं छु राणिखेती'
'मिं छुं अल्मो्ड़ी'
'मिं छुं.....'
'.....'

राणिखेती?
अल्मोड़ी?
.....?
नैं-नै,
'मिं छुं कुमाउनीं'

कुमाउनी?
नैं-नै
'मिं छुं उत्तरांचली'

उत्तरांचली?
नैं-नै,
'पहाड़ि छुं मिं'

किलै छै तु
राणिखेती, अल्मो्ड़ी.....
किलै न्हैत्यै हिन्दुस्तानी?
भारतीय !

झुठि-सांचि

को मानौल, म्येरि सांचि
जब मिं कूंल-
सांचि हैं कई परकारैकि
सिति बेर-पुठ मुणि धर्ति
ठड़ी बेर-खुटौं मुणि धर्ति
चनरमा में जै बेर है सकूं
ख्वार मांथि हवो धर्ति ।
त ऽ य हुंनी सांचिक परकार-
सिती सांचि अलग, बिजी सांचि अलग
भैटी सांचि, ठड़ी सांचि, उठी सांचि
आंखौल द्येखी, कानौल सुणी
हातौल ठौक लगायी सांचि
जिबाड़ैल चाखी सांचि
पुरांण सांचि-नई सांचि
झुठि सांचि-सांचि झुठि
और ए उ लै सांचि
जो बाबुल झुठि सिखा
'सांचि पुण्य, झुठि बुलांण पाप'
सांचि त अच्यान
हैगो-सबूंहै ठुल पाप
हुणौ निलाम हर चौबाट में
द्रौपदिक चीरक चार
उभी न रै सकनौय
झुठिकि ताकतै सामुंणि।
को मानौल, म्येरि सांचि
जब मिं कूंल-
भगवान लै हुनीं
द्वि परकारक
एक उं
जो हमूकैं पैद करनी
दुसर उं
जनूं कैं हम पैद करनूं
उनैरि मूरत बणै
क्वे चालौ ऽ
जोर-जोरैल
हुतै आंङ झुमै बेर
जै-जै करि नाचनूं
आफ्फी लै द्याप्त बंणि जानूं
कुकुड़-बकर मागनूं

उन्नार नौं पारि
राजनीति करनूं....
दुकान चलूनूं ।

कुन्ब

अहा ऽ उं दिन
जब छ्यूं मैं लै अद्बिथर नैं, पुर्रै मैंस जस
दस दिश चांणी आंख
ह्तिक जा् जड्ड़
बहौड़्क जा् क्न
मजबूत सुदर्शन आङ
कान्क जा्ग कान
हात्क जा्ग हात
खुटन्क जा्ग खुट
अर कपाव्क जा्ग कपाव

और एक यं दिन !
जब म्यारै हात घमकूणई म्यारै आङ कै
खुट लत्यूणईं कपाव कै
कान न सुणन्य, जि मूंख बलांणौ
डिमाग न समझणय, जि आंख द्यखणौ
आड़ुल नाक बुजि लि रयी
सुङणै न दिंण्य
दांतौल जेल बणि गोठ्यै ह्लौ जिब्ड़
चाखणै न दिंण्य
सब उड़ण चांणईं
सब स्वीण द्यखणईं-सतरंग स्वीण
उ लै स्वीण द्यखणौ
उ लै....अर उ लै...
और उं उणि ग्येे.....ईं
म्यार लिजी करि ग्येईं-सतझड़ि
हात-खुट, आंख-कान.....
सब झड़नई-एक-एक कै
इकल-इकलै!

फिरि,
हातौल बंणै ह्लौ आपंण अलग आङ !
खुटौल अलग,
ख्वर्क बाव लै अलग-अलग झड़ि
बणूणईं आपंण-आपंण आङ !
सबनैलि अलग-अलग छजै ह्ली आपंण आङ
बजार में बिचांण हुं धरी शिकार्क बांट जा्
आब खुटौ थैं आंख न्हैतन
आंखन थैं डिमाग न्है

अर डिमाग थैं आङ न्है
कै थैं आपूं अलावा वये न्हैं
मैं कूंछी जकैं कुन्ब
आब है-रै गोयू कुन्ज-कुन्ज
आब आज, अर रोजै, हर रोजै
मैं द्यखनयूं
उं दिख है ग्येई-इकलू बानर हैबेर
उं ऊंणई वापिस.....
मैं हात पसारि भै रयूं
सैद मैं लै स्वीणै द्यखंण भै गोयूं।

उदंकार

उदंकार-
जैगड़ियौक,
ग्यसौक, छिलुकाक रांफनौक
ट्वालनौक, और
जूंनौक जस
ज्ञानौक
जब तलक
न हुंन
तब तलक
लागूं अन्यारै उज्याव नांत

वचे-वचे
आंखन तांणि
हतपलास लगै
हात-खुटन
आंख ज्यड़नैकि
कोशिश करनीं

फिरि लै
को कै सकूं
खुट कच्याराक
खत्त में
नि जाल,
ह्यि कैं
वचे डर
न डराल कै।

चिनांण

आज्क अखबारन में छै खबर
आतंकवाद, हत्या, अपहरण
चोर-मार, लूट-पाट, बलात्कार
ठुल हर्फन में,
अर न्यान हर्फन में
सतसंग, भल्इ, परोपकार
य पछ्यांण छु
आइ न है रय घुप्प अन्यार
य न्है सब तिर बजी जांणौक निसांण
य छु-आइ मस्त
बचियक चिनांण ।

किलैकी ठुल हर्फन में छपनी समाचार
अर न्यान हर्फन में-लोकाचार

य ठीक छु बात
समाचार बणनईं लोकाचार
और लोकाचार-समाचार...
जसी ज्गश्यार्क जागनाथ ज्यूक
हातक द्यू
ऊंणौ तलि हुं।

सांचि छु हो !
उरी रौ द्यो
पर आइ लै छु बखत
फसल समेरि कुन्यूण लग्यूंण हुं
लुट बणूंण हुं,
अर फैस्ल करणौक
कै दिग्ड़ छां हम
को् छु हमर
समाचार
कि लोकाचार?

किलै

आदिम्क इमान कै
यौ कि हैगो
किलै हिन्दू हैगो
क्वे मुसलमान हैगो ।
एक मालिक्क बणाईं
छ्यं हम म्यंट्क पुत्ल
फिर किलै द्याप्त हैगो
क्वे शैतान हैगो ।
ला न क्वे क्ये लै
न दिग्ड़ क्ये लिहज्ल
फिर किलै गरीब हैगो
क्वे शौकार हैगो।
है गयां आजाद
कूंण्क तैं दगड़ियो
पर म्यर-म्यर में
सब औरै-और हैगो ।
हरै ग्येईं संस्कार
बजी गे संस्कृति
बिचांणौ मैंस, रिश्त वीक
घर लै दुकान हैगो ।
कूंणै सरकार-
'ग्लोबल्इजेसन' ऊंणौ
हर ज्ग आतंकवाद द्येखि
मकैं लै इत्मीनान हैगो।
सब कूंछी एक छु मालिक
आज है ग्येईं पचास
नौ धरि क्वे खुदा
किलै क्वे भगवान हैगो।

तरक्की

सृष्टिकि शुरुआत में
छ्यां हम नंग
किलैकी नि छी
हमूकैं अकल
दगड़ै लुकुड़।

छ्यां हम गुण्ड
मारछ्यां जनावरन
किलैकी नि छी
के ख्वांण हुं ।

फिरि,
यो बात छु पक्की
करी हमुंल तरक्की
मणी-मणी नैं
अत्ती।

पुज्यां काँ?
नंग्योइ बै नंग्योइ तलक
गुंड्योइ बै गुंड्योइ तलक
रूणयां नंग
मारणयां मैंसन।

कूनीं-
छ्यां हम चौखुटी
नि हुछी कमर सिद्दि
उभी न सकछ्यां
आज कमर फिरि कुकड़ी गे-
ताशांक फड़न में
कि शराब पि-
कच्यारून लफाई
कि गाड़ि में
कि कुर्सि में
कि टेलिफून
इन्टरनेट-कम्प्यूटराक सामुणि
कामाक नाम पर
सिणुकाक टोड़ि द्वि नि करणीं
हर बखत भैंटियै
लुली गयां ।

सिरफ आपंणि खां-खां कि
फिकर में
जनावरै ऽ है गयां।

भ्यार द्यो लागि रौ हो

आज ह्यि उदेखि है रो, भ्यार द्यो ल्यागि रौ हो ।
म्यर रजू लड़ै में जै रौ, भ्यार द्यो लागि रौ हो ।।
आंख्याक बन्धार तौहड़ि रयी, भ्यार द्यो लागि रौ हो।
ह्यिय्याक नौव भरि ग्येई, भ्यार द्यो ल्यागि रौ हो ।।
कस हुनल, कां हुनल उ, यै सुर इजू ल्यागि रौ हो।
कब आलि वीकि कुशल बात, यै मनसुब पड़ि रौ हो।।
जितियै लड़ैं, च्यापियै दुश्मणन, यै अशीष ऊंणै हो।
लड़ैं जिति सब दगड़ुवौं दगै, म्यर रजू जी रौ हो।।
यो देश्याक च्यालों कैं, एक कुमर लै नैं बुड़ो हो।
एक है एक उपलब्धि, उन्यार दगै जुड़ो हो।।
आल सब सुक्यारि घर हुं, य्यास स्वीण बुंणो हो।
उन्यार बहादुरिक किस्सन कैं, सब मैं बै सुणो हो।।
के बात नैं, जो ऐगे खबर, म्यर रजू लड़ै कै हैगो हो।
भलि बात जो ऐगे खबर, देश हमर जिति गो हो।।
मिं थैं कौल 'शहीदै इजा', य्यौस म्यर भाग है गो हो।
आंख्याक बन्धार तौहड़ि रयी, भ्यार द्यो लागि रौ हो।।
ह्यिय्याक नौव भरि ग्येई, भ्यार द्यो लागि रौ हो।
आज ह्यि उदेखि है रौ, भ्यार द्यो लागि रौ हा

नईं साल पारि

ऐग्यो !
नईं साल,
मैंस कूणईं
नईं सदी
नईं सहस्त्राब्दि
लै ऐगे।
पै एक छु सवाल
कएकन्नाक मूंख में-
"कि ल्यै रौ हमूहुं?
ऊनै रुं
नईं साल
उस्सी रुं ज्यूनि
जस्सी कि तस्सी
ऐ रै हुनौलि-
नई सहस्त्राब्दि, सदी, दशाब्दि
साल, महैण, दिन
नईं घड़ि
हमूकैं कि?"

हमूकैं छु लिहंण
एक-एक ऊंणी
नईं साल, दिन, सदी
एक-एक नईं घड़ि बै
जो ल्यूं नईं बखत
जो द्यूं सबूकैं
अलग-अलग
पर बरोबर मौक
ल्यखंण हुं
बखतैकि कुनइ पारि
मनकसि क्वथ
रीत-गीत
आपंण-आपंण ।
हर नईं घड़ि में
कुनइक नईं सुकिल पन्नों पारि
जि, जसि
सबूं है बढ़ी-
भलि क्वथ
हमि लै कि ल्येखि सकनूं वी प्वारि ।
नैं ऽ, कि ?

हरै गो पिरमू

.....हरै गो पिरमू
पत्त नैं कां ?
रूंछी त्यार-म्यार हिय में,
जब-
तु, मिं खांछियै
मिं, तु खांछी,
आब-
य मिं खां-मिं खां
तु नि खा में
पत्त नैं
कां रैगो पिरमू?
धुर-जंगवों में
गोरु-बाछ, ढोर-डंगर चरूंन,
उ खन्याक कर्याड़ि में लै
फौंव बै पांणिक जाग
'मौ' जौ
खन्यै दिछी पिरमू
हमार ख्वार,
हुत्तै आङ बरकि जांछी
आपंणि बइ दीणा तैं
है जांछियां तैयार.....
'वैं भुलि अयां सैद
या पत्त नैं कां.....?
के फामै न्हां
कां रैगो पिरमू?
हरै गो पिरमू ।

मैंस अर जनावर

भग्वानैल
दुनी बणै,
ख्वांण-लगूणौंक
सबनौंक
अलग-अलग
इन्तजाम करौ,
उनूं में बै क्वे छ्न
जो पात-पात कैं
एक-एक तिनाड़ कैं
चै-चै बेर
बखत द्येखि बेर
ख्वनी
जनावर कईनी।
ए मैंस छु
दुनी में
घा-पात
किड़-पिटङ, जनावर
क्वे यैसि चीज न्हैं
जि कैं उ
कैं न कैं
हर बखत-हर मौक
न ख्वन
सैद,
यै वीलै
उ मैंस छु।

नखरू बखत

ह्य,
य नखरू बखत्क लै
ढकी ज्न द्वार
पत्त नै चलन स्क
कां हुं जांणो
किलै जांणौ
यै दिग्ड़ अघिल कै जै
जूंल कौछै ऽ
फ्येरी-फ्येरी बेर,
ऊंण पड़ौ
पछिल कै जै।
लुकुड़न्कै क्वीड़ कओ
पैली झगुलि हुंछी
अ्ब मैक्सी-गाउन हैगे
पैली सन्तराश हुंछी
अ्ब ऐप्रन हैगो
डोटियावोंकि सुरयाव जसि आङ में पट्टि
जीन्सैकि पैन्ट हैगे।
पैली मैंस 'आदि मानव' कईंछी
नङड़ रूंछी/अ्ब तिसरि सहस्त्राब्दि ऐगे
मैंस अ्ब 'आधुनिक' कई जांणो
दगड़ै और नङड़ हुनै जांणो
बस जरा कसक रै गे
आजि पुर न है सकि रौय
या जतू आधुनिक छी आदि मानव
या जतू आधुनिक छ्न
य बखत्क
कुकुर, बिराउ या बानर ।

भकार

ए तिनौड़ ठुङ में
ए क्यौड़ हातौंन
और फांकौंन मांट्यौक धुस उणै
पेट क्वटि
जिब्वाड़ में त्वव लगै
चिमि लगै
उभारि-उभारि बेर
आंचुइ-आंचुइ कै
सम्वौ हमूंल सामव
अनाज्वाक ग्यूड़
फुकौ मन्तर
लगा जन्तर
न्यौती मां अन्नपूर्णा
थ्वपी त्यत्तीस करोड़ द्यापत
तब बणौ भकार.....
अजब भकार-सुनक भकार
कब्बै न सकीणी भकार ।

जैल सुणौ वी ऽ आ
मत्ती लूछा ऽ लूछ
खैंचा ऽ खैंच
फोक्का ऽ फोक
खेड़ा ऽ-खेड़
भरंण ल्वगीं लाद्ड़ नकां-मुखां
अट्वओ-नि अट्वओ
छांणि खा भकार
ग्यूंक घुनौंक, धान्वाक फत्वावों चारी
बणै द्यौ-ध्यूड़ कुड़
करि द्यौ छ्वर ।

पहरू बणाछीं जनूंकै
समजि ले उनूंलै पधान आपूकै
चोरि-चोरि बेर
द्येखि-द्येखि बेर
चिंणि द्येई आपंण-आपंण भकार
फिरि छजै-रंग्यै
नौं ल्येखि दे आपंण,
हम्वार भकारूंन करि ह्वली ट्वाट
जबाब दिंण हुं-ल्वाट ।

म्यर मोल

न्योलि' ई.....ऽ
म्येरि ब्योलि' ई.....ऽ
मिं लै सबनैकि भै
छुं मनक राज-
शाहजहाँ,
जैक ह्यि में भै रौ
महल-ताज
और तु म्येरि
मुमताज ।
य अलग बात छु
म्यार हातक ह्वार
कि, म्येरि फाटी खल्दी
रोकि दिनैं
मकैं स्वींण द्यखंण बै लै
तुकैं प्यार करंण बै लै
न बणण दिनैं
म्येरि स्वींण कुड़ि ।
पर मिं करूंल मिहनत
गवूंल आपंण आङ
पांणि खन्यूंल त्वे-पश्यणौक
खुटूंल जोतुंल हव
हात बणूंल दन्यव
आपंण ख्वरक बाव
नङ, एक-एक झूस,
आपंणि ज्यान
लै बाइ द्यूंल मिं
आपंण स्वींणों पारि,
तुकैं प्यार करंण हुं।
है सकूं जिति जऊं मिं
है जऊं भौत ठुल
पर करियै म्यर भरौष
नि हूंल मिं कब्बै
ठुल-तातू सकर
गदुवौक ज झाल
आपंण स्वींणों है,
है सकूं है जऊं मैं भौत अकर
अनमोल !
पर त्वे कैं बतै द्यूं आपंण मोल
मिं बेची जूंल प्यारक मोल ।

पर्या रंङ

रंङिःलि दुनियाक लै रंङैः-रंङ
एक रंङ लाल-हर तरफ
खुन्यौंवौंक
एक रंङ क्व-हर तरफ
कच्यारौंक
एक रंङ पिङ्व-मैसोंक
मुखोंक
कै पारि चणणौं कैकै रंङ
कै पारि कैकै
कै पारि लक्ष्मीक
कै पारि शक्तिक
पर कमै लोगूं पारि सरस्वतीक...

सब रंङ चढ़नई
एक्क म्वाथ में एक
द्वि-द्वि, तीन-तीन
हजार-हजार लै
स्यत-हरी-केसरिया लै
पत्त नैं किलै
मिलि-मेस्यै
सब हरै जांणईं क्व रंङ में।
सब बदवणईं आपंण रंङ
फूल लै,
क्वस-क्वस रंङ
वय्याप-वय्याप रंङ
बेई तलक रूंछी जो झाड़्क झुप्पड़न में
कमेट लै नि छी उछिटण्क लिजी
कमेट बेचि, पोतणईं पेन्ट

लुकुड़ों में छन् ट्ाल, असल रंङ
मकान में, मूंख में-किरीम पौडर
इज-ब्ाब में-मौम, डैड्ौक रंङ
दुदबोलि-भ्ाश में लै रंङ
चांओ-दाव में लै रंङ
देश-भेश में लै रंङ-पर्या रंङ।
बदवंण में छन सब आपंण असल रंङ
न द्यखीण चैन कैं बै लै
उन्ौरि अनार, असल लच्छंण, चिनांण।

एक लड़ैं लड़छी गांधी-मंडेलाल
ग्वारों थें-क्ाव रंङैकि
आपंण और पर्या रंङैकि
पर आ्ाब न्है दाव में क्ाव
काई हैगे फरि दावै, काया, ह्यि लै
कतुकै स्यात है बेर
भैम फैलै लियों उं नेता
ववे रंङ न चड़ि सकन उन्ार
क्ाव मन्ाक थिक्ावों में।

अगर

सुनौक चड़ लै जब धरी जॉ
सुनाक पिंजाड़ में
सुनौक न रूंन
पितवौक है जां
फिरि जब निकवूं पिंजाड़ बै
न हिटि सकन
खुट लुली रूनीं
न उड़ि सकन
फांक गइ रूनीं
न रूढ़ थै सकूं
न द्यो, न अरड़
आङ निउजी रूं
आंख लै न खुलन
क्वीर जस, जाव जस
लागि रूं आंखन
यास में उडूं जब उ
भाजूं खूब तेज
पर भबरी जां
घुरी पडूं
क्वे न दिन सहार
क्वे न थामन हात
सब ताकि रूनीं वीक थाकंण
मारि-काटि, चोरि खांण.....।

पर अगर द्येखि सकूं उ
उघड़ी आंखौक स्वींण
सांचि है सकनीं वीक स्वींण
उड़ि सकूं उ फरि सगत्यैल
खुट भिं धरि
उच्च अगास में
पुजि सकूं स्वींणों तिर ।

उघड़ी आंखौंक स्वींण

रात्क घुप्प अन्यार में
मिं द्यखणयूं उदंकार उज्यव
हतपलास लगै चांणयूं ठिनुक
ठनकै बेर उणूणयूं चिंणुक
ब्वलणयूं मुछ्यव
चलणै तेज ह्यव-बयव
मिं द्यखणयूं
टुटणै मैंसोंकि नींन
द्यखणईं उघड़ी आंखौंक स्वींण
है ग्येईं छ्यव
तैयार छ्न मारंण हुं क्यव-काव
मारणईं फाव-फटाव
ख्वालि न करण्याय क्वीड़
टोड़णईं ज्यौड़
जनूंल बांदी रौछी जुग-जुगन बै
सुप लै खोलि ह्यली नौहरून बैं
पांख बणै खुटन कैं
उणईं ल्हि बेर दौड़
अंह.....ह, नैं.....नैं
बिछुरि नि र्याय
ख्वालि न भाजण्याय
आजि भि पनै छ्न खुट
कुटि-पिसि सामव
भरि बेर भकार
ग्वेरु प्यवै, छां फानि
द्यातुल पह्यौ, क्यटि घा-गाज्यौ
बणै बेर लुट
लागि ग्येईं ब्वट
छ्जूणईं इज्यक थान कैं
बाबुक पूर्व जनम्यक दान कैं
झ्यणणईं झाड़
छ्यंणणईं गर्द
सम्यवणईं पुरुखनैकि थाति
चढ़ूणईं फूल-पाति
दिंणईं आपंणि बइ
हरण हुं दुसरौंकि टीस-पीड़।
रात्क घुप्प अन्यार में
मिं लै द्यखणयूं-
उघड़ी आंखौंक स्वींण ।

और आखिर में-नई पीढ़िक आंखर
बखत बखतैकि बात

पैलियाक पुरांण मैंस कूंछी-
घर पुजनै चिट्ठि भेजि दिया
फिर कूंछी-
घर पुजनै फोन करि दिया।
फिर कूंछी-
घर पुजनै मोबाइल बटी एसएमएस करि दिया।
फिर कूंछी-
इंटरनेट बटी ई-मेल करि दिया।
आब कूनी-
घर पुजनै फेसबुक में अपडेट करि दिया।



-वैभव जोशी, कक्षा-७ 'ए'
सेंट जोसफ कॉलेज, नैनीताल।

मेरे बारे में



नाम: नवीन जोशी 'नवेंदु'

जन्म: 26 नवंबर, 1972। **जन्म स्थान**: ग्राम: तोली (कपकोट), पोस्ट: फुलवारी जिला: बागेश्वर (उत्तराखंड)।

माता-पिता : स्व. श्रीमती हेमलता जोशी (शिक्षिका), श्री दामोदर जोशी 'देवांशु' (कुमाउंनी एवं हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक एवं संपादक), सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य।
परिवारिक स्थिति: पत्नी श्रीमती बीना जोशी (शिक्षिका,) पुत्र वैभव एवं पुत्री-काव्या।

शिक्षा: मैकेनिकल इंजीनियरिंग में तीन वर्षीय डिप्लोमा, पत्रकारिता एवं जनसंचार में गोल्ड मेडल के साथ मास्टर्स डिग्री।

लेखन में: कुमाउनी व हिंदी कविताऐं, गद्य निबंध, कहानियां, नाटक व व्यंग्य लेखन, संपादन में भी सहयोग। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं यथा आंखर, गद्यांजलि, अन्वार, आपणि पन्यार, दुदबोलि, धाद, नेता दर्शन आदि में रचनाएं प्रकाशित। कुमाउनी लेख वरिष्ठ साहित्यकारों द्वारा हिंदी में अनूदित।

इंटरनेट पर: देश की सबसे बड़ी काव्य वेबसाइट kavitakosh.org, मेरा पहाड़ फोरम(http://www.merapahadforum.com/articles-by-esteemed-guests-of-uttarakhand/journalist-and-famous-photographer-naveen-joshi's-articles) एवं पहाड़ी फोरम (pahariforum.net/forum/index.php/topic,81.0.html) पर कुछ चुनिंदा कुमाउनी कविताएं हिंदी अनुवाद के साथ उपलब्ध। mankahii.blogspot.in, uttarakhandsamachaar.blogspot.in एवं ounchepahadonse.blogspot.in पर ब्लाग लेखन भी।

लेखन मेरे लिऐ: मेरा कुछ भी नहीं, कुछ यहां-कुछ वहां से मन के भीतर गई छटपटाहट को स्वत: बाहर आने पर अपने-दूसरों के शब्दों से खूबसूरती से पेश करने की कोशिश। इसमें अपनी दुदबोली कुमाउनी के साहित्य में कुछ श्रीवृद्धि हो जाऐ तो अहोभाग्य।

छायाकार के रूप में: पंचाचूली चोटी के चित्र 'हिमालया ग्लिटरिंग लाइक गोल्ड अर्ली इन द मॉर्निंग को अंतर्राष्ट्रीय वेबसाइट 'पेनोरॉमियो' से जनवरी २०१० में जियोटैग्ड फोटो प्रतियोगिता' के 'अनयूजुअल वर्ग' में 'आनरेबल मैन्सन' पुरस्कार मिला।

उत्तराखंड की तत्कालीन राज्यपाल मार्गरिट आल्वा के हाथों राजभवन में लगी छायाचित्र प्रदर्शनी के मौके पर सम्मानित।

संप्रति : मार्च २००८ से राष्ट्रीय सहारा नैनीताल में ब्यूरो प्रभारी के पद पर कार्यरत, इससे पूर्व दैनिक जागरण सहित कई समाचार पत्रों में कार्य किया।

संपर्क: मोबाइल: 9412037779, 9997763049.

ईमेल: saharanavinjoshi@gmail.com

घर: 'देवांशु कुंज', पश्चिमी खेड़ा, पोस्ट काठगोदाम, ग्रेटर हल्द्वानी (गौलापार), नैनीताल।

निवास: 'जय माता दी' भवन, चिड़ियाघर रोड, तल्लीताल, नैनीताल। पिन: 263002। उत्तराखंड।